

सुखे जीववानी कळा



आगमोद्दारक दिवगत आचार्य
श्री सागरानन्दसूरीश्वरजी महाराज

अने

ब्यारयान-वाचस्पति आचार्य
श्री विजयरामचंद्रसूरीश्वरजी महाराज
साहेबे पतावेली

नवेंवर १९५१]



[किंपत १॥ रुपियो

प्रसादक
शा रतनचंद शकरलाल
१२४६ भगानी पेठ, पूना २



मुद्रक
एम् री आगरलाल
ननता प्रि प्रेस, लि ८१७ शुश्वार पेठ, (गाडावाला), पूना २

— प्रास्ताविक निवेदन —



जैन समाजमा स्य आचार्य श्री सागरानन्दसूरीश्वरजी अने आचार्य श्री विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महारान साहबनु रथान तेमनामा अनेक गुणो छसा प्रवचनबाट तरीके अनोइ कहेवामा बधु पर्नु न गणाय, आ बातमी सारीती जेन हे के वर्णायी तेमना व्याख्यानो दत्त प्रगट याय हे, जन शनिगूर्वक बचाय हे, ऐरुज नहि पग बहु लाक्षिय बन्या हे धगा तो तो अमना व्याख्यानो सामली के याची याचीने व्याख्याना आपता धया छ बतेना शीली झुटी होय ते स्वाभाविक हे परतु आ जडवादना जमा नामा भव्य आत्माओ धर्मने पामो भे सर्वेतु धने उपकारिभाना हीगार्थी शीलभेद छता व्याख्यानो तमानी उत्तमताना लीखे जैन, अनेनोने जल्यत आदरपाप्त बन्या थने बा छ जाचाय धी विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजीना हृषायगा आ जाहेर व्याख्यानो सामल्या माटे तो कलाका पहेला हॉलमा जग्या रोपा। तेजा लाकोनी दोडधाम शश याय हे, सामल्या माटे धोताओनी पश्चाप्ती याय हे तेमज अमना जाहेर व्याख्यानना अगे “सदेशा” (अमदावाद) ना तत्री थी नदलालभाई बोडीवाला धावण यद ११ ना अफमा लखे हे के —

‘ अमे अमारा याचनोने याद आपवा मागीए छीअे के, मुनिनीना व्याख्यानो तेमज लेखो (के ज छाइ रहा छ) कातिकारी अने जाधु निक निचारथेगी भरावता होई मानय हृदयना तार ज्ञानगानी मूके तेजा होय हे, पठी ते मानवी गमे ते धर्मनो होय ’

‘ गुजरात समाचार ’ (अमदावाद) ना तत्रीथी पग लगावे हे के—
‘ आजे पग राहेता मुजब प्रेमाभाई हॉल खीचौखीच भराई गयो हतो, ८॥

वागे प्रवर्गन हतु, परतु आठ वार्षिका सा हॉल विकार भराइ गयो इतो, अन साता आठ वार्षिका पदेला हॉलना पीरेना दरवाजा बध करगा पक्ष्या हता ” ता २७-८८५१

तमन स्व आ देवरा छपायेत्। शारशानोमाय अनेक स्थले पहेला छपायली वातो ज छगान हे, इता वारशानामा पुस्तको तरत बेनाइ जाय हे ए जागमना अखड अभ्यासा आगमवाचनादाताती अजोड गिर्दचा, प्रचर तर्फाति, जने देशनामानी उपमा के दृष्टोनी प्रियुलताने आभारी हे

जने प्रतिमात्रभन्न अने धाताओ उपर सचाठ छाप पाई शके एवा समय गिर्दान् अनक मुनिपुगचैना अधिवति, अने आचार्यपदने शोभाने एवा, एटदु ज नहीं तो शाखननी प्रभावना करनारा गणाय बनेमा वैशिष्ट्य भिन्न भिन्न हे तेनु प्रथ् दिक्षयन न करता सामाजिका अने सुन्त उडेल करवो योग्य माचा हे, जेथी परस्पर वैमनस्य घरानवारा बनेना शिथो अने सेंकडो मनोने पोताना पृथ्य मनाता आचार्यनु आ लेखयी अपमान यथानु मानी लेनानो अवकाश न रहे दते प्रत्ये मारी परमपूज्यमान हे, काईने ओझ मनापत्रानो इरादा नभी माटे कोइए दूधमार्थी पोता कान्तानो व्यर्थ अने स्वपरहितथातक उद्यम न करवो एवी मारी नप्र विनति हे जने दशना कारोना व्यारव्यानो जिनेश्वरोना बचनोने धाधक नहि ज होय, छता आ व्यारव्यानोमा कइक असमत विपरीत के अधुर जगाय तो ते दोब बने परमोपकारीओनो नहि, पण वारव्यानो लर्ही लेनारातो के जमारी जाणयो तनी तेमा छापता कइ भूला रही होय ते माटे अने क्षमा मागीए छीए,

आ व्याख्यानो गुणसागरजी तरफ्यी मढेनी नोधमार्थी तारखी लई छुपाया हे जाहेर “वारव्यानो अमरवादना ‘सदेश’ जने ‘गुजरात सुमाचार’ना कभीरा सौनायथी लेमना अको उपरथी झाप्या हे माटे तेमनो आमार मानु छु

आ यथा व्यारथानो अहिं सूचनस्ये एटले बहुज सभेप्रमा चाप्या उे
तेथी घोे तेकाये एकन गिय एकधारो नही नगाय, पण मदत्यना स्थूर
प्रिपयोनी दुक्मा लृटक जीव जगाने, माटे धाचकोए तेनो उंटो जथ धर्म-
धर्मानो प्रयान न करवो, न्हडन के प्रिपरीत जर्ख घारीए तो आतमना पण
देऱक वास्यनो करी शक्याय छे

आ व्यारथानो छगवगा विगेरे शानकाय माटे शेठ ताराचद गमना
नीनी पेत्रीना मालिक श्री हसुसनजी ताराचदजीए रु ४२५ आप्या पोतानी
उदारतानो परिवय नाष्यो छे ते मारे तेमने धावगाद आपगा पूरक तेमनो
आभार मानु छु

जा अने हवे पठी प्रथिद यनारा आचाराग, मूळगढाग, पोडगळा
व्यारथानो अने लेलोना पुस्तकोनी वधी ऊपज शानम्भावामा रम्बायाना
छे, तेत्री वधो धर्मवठ पूना (भवानी पेठ) वाळा शेठ भोटानी रगनाथजी
अने शेठ जेनाजी खाक्कानी करे छे अन तेनो प्रिगतगार दिसाव पण तेनो
बहार पाढ्ये

—प्रकाशक

८ २००८ कारतक शुद ८ मग्नवार

वागे प्ररबन इतु, परतु आठ वार्षायमा सा हॉल जिशार मराइ गयो इतो, जेने सावा आठ वागतो पहेला हॉलना नीचेना दरखाजा यथ करना पन्था हना ” ता २७-८-५१

तमज सा आ देना उपायेण “ यारशानोमाय अनेक स्थले पहेला छायकी रातो ज छाय छे, छता यारशाना पुस्तको तरत बेचाइ जाय छे ए जागमना अख ” अभ्यासा आगमवाचादातानी अनोड गिरचा, प्रखर तक्षणि, अने देशनामानी उपमा क दृष्टानी गिरुलताने आभारी छे

बने प्रतिमासम्बल अने थोताजो उपर सच्चीट छाप पाडी शके एवा समर्थ गिराए जाए मुनिपुग्वेना अधिष्ठिति, अने आचार्यपदने दोभावे पर्या, एट्लु ए नहीं ता शासनर्ता प्रभावना करनारा गगाय बजेमा वैशिष्ट्य भिन्न भिन्न छे तेनु प्रथम् दिद्वर्णन न करता सामाजिक्या अत्रे समुक्त उल्लेख कर्वो थोग्य मान्या छे ऐपी परस्पर वैमनस्य घरारगारा बजेना शिष्यो अने सेकडो मनोने पोताना पुज्य मनाता आचार्यनु आ लैखायी अपमान थानु मानी लेगानो अवकाश न रहे बने प्रत्ये मारो परमपूज्यभाव छे, कोईने ओढा मनावगारी इरादो नधी माटे कोइए दूधमाथी पोरा काटानो व्यर्थ अने स्वपराहितधातक उद्यम न करवो एवी मारी नघ गिनति छे बजे देशना कारोना “ यारयानो जिनेव्यरीना बचनोने धार्थक नहि ज होय, छता आ व्याख्यानोमा कहक असगत विपरीत के अधुरु जगाय तो ते दोष बजे परमापकारी ओनो नहि, पण “ यारशानो लरी लेनारातो वे अमारो जागवो तनी वेमज छापाना बइ भूलो रही होय ते मात्रे अमे क्षमा मागीए छीए

आ व्याख्यानो गुणसागरजी तरफ्यी मछेली नोंधमधी तारकी लई छपाया छे जाहेर व्यारयानो अमदार्यादना ‘ सदेश ’ अने ‘ गुजरात समाचार ’ ना तप्तीना छोजायधी तेमना अझो उपरधी छाप्या छे माटे तेमनो आभार मानु छु

આ બધા વારણાનો અહિ સૂચનાએ એઠલે બહુન સમેપમા છાપા હે
તેથી ઘણે ટૈકાળ એકન રિયય એફઘારો નહી જગાય, પણ મહત્વના સ્થૂલ
રિષ્યોની દુકમા રૂટક નોંધ જગાગે, માટે વાચ્ચોએ તેનો ઉંડો અથ ધરા
નવાનો પ્રયત્ન ન કરવો, વ્યાઢન કે વિષરીત અર્થ ધારિએ તો આગમના પણ
દેરક વાસ્યનો કરી દાકાય હે

આ વ્યારણાનો છપાવણ મિગેરે જ્ઞાનકાર્ય માટે શેઠ તારાચદ ગમના
જીની પનીના માલિક થી દુરાનજી તારાચદનીએ રૂ ૪૨૫ આપી પોતાની
ઉદારતાનો પરિચય જાપ્યો હે તે માટે તેમને ધ યજાદ આપવા પૂર્વક તેમનો
આમાર માનુ તુ

જા અને હવે પછા પ્રખિદ થનારા આચારાગ, રૂંગઢાગ, ધોડથાકરા
વ્યાખ્યાનો અને લેખોના પુસ્તકોની બધી ઊપજ જ્ઞાનખાતામા ખર્ચીગાની
હે, તેનો બધો ધહીયટ પૂના (ભજાની પેઠ) વાઢા શેઠ મોટાની રુગનાથજી
અને શેઠ જેતાજી સાંકઢાની કરે હે અન તેનો મિગતગાર હિસાબ પણ તેઓ
બદાર પાડ્યે

—પ્રકાશન

સ ૨૦૦૮ કાતક શ્રુદ ૮ મગલ્યાર

अनुक्रमाणिका

४

१ न बोलाये तोय तारको दूधताने तरेज	१, ५, १३
२ बधाज मौके जाय तो ?	२
३ भाईचारो केवो होय	३
४ छिद्र जोनारा 'कायटिया' लेवा	४
५ भवित यता	५
६ प्रना हेताय ससारनो विचार	८
७ तमने पापमा अनुमोदनारा	९
८ मनना उडाळ्ठाओ	१०
९ ससार तजपानी भावना विनाना वचाना दरिद्री हे	१२
१० प्रमुमाति कैभी कराय ?	१४
११ स्वादमाटे कराता पापो	१६, १७
१२ इदियोनी जाधीनता	१८
१३ शरीरनु स्वरूप	२०
१४ थीतरागनी मूर्ति अने अजैनो	२१, २१, २७
१५ आगमो क्यारे अने देम दराया	२६
१६ जनाना मुझव धर्ममा पलटी ?	२८, ३१
१७ नातरानो विचार	२८
१८ जैनो मुहीभर ज देम ?	३१
१९ जिनपूजा त्याग भाटे हे	३४
२० धर्म करता विसो आवे	३४
२१ जिनेश्वर अने अथ देसो	३५, ३९
२२ थीतराग अने मुगाडादि	३८

(३)

४१ मोक्षनो राग	७३,७६
६० देव केवा जोईओ ।	८८,८२,८५
५१ जन्ममरण	८०
५२ रागदेव	८३
५३ शुभ केवा होय ।	८७
५४ सेवा शु ।	९०
५५ भगतस्नो हेतु शो ।	९३
५६ दगर्य, राम आदि रामायणना पात्रानु निरीक्षण	९७
५७ आजे टिकीठ पण मफत भेळव्यवानी दानत	१०३
५८ खासु वेची होय	११६
५९ मह ए मायीदार	११६



गायनमोघस्तम्भ जागमादारक परमपूर्व स्वगत
 आचायदेव श्री मागरानन्दमूरीश्वरनी महाराज साहेब
 दम स १९३१ स्वगाराहण स २००६
 जादाद वद १० मुरता
 कपडबज



ग्रासनप्रभावक व्याख्यानवाचस्पति परमपूर्वगद
जाचायदेव श्री दिनदयरामचंद्रसूरीधर्जा महाराज साहेब

ज्ञानखातामा रु ४२९ आपनार



॥ दानभीर थ्रीमान शठ दमगाजी ॥

(शठ नारायण गमनार्जीनी पटाका मार्गिक)

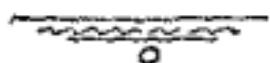
गमनार्जी यशरी, गविगार पठ, पूना २

ॐ अर्हम्

आगमोद्धारक स्वर्गस्थ आचार्यश्री

सागरानन्दसूरीश्वरजी महाराज साहेबना

व्याख्यानो



शास्त्रकार महाराजा भाय जीबोना उपकार अर्थे धर्मोपदेश देता थका
फलमार्गे छे के जगत्का जीवमानने मुख बहाड़ु अने दुस अक्षरामणु छे
इतिहासाय आत्मगत सत्त्वभूतु कल्पु तेनो ॥ हु धरायो माटे कोइ भूर्योज
नयी, हु रोगी के निरोगी माटे बधा तेगा, हु धनाच्च माटे बधा धनादृद्ध,
हु रक माटे बधा रक ॥ आम अनथ न थाय माटे श्री हेमचद्राचार्य महा-
राजे पर अर्थमा उमेयुं के “सुरदु ते प्रियाप्रिये”

न बोलावे तोय तारसो हुरताने तारेज—

माह चौरायु एम जीव परियाद करतो नयी असील न कहे अने
बकील बीछे ते तु काम लागे ? कोई पण प्रतिशापूर्वक असील नहे साज
सामले जीव को पोतानु केवड़ानादिक घर हरायु, अमुके रक्षाव्यो,
कर्मराजाने पक्षायो बोगेरे बहेतो नया छता “ दम रखडी ओ, तमाद
बेवड़ानादिक घन हरायु छे अयजा जीबो अनादिकालथा रखडे
छे कोरे शास्त्रकारो शा माटे कहे छ ? नाम्बे पोतानी रिगतिनु
के दशानु भान नयी, माझे बालेज शानो ? छता पाणीमा
रहेओ मानस खोलारे के न बोलावे तोय काठे रहेला “सजनोनी

अनियाय फरज तेने बचाववानी हे थेम दुनिया माने हे तो ? के दूसरी बूम मारे तो ज बचावगानु मान्यु हे ? मने कोइ बचावे अबोध विचार देवे अत्यधी होव के न आयी होय, पोते जीवतो हे के मर्यो हे अनुय तेने भान नर्थी, अग्रने गमे हे प्रयत्ने पण बचाववोज जोइबे उल्टु “ मै अमुकने दूसरो देरखो, छता पण तेने काइ बूम पाढी नही, बचवानी मदद मारी नहि माटे मै काटयो नहि ” छोउ नहेनारन तमे खेबो गणो ? तेम तमाम जीवो ससारस्पी दस्तियामा दूधी रथा हे, अने ते विचाराओने पोतानी दशानु लेशमान मान नथा, तेओ पोताने तारवानु कहे के न कहे तो पण तो तारवा तारकोभे कटिबड यहुज जोइधे, जेओ “ आत्मपत्तयमूरेषु ” नी भावताथी अे रीते बचाववानो प्रयत्न न करे तओने शास्त्रकारो समकिती गणवानी ना कहे हे तारकोभे फहेला कदी न करेली खरेहरी अपूर्व छ्यूह रखना करी, मटे तेओना कायमी पराजित आत्मानो विजय थयो, कर्मनो रेवक हतो हे स्थानी धयो भोह अने जीव बने समरागणमा रामरामे लट्या तेमा ससार हे त्या मुधी कदी जीव जो कदी कर्म बलरान् हे

प्रदेश—बधान माजे जाय तो ?

समाधान— ठाक्की उपरना पाणी दरियो खाली यवानी कल्पनाय । अदे क घटाथी पाणी भरताय जे रान्ही न थाय, ते भाम खाली थाय ? तेमज जनत निगोदमाथी एक निगोन, अन सनोय अनतमो भाग इझी भोरे गयो ते ठाक्की ना हेडानु पाणी अो दरिया बच्चेनु आतह बधारे के बा ? एक दरदान व्याधि एवी हे के गरम आयो तो छोही पढे, ठहु आपो तो बायु थाय, तेम भियाह्तारो शाळनु एकात हितकर बचन ससार खाली यवानी दीक उपजरेवे उ पण कल्पना सातर मानो क ससार खाली थयो तो फँइ बाधो ? चोर गतिमाना तमाम ल्पीवो भोग जाय अने ससार खाली खोखु रहे तो तेनी तेन अडचग शी ? बधा भोक्ते जाय तो जेकला पही जगानो ढर हे ? बधामा पोतानो समावेश करियामां कह वाधो हे ? उखड आयु जगत् भोक्ते जाय तो आनन्दनो विषय हे तो पठी ससार राली थइ नदी एम वेम ग्रोलाय ते ?



जेबु काईक ताकता रहेयु एज एमनु काम समशानना गीधो मासनी पेशीओ जोबा माटे ऊचे आकाशमा ऊडे ज्यारे एवा गीधडाजो देराहर उपाध्यदमा चकरो मारवामा चूकता नया “ काइ कर्मनो फ्लेटो मळे ” , एज तेमनी इष्टि होय छे, जेम मासनी पेशी भाढे के तरत गीधहु नीचे उतरे अने चाच मारे

आ तो “ विष ” अने तेने वधाराय पठी कइ बाकी रहे ?

पुद्धलानद (विषयो) माटेन ससारमा रमी रहेलाओ, रानीमानी रहे छाओ, पाप-नृत्य करनाराओ परापक्करनो पडदो बागछ थरीने रहे छे के “ अमे तो सायुओ माटे ससारमा रहा त्रिप, जमे होइअ ने तमने वध्र पात्रादि मळे ” आनु ज नाम विषने वधारु “ विष ” अने तेने वधाराय दछी कइ बाकी रहे ? एगाओ जाणी याद राखे के चाहडावाल्डा विना बीजेथी गोचरी न लेवानो अमारे प्रतिबध नयी पोतानी पास्सी उपाडवा बीजानी नोकर अवस्था कायम इच्छे जेना जेवो उम्बखल दोठं क्लोग छे ? दची रीते “ थारको हयो तो दान दशे भाटे सायु न याय अने थावक रहे तो ठीक ” जेम माननाराजोने केवा गणवा ?

समाकिती चदन जेवा, मिथ्यात्ती विष जेवा—

चदन नजीकवालाने सुगाघ आपे, दूर रहेलाने तो आपे के न पण जापे तेम समकिती भले बधाने तारखानो प्रयत्न न करे पण मामना तो एवीज होय, अने पोताना कुटुब्बने ताथा विना तेने चेन नन पडे त्रुति जगत्ना जीवोने तारखानी पण प्रदृचि तो कुटुब्बने तारखानी पोताना कुटुब्बमां सम्य कल फैलाने तेओ चदन जेवा, कसुरी तेगा, अने मिथ्यात्त फैलाने ते अभि जेवा, विष जेवा जागवा छूबताने काठे उभेलो तारे एमाज एनी शोभा, एज कर्तव्य त्या एम न कहेवाय के ‘ दूजताजे मने क्या मदद करखानु के बचाववानु कधु छे ? पाच सात वरखनो छोकरो तुटातो होय त्यारे ए न

मुदर, का भाईपणानो “‘चारो’” यह जाय एवा स्पसा न होय तो ज-
भाईचारो कोने न गमे ? मैत्री भावना तो गुणदर्शनमा मुख्य छे उमकि-
लीनी मुख्य भावना “मा कार्यतोऽपि पापानि” आ प्रथम पगधियु,
अने दुष्कर्मना योगे के हुर्निना सुर्गमधी कदी कोईए पाप करी लीधु होय
हो पन दे दु ली न थाजो आ बीच पगधियु

“कायटियाना” चोपडामा परेलानी अने गोरना चोपडामा जन्मेलानी नौंध होय—

“गुनेगार सजपात्र” जा मान्यताधी समकित छेटे हो, मिनवा दूर हो तमारा
पेट्मा दुखामे उपटयो होय, वाह आपती होय, शरीरमा सणका भारता
होय, अने तमे राहराह करता हो ते वसते बान्दूमा बेडेलो मनुष्य जो एम बदे
के ‘ठीक थाप ठे, इजी वधारे यहु जोइये’ ता जेने तमे रज्जन गाँ
खरा । “छोको तपश्चयाधी पाप तोडा, दु ली तो न ज थाजो, अने मुहि
पामो” आ अतिम खेयरुम भावना कायटिया जेवा शिव्या
मिलावीजाने रुच नहि पन रख्ने हो वायटियाना चोपडामां मरेलानी नौंध,
तेम भनामिनदीओना हैयामा पतितोनी गणनी, स्थित क स्थिरनी नहि
जन्मेलानी नौंध तो जोशी के गोरबे त्या जमाक्षर त्या मले सारा घर्नो
मनुष्य भेरे तो बफरो सारो यवाप्ति कायटियाने बधु आनद फोइ धमयी
पवित न याय तो आगा कायटियोओ लम्बे दाय दइने उदास रहेन्नाराओ
जेवा उदासी होय, अने कोइ पापनशात् धर्मधी पतित याय तो आगा
कायटियाने स्ता याचा वागे, कायाट्या जोना मनना गायमा कोण मादु,
कोने खर, योनी घडी च घडी गणाय छ, बस, जाव रठण ऊटे त्यानी
ऊपे त्या मुझी एना अव्यवसाय एज धर्मस्थानमा कायटिया च्चा जीमो
चार तरफ कागडानी ननरे जीय ररे जाद्योना थोरा उल्टावी पट्टावीने
पण झूले के व्याय छिद्र छ ? उधु के धर्मीना । उद म्होतदु के छिद्र यपाय

येतु काहक दाकता येतु एज एमनु काम स्मशानना गाथा मासनी पेशीनो जोवा माट ऊचे आकाशमां ऊढ ज्योरे एवा गीपडाओ देराउर उपाध्यमां चक्रो मारवानां चूळता नयी “ कोइ कमनो पूटेलो मठे ” , एज तेमनी दृष्टि होय छे, ऐम मासनी पेशी भाष्टे के दरत गीपडु नीचे उतरे अने चाच मारे

आ ता “ विष ” अने तेने वधाराय पडी रुइ बाका रहे ?

पुद्लानद (विषयो) माटेन खसारमा रमी रहेअओ, राचीमारी रहे लाओ, पान-नृच करनाराओ परा कारनो पडदो आगढ परीने कहे छे के “ अमे तो सामुओ माटे खसारमा रमा तिर्य, अने होइन ने तमने क्या पापादि भले ” आनु ज नाम विषने वधारु “ विष ” अने तेने वधाराय पट्टी कह बाढी रहे । एसाभा जागी याद रागे के चाहाराचा विना बीजेपी गोचरी न देवानो अमारे प्रतिश्वय नयी पोतानी पाल्सी उपाईवा बीजानी नोकर अकर्या कायम इच्छ जेना जेवो कमजूल शेठ फोग छे । एसी रीते “ धारको हय तो दान दी माटे साँउ न याय अने धारक रहे तो टीक ” ऐम भाननाराओ । केवा गणवा ।

समाकेती चदन जेवा, मिथ्यात्वी विष जेना—

चदन नबीक्यावाने सुगध अने, दूर रहेलाने तो आये के न पग असे तेम समछिती भले बधाने वारवानो प्रस्तुल न करे पग भावना तो एकीज दीय, अने पोताना कुटुने वाया विना तेने बेन नव पहे गृहि जगतना जीवोने वारवानी पग प्रशुचि तो कुटुने वारवानी पोताना कुटुम्बमा सम्प नस्व केलावे तेओ चदन जेना, कस्तुरी तेना, जेने मिथ्यात्व केलावे ते अग्नि जेना, विष जेवा जागया दूखताने काढे उभेलो तारे एमाव एनी शीमा, एज क्वत्व्य ल्या एम न कहेवाय के ‘ दूखताभे मने नया मदद काल्पन्क जे बचाववानु कह्यु छ । पाच सात वरणनो छोकरो उटातो होय ॥

कहे तोप पोलीस तो एने बचावेज गुनेगारने पकडे अने पोते परियादी बनेनो ।
 तेम भिष्यात्व (अशान के विपरीत शान) स्थी मदिरामा चकचूर बनेलाओ
 पोतांी व्यवस्था हजु न करी शके तेथी शु जेन दर्हनना पोर्खियो पोतानी
 फरज न बजावे । त्सूना केसभा जेनु लून ययु ते मरी जवाधी परियादी
 न थद शके ने । अनी परियाद पोलीसज करे ने । जेनु खून शाय छे तेने
 अगे कहेवाय के “ ए तो आयुष्यना थये मर्यो, द्रायप्राण रहिव थयो ”
 ज्योरे भिष्यात्वी तो भावप्राणधी रहिव एठ्ले लेन दर्हननो पोरीसस्थी
 उमकिती परियादी बनेज जनु नुकसान थह रथ्य छे एतो ए दशानु भानेज
 नयी, एठ्ले ए तो परियाद करे एम छेज न्याः एना सबधमा तो बीजा जाण
 करेज परियादी बनवानु रह्य ने । एमने प्रण बीजाआ कहे के “ भाइओ तमे
 दुटाइ रळा छो, घाठ दिसे तमाह साचु धन तमारी उघाडी आसे हराय
 अने हणाय छे, तेथी अनादिधी रखडी रळा छो, माटे जरा समजो, अने
 जातनो बचाउ न्यो ॥ ” उज्जननी परज छे के अशानीने तेनी दशानु भान
 करावे थीरे धारे देतु काफ्नार देवादार सारो, पण थोडु थोडु लेणु वसुउ
 करी भूटी खतम खरनार लेणदार ता रराव

भलु यजो भवितव्यतानु—

अशानथी ६९ कोटाकोडी सागरोपम अने शानथी १ कोटाकोडी
 सागरोपम स्थिति दृटे अशान के अशकितना स्थापे पाप न करवाधी एकेद्रिय के
 विकलेद्रियने नरफ नहि “ मोक्ष छे, मेल्ववो छे ” ए विचार, अने कर्मनु,
 जीकनु के मोक्षनु स्वरूप ६९ सो मा नयी जगायु माटे यथाप्रवृत्ति एठ्ले
 अशानप्रवृत्ति, अने यथाप्रवृत्तिकरणने जनाभोगकरण के अनुपव्योग
 मानिबे छिने अधिभेद एज सम्यस्त, दुनियादारीनी आसी चुजीनो
 पल्लो प्रियमस्थान अने बाराघ देत, गुरु, घर्म दुनिया वेठ लागे तोज
 सम्यस्त अज्ञानता एकवार नमे “ रोडु छवा न छोट्यु ” ए कदामह न
 नमे शान भेडवानी जसर छे, पण तेनो जथे ए नयी के ज्ञान बगार घर्म,

कियादि पुण्यतु काम न करतु मावस्त्र (चारित्र)थी अवर्मुहूर्तमा भोक्त छे
 भोदा पासबो एकवार सहलो, पग अव्यवहारराशिमाथी अव्यवहारराशिमा
 आवतु मुझ्केल मनुष्यपणु मज्बा पछा तो मुसितनी साधन सामग्री भेड्ववी
 स्वाधीन होवापी सहेलु अव्यवहारराशिमाथी एक जीव मुस्ते जाय त्यारे
 अव्यवहारराशिमाथी अव्यवहारराशिमा एड चाव आय “तिहाति”
 (विशेषगवता गा ७०) बाजी बधी गतिआमा जघन्य अन उत्कृष्ट पदो छे,
 पा अव्यवहारराशिमे अगे तवा पदो नयी नेम सवायसिद्धनु आयु जए
 न्य के उत्कृष्ट नया, पग एकज ३३ सागरोपमनु होय छे सूख बादर
 कमवगगाआ नियमिन द्वाराथी अने एकेद्वियादि समन रेनु ग्रहण करतानु
 होवाथी जाव बधु ओङ अग्ने तो वगगा ग्रहण करतानु नियमित न ज
 बने वगगाना हिसाबे पग माननु पढ्यो क अव्यवहारराशिथी न जीव मोझे
 मयो तेनी काशा-रो छुटी पटी, तेट्लानान ग्रहण करतारा जीवा अव्यवहार
 राशिमाथी अव्यवहारराशिमा आवी शके ते पाछा अव्यवहारमा जाय तोय ते
 निगोदनो न गयाय जहि अव्यवहारराशिमा रम्बनी निचरा खिचाय जवायन
 नहि भवितव्यता पग ते जावना कमबधोदयोदीर्णादिने अनुसरीनेज तेने
 ऊचे लावे कम्द्वारा भवितव्यता ए काम करे छे भवितव्यताने साधन कम
 अव्यवहारराशिमा ध्यु तोडे अने घोडु बाधे तोज अहि जाव कोइ जीवो
 बाधती बखते थाढा उत्साहवाळा अने छोड्यानी बखते धगा उत्साहवाका
 होय ते जीवो अव्यवहारराशिमाथी बहार आवी शक नारकीना जीयोने
 पग एमज बने जेट्ले मिथ्याहाटि जीवो ध्यु बाधे अने घोडु छोडे बे
 प्रायिक बचन छे, सवया नयी कारण ऊचे आवनारा मिथ्यात्वी अपवाद
 स्थ छे, नहि तो आणे अनादिना मिथ्यात्वी भटी समकिती थगा ज केम ?
 नारकीना मिथ्यात्वी जीवो तो ते गतिमाथी नीकलत न नहि, अने आणे पग
 धर्मज न पामठ भवितव्यता अल्प नघ अने गहु निचरा करावो बहार लावे,
 आवत् मनुष्यभद, उचम रुङ, आर्य देव, देव, गुरु, धर्मना सयोगो भळ्यो
 आये ते

आपणे मरासिया के राजा ?

धर्मस्थी धोदानी जहर साधिक भाव सुधी (धरना घारणा सुधी), नहि के केवळशान पढी बदन, पूजन आदि करताना के उपर्या करतानी होय. निवाणकाढे तीर्थकरो तप करे हे ते भस्त्राच्छेद माटे एटलेज गोरमने भगवाने कद्यु के “ कब्लीनी अशातना न फर ! ” १५०० लापसीने पारणु करता अने ५०० ने अरिहतनु समोसण जोह केवळशान यसु हड्ड धर्म धोडो जेट्ले तज तटलाज जल्दी धो (भोके) पहाँचाय, एटलुज नहि हो जट्टीमाय वाय आदियी रक्षा को आ दान, शीयल, तप, भाव य चारपगो धोडो जो ठट्टू मळ ता भापत्रमा लावे ” वाप ए आळसु जानवर हे “ च्वादे, माणस जह जहने क्या जगानो छ ! ” एम जालसु धनी सुषुप्तिमा पड्यो रहेनारा हे एटलामा धोडो तज हाय तान यचाय, नहि तो वाघना मोदामा ! वाय एक हाये पकडे हे, पडी त जोता नवी के मे आ मनुष्य, पापु, परीन के कोने पकड्यो हे तेना नियम हाय के जे आये ते स्वाहा वाघने सारांस्तो विचार नहि, तेम बमने पण “ जा विचारो दु सी के रोगी छ भेने वापु दा माटे रोगी के गरीब बनावु ! ” ए विचार नहि, वाघनी जेम कम पण कचडी नारे छ जे जीवो १ थी ५ इट्रियो सुधीना पोताना सप्तरमा आवे हे तेने एके शपाटे चाढे चढावी दे हे उपराना नठियाने विचारणा नवी के मारा नीचे कोण आवे हे, तेम कर्मभेष कशी विचार नवी गराहिआओ बापनी जावह उपर दूबी मरनारा, बापे धोडो राख्यो होय तो पोते पण रासे पण ते धोडो हाय मरवानी आळसे जीपतो कोई भाईपद, दोस्तशार पूछे के “ दरबार ! राखी रासीने ते अन्हो धोडो द्यु राख्या ! एकाद तेजो धोडो लो ! ” तो दरबार कहे, “ वापु, तेवी हो के अतजी होय तेमा तु यसु ! आ फेड राख्यु हे एट्ले गळी धोडावाळा तो कहेवार्देन ने ! ” तये वा दरबार जेवा गळी धोडामाला न यजो ! खाली धर्मी गणावरा माटे धर्मस्थी पांगळो धोडो राख्यो

तो ते थोड़ो तमने अरण्य (महा अटवी) माझी केवी हिते सरक्षी शकदे ? तेनामा एवी ताकद नयी घमने थोड़ा तरीके आपणे मानवा होइजे तो अे अटलो तेन होनो जोहजे के जेम थोड़ो आमणने बीते गाम पहोंचाढी शके, तुम ते पर्य क्षायिक माव आराळ जल्दी पहोंचाढी दे काछियो टट्ठू लेवा जाय हे पहेला पोवानी कोयदी सामेन जोह चिचारे हे के “ मारा कादा, बटाटानी किंमत ऊपनी से किमतना प्रमाणमा टट्ठू लेवो डे, ” पण राजमहाराजाने पाड़ो लेवो होव तो सेनी जात तपाई तेनी किंमत ठरावे आपणे केवा टट्ठूना खरीदनार छिए ते जुओ ! जापणे वतो ल्यानी चिचार करिजे, तेमा सौधी पहेला ए वात तो पूरेपूरी स्वभवदारीपी चिचारिजे उठिने के आम सौगन लेवामा मारा शरीरने परिगारन के वेपारधधाने हानि तो जावली नथा ने । जेनो अथ अे के, जापणे पर्य येला काछियानी मापकूज वमलूपी थोडानु मूऱ्य समजनारा छिने, पण राजाओनी मापकू थोडाना परीक्षक नयी काछियो थोडानी जात नयी नोरो, काम जुआये हे जापणे पर्य शहेरी आनक के जागेवान गणाऱ्या या कुलाचोर धर्म रुरिजे छिने जेनो अथ ए के, आपणे पर्य थोडाने बदले टट्ठून लेनारा छिने, परतु मोङ्ग जाटेब भर्म ऊ नाराओ वसु (धर्म) नु मूऱ्य जोह तने लेनारा गणाय हे दिसाच गणी गणीने के साटु रारीन धम करनारा न होय तेज तेजी थोड़ो खरीदनारा डे साचा धर्मीनी मावना तो “ धम मोहने पमाडे हे, तेथीज ऊचामा ऊचो धर्म छउ ” एज होय हे पही ते धम पचपरमाणीना जाराधनात्मक होव तोय क्षायिर मावना मदिर मुधी पहोंचाडनारो बने डे, हे पही एनी चहर नयी देवगुवादिनी आराधनावाळो धायोपश्चामिक धर्म, क्षायिर भावनी प्राप्ति मुधीज, अने ते माटेज होव हे तेम न करनारा जीवन वेढफी नाले हे गुद्देरो धायिक मावमा जनारा, अने साथे मुमुक्षुओने पण लह जनारा हे

बांदराभारीनी लीलाभो—

तमारी रळाइ (प्यारी) पाड़ोशीना कशान उपयोगमा न आषवा छता

ते तमने अनुमोदना आपना मर्दी पढ़े छे क " वाह ! आ ;
 बनावी हो ! राजाश्वनु फापड बापड थारु छे, ठकाउ छ, देसा
 लगे छ करावी मूँहो ने थीनी पण एकाद बे ! " हवे युः
 देवा नहि, देवा नहि, पोताने कइ उपयोग नहि, ने तबाह
 द्यानो नथी, छता " सारी छे हो ! ऊरावो ने चेचार ! " ।
 हे, दुनियादारीना कायमा तमने मदद करनारा सख्याप
 पापकार्यमा जोहब अटली मदद के उचेजन आपनारा
 हजारो मछे, पण तमने तेना चोपा भागीय मदद मोश्व
 बधामा मलवानी नराय आशा नथी एना पापमा प्रभतावना
 के कोइन दीदानो उपदेश के सजागो मलवी आप्या !
 जोङ्गा १ शास्त्रना प्रभावना वेटली रुरी, के करवा प्रेया !
 तमारी पीठ पापडे, ठेमा तमने आगळ घधारे के तमारी मुः
 करनारा गण्या गाँव्याब ! तेमाय घगा तो चोटवा पूर्खी
 यताववाखाला हरे तमारा कामनी तात्त्विक शिमत जाणी तमारा
 सहानुभूति दर्शावनारा घणाज घोडा ! एक तो आ आपमा
 पण ज कर्मराजना चकरे चढलो छे, कर्मना उदयथी पापमृ
 छे, तेमाय तेने टेको आपनारा मछे त्यारे तेनी दसा वादराने
 चैक्कीज शाय के बीजी काह १ एक तो वादरो स्वभावेज च
 नवरा चेसी रेहवानु गमे नहि तेमाय तमे तने पचातु भरी दा
 अटले वादराभाईनी लीलानुं पूँछु ज यु १ तेम आ मनरुपी
 घडीमा पैठा माटे, तो घडीमा नित्रना भला माटे के शतुने गर
 दोबतु होय छे तेमा लोको सहारनी लालचे चदावनारा, तेने
 स्त्री दाह दाने डे स्वाभाविक घमाघम अने चिंगामस्ती करवा
 वाढ वादराना हायमा केरीनो युम्हो आवी गयो तो गोइ ह
 भाईनी लीला, कूदाहूद ! तम पुण्योदये छकार्यार्थ —— ।

कूदाकूद दाह पीज अेठ्ले न्यान साये थवे, अने वाँडा करदे थो तनेन्
 कूदाकूद चकडूदि ज्यातना दिसावेज आगढ थवे हे, तेनो कूदको
 जाकाशने चढवानोज बाकी रहे हे आ मनहपी माकड निष्टुकपायस्य
 रंगभूमि ऊपर कूदका मारता सऱ्ह येडु तेने निरोगी शरीर
 चढवान् लोहा, पेंडो, खी, मिरो के धारला सज्जेगो मळे एठ्ले
 एना नाचगाननी लीलानु शु पूछु ! आ दशा एकज भवना
 नथा एकके भव एवा नथा के ज्या आठला कूदाकूद न हाय ओरे,
 तमे सामान्य बगळे बधावो तो पण तमारा आडोगी पाडोगी अभिमान-
 पूर्वक तमने कहनारा मळश, तमारा बगळना एकाद बाहुनेया पवनना
 शपाटा आवता हये त्यार ते बाहुनी जाळी तोडा तम त्या भीत चगावा
 देशो ता पण तमने सहानुभूत आपनारा मळा जश्ने के ' नाह शेठ !'
 मामव्याळा तो खरा हो ! तमारा बापा विचारा बगळो ' वाँउखासु '
 करता रही गया, बगळो नाधी न घस्या पण तम ता बापदादानी मरजा
 पार पाढी खरी ! ” केम जाणे बगळो वापिचानान जिंदगीनु साथक यहू
 जनु होय ! बगळाना आवता हयाना शपाटा बध करेलाय जोइ तमारा
 वस्त्राम करेडु के “ बाह खाद शेठ ! आ ठीक कर्यु हो ! साळा चोरीसे
 कळाक पवनना शपाटा आव्यान के, बरते कोइन शरदी याय तो !
 पण हवे तमारे धरमा बाधोन नहि ” उ महिना पठी एज दिवाळ
 तोडावी बारी मूकावो दोय तमारी प्रश्नसान याना ने “ हवे रग राख्यो
 शेठ ! आ दियालया फवन पेठाह रहेतो हतो अन अजवाडु पण आवतु
 न होतु हये सो तमारे चावासे कळाक परफराट करता पण आव्यान
 करवानो हो ! जाणे माथराननी टेकरी ! ” अन तमे पण तमारी जागा
 प्रश्नसा सामळीने राचवाज मळी पढो छोने ! आनु आँउ राचगानु धवारमा
 रसळता जात्माने क्या भवमा नयी भऱ्यु ! क्या भवमा मनमा
 विषयोने लापे निष्टुता नयी भइ, जने क्या न

१ तमने अनुमोदना आपका मढ़ी पहे छे के “ वाह । आ ढीक थ्यु, सारी
 क्नावी हो । तद्वाइनु कापड बापड सारू हे, टकाउ हे, देखावर्मा पण चारी ”
 लागे हे करावी मूँगे ने बीनी पण एकाद वे । ” हवे जुजो तो परा ।
 हेवा नहि, रेवा नहि, पोताने कह उपयोग नहि, ने तबाह उपर पाते कदी
 सूखानो नथी, छना “ सरी ते हो ! करावो ने बेचार । ” घणाय कहेनारा
 हे, दुनियादारीना कायमा तमने मदद करनारा सख्यानध नीकल्ये
 पापकायमा जोइअ ऐटली मदद के उचेजन आपनारा थगर बोलावै
 हजारो मले, पा तुम्हे तेना चोथा भागनीय मदद मोक्ष मार्गे प्रसर्ता-
 बवामा मछवानी जराय आशा नथी एवा पापमा प्रवतावनाराओने पूछे
 के काहन दीक्षानो उपदेश के सजेगो मेछवी आप्या ? आराधनामा
 जोड्या ? शाखना प्रभावना केटली करी, के करवा प्रेर्या ? मोक्षमार्गमा
 तमारी पीठ याबडे, तेमा तमने आगळ व गारे के तमारी मुँहेलिओ दूर
 करनारा गण्या गाव्याज ! तेमाय धणा तो बोलवा पूरतीज सहानुभूति
 बतावगावाळा हये तमारा कामनी तात्त्विक विमत जाणी नमारा तरफ सक्रिय
 सहानुभूति दशावनारा घणाज योदा ! एक तो आ जात्मा स्वाभाविक
 पणे ज कर्मराजना चक्को चदलो हे, कर्मना उदयथी पापमृत्तिमा पहेलो
 हे, तेमाय तेने टेको आपनारा मछ त्यार तनी दशा वादराने दारु पाका
 जैवीज थाय के बीजी काह ? एक तो वादरो स्वभावेज चचळ, ऐटले
 नवरा बेसी रहवानु गमे नहि तेमाय तमे तने परातु यरी दारु पाह दो
 ऐटले वादरामाहनी लालानु पूऱ्यु ज तु ? तेम आ मनस्ती वादरु पण
 घडीमा दैया माटे, तो पदीमा मिशना भला माटे के शतुने गरदन मारवा
 दोङ्यु हाय छे तेमा लाको सुषारनी लालचे चदावनारा, तेने सहानुभूति-
 स्त्री दारु पाए ते स्वाभाविक धनाधम अने धिगामस्त्री करवाना स्वमाव-
 बाळा वादराना हायमा केरीनो उमलो आरी गयो तो जोइ व्यो वादरा-
 भाइनी लीला, कृदाकृद ! तेम पुण्योदये एकाद नावड जावी जाय, पाठो
 थीपो पढो जाय तो जोइ व्यो मननी पण कृशासूद केरी याय ते ते । वादरानी

कूदाकूद दाह पीज ऐठ्ले व्याज साये वधे, अने वाँचा करडे तो तेने
कूदाकूद चकहुदि व्याजना हिंगवेज आगळ वधे छे, तेनो कूदको
आकाशने चढवानोज चाकी रहे हे आ मनहपी माकड पियऱ्हक्खायम्प
रगभूमि ऊपर कूदका मारवा स्त्रु येडु तेने निरोगी शरीर
बळगान् लाही, देखो, छी, मिरो के घारला सजोगो मळे एठ्ले
एना नाचगाननी लाखानु शु पुछु ! आ दग्धा एकज भवनी
नथा एकके भव एवा नथी के ज्या आटली कूदाकूद न हाय अरे,
तमे सामान्य बगळे बधावो तो पण तमारा आडोशी पाढोशी आभिमान-
पूर्वक तमने कदनारा भवश, तमारा बगळाना एकाद बाहुभेयी पवनना
झपाटा जावता हशे त्यार ते बाजुनी जाळी तोडा तम त्या भीत चशारी
देशो ता पण तमने सदानुभूति आपनारा मछा जशे के 'वाह शेठ !
भाग्यशाळा ता रसा हो ! तमारा बासा विचारा बगळो 'वासुदेवु'
करता रही गया, बगळो बाधो न शम्या पण तम सो बापदादानी मरजा
पार पाढी खरी ! ” केम जाले बगळी बाधवामान पिंदगीनु चायक यहै
जतु होय ! नगळामा आवता हवाना झपाटा बध करेलाय जोइ तमारा
वस्त्राण करेह के “ वाह वाह शेठ ! आ ठीक कर्यु हो ! साळा चौपीसे
कलाक पवनना झपाटा आव्याज करे, वसवे कोइन शरदी थाय तो !
पण हेरे तमारे परमा बाधोज नहि ” उ महिना पढी एज दिगाळ
तोडावी चारी मूकाबो दोय तमारी प्रश्नाज थशानी के “ हेरे तग रास्तो
शेठ ! आ दिगालथा पवन पराइ हेतो हतो अन अजवालु पण आवतु
न होउ हवे तो तमारे चाकासे कलाक फरफराट करता पन आव्याज
परवानो हो ! जाण माथेराननी टेकरी ! ” अने तमे पण तमारी आरी
प्रश्नसा सामलाने राचनाज मढी पडो छोने ! आउ आउ राचवानु ससार्मा
रखदता आत्माने केया भवमा नथी मळ्यु ! केया ना
विषयाने लाखे ~ ~ ~ ~ ~ अने केया भवमा

चन्द्रनी मारामारी हे एक शब्द पण जागल पाठ्य न करी शकाय त्वा आला
 पास्यनो कडदो करो ते केम पाल्ये ? आयी स्थितिमां अेक पक्षमां आव्येज
 चूटको आ शाखनमा रही सधार पण यरो अने त्यागेय खरो एम दहि
 दुधमा पग राखो ए त्राय न पाल्ये दव, गुरु, पर्मनी आराधनाव
 चारणदार हे एकला देवनीय भस्त्रित शु कामनी ? भगवान् महावीर एकला
 देव, ए तो एक पत्यरनो कटको हे, अथवा तेओ विद्यमान होय तो
 मासना एक लोचा जेवा हे तेयी वधु द्रव्यहाइमे तेमनी कह फिसत
 नथी तमे भगवान्नी पूजा के पग रवी करो त्यारे, “हु मासनो लाचो
 चापु हु” एवा भावना राखो तो तेयी पूजासेवानु फळ कह मेड्ही
 शक्ता नथी, परतु देव वीतराग सर्वशप्ताना गुणेवाळा (मासना लोचाः
 रहवा) आत्माने हु पूजु हु ए भावनाथी पूजो, जर्यांत् तमे पोतान
 अत करणमा देवत्वने स्थिर करी पूजा सेवा करो तो देवपणाने के वीतराग
 पणाने पामी शकाय अजैनो अनादिकाळयी रसदग छता ढोग तरीवे
 पण वरिष्ठनी जेम पश्चात् मुद्रा बनावी शक्ता नथी भगवाने आत्मान
 दभी पोतानु जीवन ए आकारमा पूर्ण कर्वू, माटे ते आकारना धारक
 आत्माने घन्य हो एम मानु वडे उ, जने एउ जीवन जीवरानो मार्ग
 बताव्यो ए पण स्पष्टज हे, माटे तेमने बदन करिए, पूजिने तोरक मानिन
 एम न होय तो ‘हु’ जन गु मा परक रह का नहि देवपणु एट्ले
 हु ए न जाणता कराती प्रभुपूजा परपूजा हे त्यागने तत्त्व मानी
 तेना प्रपर्तीक्षने देव मानो, तोव देवपणानी मा यता सार्थक आधबो
 लाकडी ठोक्को ठोक्को जतो होय त्या तेना पग तछे आवला हीराने पण
 काकरा मानी जागल चाके तम धर्माधर्मने भाषणे तेना तत्त्व स्वशप्तमा न
 समनिने बन तीर्थकरनी जाशा पालिए तो ते आधबाने हींगे मळ्या
 वेउ हे पुष्टम (शीरो) मळ्या उता जापणे बाधबा जेवाज नास खुशी
 देव तो हींगे बळ जा निर्दगीने परवी द गुरुना निर्वय इनां दसनी

ચેવા પણ સર્વથા અથડીન ખ છે ઇદ્રિયોની ગુલામીમા પદેભાઓ એ તત્ત્વ-
અધીની આરાધના ન કરી શકે.

ચત્રીજી ઘડસ્વોર સ્વોડણિયા અને લુલી બેન—

જાપણ ઘર (શરીર) અશુચિ છે અશુચિ ઉપર ચાયુ અને અશુચિ
બસુબોથી વધાયું તે કોળિયો હાથમાન સારો દેખાય, મોનમા ચગ-
છના માઢો છો, કે તને લેઝરથી ચાયવા અને ચાટવા માઢો છો તે
બસતે તમારા મોઢા આગછ આરથો મૂક્યો હોય તો તે ગઢા નીચે ન ઊઠો,
તરત્ત ઊઠી થાય એ ગદા દેદ્યી આપણે દ્વાલિએ મ્હાલિએ ડિભે ધણા
ચત્રો અશુચિને સ્વાદ, સાફ બનાડ છે પણ આ શરીર શયતાન તો એવું કે
શુચિને પણ અશુચિ બનાવે તે, દૂધપાકના તાવડામા તુમારા મોદામાથી એક
ટ્યપું બેગણ પણ બુક પદ્દા જોખારાઓ ત બધા દૂધપાકનો ત્વાગજ કરે
ચૂકના જેક ટીપાને સુધારવાના શરીર દૂધપાકમા નથી, પણ દૂધપાકને
બગાડા દરાની શક્કિ તે એટણ જ નીદ, પણ એક ટાયુ આપણા ખુકનું
નામી આપણે તે દૂધપાકને નથી પીતા કે કોઈને આપતા હાલમા હોય રોપમા
ખતી નાંઓને આગછાનો સ્પષ્ટ પણ થગ દેખા નથી, અને તેવું માલ ઉપર
લન પણ તુ તાત્પર્ય કે, જા ટા દિવ્ય તે, પવિત્ર છ, દેદ્યી સર્વ સાધ્ય
પાણ એ ન સુવયા અધિક ઉપયોગી તે એમ દેદને મને તેમ બખાદનારાઓ
અને નમના હુદ્દેરો જેવા હુરોપગાંધિનો પણ આ દેદને અશુચિભૂત માન છે
સુશ્રી જ્ઞાનને પાણી પાઓ, તે ગાંધીજિતર નાયો તોય તે પાણીનું પરિણામ
સુદૂર પછો થાય તુ, પણ જા શરીર પાણીને પાણના સ્પર્મા, ઇસ્સૂરી દેણ
રાદિ મિનિટ દૂધપાકને નિધાના સ્પર્મા પૈલ્યાડી દે છે પૂછની માલ ઘડી
માન રદાતા સ્પર્મા ફેરની નાખ છે જાણી અસરિનમા અપવિત્ર બસું જર
આસ્તા જગતનું મદાળ છે, અને એ ગારિના એક જ દાદ્રયનો ૧૩૪૫મો
દિનારો જીવોનો કશ્યપથાળ કાઢી નાસે છે સર્વજન્ય સુસના માટજ
ન્ગાડા, તુગડા, કપડા, તલ્લાં, ચિરિંગો, પણ કોરે વાપરતા હજારોઝ

नहि असख्यातनी आपणे कलेआम करिए ठिंए. जीम जेवी जीवती दाकण तो जा सगारमा मळवी मुश्केल हे जास्ती दुनियाने बेजार करी रही हे अने राजी राखया तो गाय आदि गरीबोना गळा कापना सचा शोधी काढ्या हे आ घु दलालणने आभारी हे एने लैधे तो सचिच अचिचनी विचार नथी आवतो बटकानी कातरी अने कादाना भजिया पण चडावी जवाहँ हे आम घम अने भव हाई शरीरने रागपूर्वक पोपण आपिअ ठिंए

अनतकायमा जीवो केट्डा ? एक सोयना अप्रभाग उपर अनत एन्हे मोजे गयेला, तता, अने चाना सब, देव, नारक, तिवंच, एकेंद्रिय, वेद द्रिय, तेहद्रिय, चउरिद्रिय, पचिद्रिय सुधीना थधा जीवा करता छोयनी अणी उपरना जीवो थधी जाय जीमनो चटाको पइवाथी अनतकायमा जीव मानवानु घणाजोना जीव ऊपर आये उ माट शका बरे हे के आटला थधा हे केम खेता हयो ? आ मीलना भूगळामा रहेली यशीय बढखोर राहगियानी लाढको बेन उली बेन आ यातना सामे बहु शका उठावराहे हे के “ अरे ! अनतकायमा जीवो ए ते कह थने ! ” आ शकानु कारण अनतकाय चीबोने चावी रातानो चटाको पडेलो हे तेसारी एको हे के तेने घराकनी बहु परवा नथी घराक पण भेवो हे के तेने जे मझे हे लइ लेना तेयार हे, पण आ बने समजी जाय ता दलालणनी मजाह मरी जाय, माट उज नूदाहूद करे हे तेसारी हायमा लारो दूको रोट्लो लइ बेषे ताय घराकने तेने त्या जगानी ना नथी आ घराक एयो हे के दाढ, भात, रोट्ली, छाक जादि बघु पचावी दे हे हाय पण एम नथी बदेता के भागाभी बटाकानी कातरी होय तोज हु ऊचो नीचो थाउ, अरे भागामानो रोटाक मोटामा मूळु पेट बदी एम नथी कहेदु के कठोडना बानी ना होय सोन हु पचातु, नहि तो पचाववानी बाधा । दात बदी एम नथी बहना के लीला शास मझे तोज अमे राहगिया, नहि तो नहि अ थधाओ पोतपोतानु काम बरे छ, कोइने श्वर राधो नथी, परतु जा जीमने चस्तो पडेहो हागाभी नगनवी चर्चो चाट्या जोहेजे हे तमे मन्त्री करी

फरी याही जाओ, हाय रखी रखी दीता थाय, पग मजूरी करी करीने
 सुधाई पडे तोय तेनु जीभने कह नथी एने तो गमे ते याय पग गम्भत जोहभे
 गम्भत हरे तोज ते पोते ठरहे अने तमने ठरवा देहे, नहि तो ए डाक्का
 एकी छे के न पोते ठे के ठरवा द शीजा दलालो तो धारेभी रख पोता
 पासे पह गह के नीरात थाढे हे पग आने तमे जेम जेम आनो तेम तम
 रेनी मूळ रम्भीज जाय, उतोप कदी नथी दैक्को बसत धीमा लघट्यहो
 शीरो खापो दशे पग तमारी जीभ उदाने माटे कदी पीवाली बनी ! गोळना
 ढाइवा पा वारचार सापाचा हो पा तेथी उदाने माटे आ भीठी बना !
 त्वार विचार करा के आ केटला थीए चीकणी अने केटला गाढे भीठी
 थाय ! केटनु पाषे धराय ? पेट्ये रोटलो नाया ता त लहने विचार पचा-
 ववा मही जाय हे, परु ते रोटलो हाय पाहेथी लह पठमा पहोचाइवा
 माटे आ जीभा भीदु, मरु, शाळ, चटाई, भजिया, भथागा, पापड
 विगेरे दलाली तरीके जोहभे ह जाटला थी गोळ ग्रावा छवा एना लक्ष-
 पमा जरा सरताय परऱ नथी, आ कंबी प्रामाणिकता ? छता एकी ठगारी
 दलाला उमर तमने जमीति-जापती नथी, अने तमे तेना माटे आउलिया
 फरी फरी दोझी मरो छो जा साई एकी शेतान के तनाथी साई तो थु ज
 नथी, पग कोइ स्थळ पधरो मारवाना होय तो त्वा बा सोयी जाल !
 तेथी ज अनतङ्गायामां ज्ञीय हे के नहि एयो शक्षास्त्री पधरो वैक्षती रह हे,
 अने तमे पन दलालग्ना एगा गुलाम बनेता छो के एनी उमे बळ्यो करी
 शक्ता नथी, तेथी ब तेना नवा पवगामो मानवामा आनद मानो छो
 तमारी जीमन पतरवेलिया रावानी इच्छा थाय, चपाना छु ख्सरानी
 इच्छा थाय, सुदर गापन सामळवानी इच्छा थाय, क मुर छी तज्जाहने
 यतानी इच्छा थतान बा रुहाना नगर पगारना गुलाम आत्मायम दोड्ये
 चामानिरुमा भोयने पग भार न लागे एगा पग्ले चालनारो हो उपाटा
 उध दोड्ये कोयदी लह पावरा गवी पतरेलिया तरारी न्याये पळीले
 लागो मोन मागेहे, पढी रोलता चिनना जाइ रुन अने

आपहे, जने देवटे चामड़ीने रात्रि रात्रावा रात्रमां गधेडानी जेम मुखाली
उल्लाइमा आलोदरो केवी हे गुलामी ! इदियो फरतां महान् उत्ता
आत्मा तेना आधीन हे उत्ता दलाल्य चाह यन्हे पस्को
करे हे के “आत्मा कह कोरनो गुलाम नपी, ए स्वातंत्र्य
प्रिय हे ” आत्माने आधीन इदियो होय तो जीमदारा भजिया
भादि खावानी इच्छा याय के तरतब निश्चय करी लो के “एक
वर्ष सुधी इदियोनी जावी आशानो न पूर्खी,” जने ते निश्चय इदियोने
तेनो विषय न आपगादारा नमावी याको आत्मानु माप तो काढी
उओ ! तमने जा जसतरो करता ऊप न आव जने हे विषयो भोग
यावानी तालाकेली याय तो गुलामी सष्ठ छे तमारी स्वतंत्र दावानी बाग
पौखल हे, बठेल यायदी जेवी हे बठेल यायदी एवी जोरावर के दख मर-
दोने ठेकाणे पाडे प्यारे धगी विचारो रास्टो अने तहन अग्रह आ व-
टेलने जरा ओछु पढे एठें गरीब गाय जेवा विचारा धगीने मार मारी
अघमुनो करी नारे पणीए विचारु के आम तो मारी आवह जाय हे,
एठें तगे एक तरकीब गोठरी धगियानी धमापम माडे अटेले पणी
पाडोयी सामझे जेम थूम मारे के “हे राह लेती जा,” आडोयी
पाडोयीनो सामझी प्रधाना फरे के “सालो मादो मादो पण जबरो तो
खरो हो ? राहने केवी ठसाव करे छ ! वक्ती पोते बद्धार निक्क्ले अटेले पाठो
जहापण करे, “यायगी जातनी अशराफ लरी हो ! गमे तेटली माझ चु !
पण चाँ के चून करे, कहेता धगेज हुक्म पाळना तैयार ! आ वधी पहा-
दुरी वचननी यह, पण लरी रिपति हु ते तो भाइधीज मनमां जाने
हे जे प्रमाणे तमारेय जात्मा गुलाम रास्तो होय अने “आ यदा कह
कोईना गुलाम रहे तेमाना नया पण स्वतंत्र हे,” जेवी ज्ञानी ढक्कास
मारवी होय तो भले मारा, ‘मे तो इदियो जीती लीधी हे” आवो
पाको रास्तो होय तो भले राखो, पण लरा राते तो इदियोज तमने
दोखे हे अने तमे दोरा तो छो ते तमारी दासी तो त्यारज के तमने जे

बहु बहु गमे के जे उपर प्रेम होम है यस्तुने तमारे जावा करपानी दपन
 करो रहु फलाणु आम होर तो ढीळ याम, एरहु जरा दोंपु होम ही
 ऐय आपे, आ गायन बीजी थार मगार हो मगा आपे, आरी इडा
 होय अने कहो के “ इप्रियोना आपीन दु नवी ” तो हे उरियाप्र तुआणु
 हे थेक हो इप्रियोना गुलाप ग्रेव, जने माठिक दु जरो जाडो इम छो
 छो, तथी कह ते तमारी दाढी भनी ज्वानी नपी तमारी शिखतुधा पोइ
 बानी टालायदी अन तमवा बेट्ठी अे बो तुओ, जे विचारो (रन्धाओ)
 जा गुलाम थनो छो, जे पालनानी पाह्य दालादाट करी नूको छो सोपनी
 अनी उपर जोरामाना भेक दीनानोय प्राह्य हे, अने दाउ, सीन
 छाला दीपनो प्रकाश पर रहे, हो अस्ती अंग बाउ बीयो कम न रही
 यहे ! उतो आ तुच्छी दस्याली योवाना स्वाद पेस्ता तमने ऊच्छी अराम्या
 अने तमारी पाखे न्होटी यक्किलात करारी के “ अक खौकनी अची उपर
 अनवा बीयो केम रही यहे ! ” आ दगल्लाज रादेष्वने बटाङानी काउरी,
 शक्तियाँ, कादा, रात्र आद चाववा हे आ बशानो चटाको अन बयो
 छागी गयो छेके, जे अननठाद जीवोत करदी सापा विना तो चान्तु रापी
 रेयी हे तमारी पासयी न्होटी, बाय खोटी यक्किलात करारी थी त्रिवर्णी
 बानीहप अगृत प्रवाहमा परह पेक्कोव हे लादी कीपी रात्ने लज आ
 कमदस्त थानवा देवी नपी, बायी सष्ठ उ के गुलाम छिमे, बानी
 गुलामीयीत्र शरीर पोथु हे

ससारमांचामा शरीर तुलनुलादणी उ—

आ शरीर भेट्टे पात्रगती मौक, अने जावी यहामयानक भीलना
 आपेक्षमनदी व छाटो शरीर भेट्टे ग्रॉट उपर नकारा मुजब भगाऊ भायु
 मरी जापउ यर रात्तो भयकर, फोग शागी जायो ग्रॅट ल्य ! दम जीवे
 आ शरीर भेट नीघो, पुण्य भाद रहेग आप्यु “ देव भवर्मा लाच ल्य
 आजा भागशीद, दन नही वाच वर यथु रहेवा दे ” कहो ता न रहेवा दु

लास्तो दिया, मणोवध सोनु के लावल्यकर होय तोय छोड़ीने जतु पंजे शरीर माटे तमे मूढ़ी खोई देउ कर्मु चावद्य, निरवद्य, अनतकाय विचार जेना माटे करता नथी ते शरीर शशभगुर छता तमारो तेना ऊ विष्वास-भरोसो हे, पण याद राखजो के आ सोदामा तमे पुरेपूरा ठगाबं छो, मोटी भूल करो रखा छो, माटे देहनु स्वरूप समजो ! उपवनोमा भन रजनार्थ होय तेम आ सहारचगीचामा जा देह भुजभुलामणी छे तेमा : मुझाओ ! परोपकार के तप करतां शरीरने दु ल याय हे, ज्योर शरीरद्वारा न राता व्यभिचारथी भयकर रोगो याय छे वरधोडम्य दजारो लच्चों, पण देहमोहथी मुरुतमा नथी सर्चता, भुलभुलामणीमा पदा रात्रिमोजननु पाप रुक्ताय अचकाता नथी, अने बबी आगळ रुरो छो दलीलो ! आ युगमा दलाल भने दलील जे बेए मळी आल्माना सत्यानाशनो धोरी रस्तोज तेयार कयों छे जधकारना लीधेज रात्रिमोजननो भियेध होत तो ते केवडि योन न होत तेजो अरकारमाय लोकालोकने जुओ छे “ शरीरमाय यउ धर्मधाधनम् ” अथवा तो “ वेपोरे वर्षाती ल.सी ” ल.सी न मळे तो वेपारनी विमत झूरी बदामनी, तेम धम न सधातो होय तो शरीरनीय शरीररूपी दुकान द्वारा धर्मरूपी धन (नफो) बध याय तो आ दुकान बध रखी चारी हे, जहरनी हे, अर्थात् जनशन करतु अनिवाय छे दीक्षामाटे सतति पदा न कराय—

अमे दीक्षा दरए, दीक्षा देवानी अमारी परज हे, अने ते आकाशमांथी पडेलाने नहि, पण खोजे जन्म आपेलानेज आरिजे हिये, छता दीक्षा माटे खतति पेदा करो नेतु जा शासन नहि कहे, पण ब्रह्मतर्यनान गुणगान करे हे केवडीने पण जाहार जनियार्थ होवा उता ते लेगो, भोजन करतु ऐ धर्म हे, अररा तमना माटे बनागी जापनामा कमोनी निजरा हे अम तो जैन शाका नवी रुद्धु तो पठी जानकालना चीशवलाओ साकुओ पासेवी “ सहारनी जदरियातो योछडी वस्तुनो जाइरामा पुण्य हे ” नेतु केहन-

दाववा मागे तो ते आ शासनमा केम नमे ? आङु तेज साधुओ वहे के जे
 लाचिया, नशीब पूर्ण्या, आळमु होय के रली सातानी—मागीने पण सातानी
 दानतज आ पवित्र धर्म उधुस्यामा गुप्तुप मुस्या होय शानिये तो पेताने
 अनिवाय आवश्यक होय तेने पण पुम्ब कहेता नयी, तो पठी तमोर जहरी
 होय तेने पापस्प द्वेष तो पाप केम न कहे ? कषमदेव भगवाननी आरा
 जगत्ना जीवनस्य अग्निनी व्यवस्थाने पण धर्म नयी कहो, पण पापस्या
 कही हे कषमदेव भगवान ऐटले आ महान् शासनाना सीधी प्रथम तीर्थ—
 कर, अने थी ईमचद्राचाय ऐटल ते पठीना एक आचाय, तेथोआे प्रहृ
 दिने पापस्य स्पष्ट बताववानी हिमत करी, अ यहै शके जा शासनमाज !

भगवाननी रुथनी अने कर्णी झूटी छता उद्देश एवं—

जे शुक्ल उशक्त अने योग्य तेनाज पछो खारा, तेम धर्म अने
 गुस्ता आपारभूत जे देवतन जेनो निग्य पहेला जस्ती हे जे गुद दयो
 तो क्षुगुर अने सुधम पामी शकाय प्रभुनी प्रतिमा जोह थाय के “ आह ।
 भगवानना मुख ऊपर केनी शारता अने सीमता पश्चायेही हे । खरपर,
 भारो जाला आवी ददा क्यारे पामदो ! ” हो घारो के आ प्रतिमा जेनी
 जोडे देमनी राणीने कभी राखी तेमना हाथमा इथियारो के वाहन ऊपर बेटेला
 चीतरिए तो तेवी प्रतिमा जोई आपणने केना रिचारो बावे ? आदश
 सदा चालु रियतिथी वजु थेठ, ऊचा प्रकारनो होय हे खी, झोकरा, शख,
 वाहन तो तमारी पासे तेज, तेनी पाढल भटकनारा, गाढातर बनी पर
 नारा, धम्भना खण्डणाट्यी शतुजेने जीती लेनारा जीवो कहै वातमा
 तमारायी थेठ होय अने गत्राय ? तेम सरागी देगेनी शूदि, खी, धन
 आदि आपणा करता अनेक गणी हे, माटे ते आदश मानवो पण मूलता
 हे कारण, आदर्श अधिच्छ द्वेषो जोहए, ज्यारे कादि तो नाशवत हे
 माटे स्पष्ट तेज हे के मेल्लेलानो त्याग अेज उही स्थिति होवायी जे
 न्यागपी परिपूर्ण अवा भगवानज आदय होई शके साथे यदोदा के सुम-

ल्य होय तो त्यागनो आदय भूलाई तेरी मुदर खिओ अने भोगोपमोगी
छमवानी इच्छा जागे त्यां तमे तमारी न्यूनता पण जोह नहि द्यावो, माटे
ता कुदेबो ते

प्रश्न—तीर्थकरोने पण लियो तो हतीने ?

समाधान—वात खरी, पण तने तेबोजे तस्वानु सामन नौद
मायु, खोटी मानी हती, अने त्याग कयो इतो, ऐट्के भगवानना ल्यादि,
खीपुत्रादि अवस्थाने आपगे सारी नर्धी मानता, त्याग पठीनी दशानेज
सारी मानिभे छिए तेमनी वर्धी प्रशुचिओ अनुकरणीय नर्धी तेबोने पण
त्याा पठीनी प्रशुचिभोज सारा मनावी छे तारकोनु चरिर अनुकरणीय
खर, पण कर्मनी सबोपशमदशानो भाव होय त्याा

प्रश्न—कमोदध्यनी दशामा तेमना हाथ थेक्का कायोने के दशाने
आ शासने कदी अनुकरणीय बळा नर्धी, तो पठी तीर्थकर के
बेक अने भास्ते केम त्रीनून ?

उत्तर—अन्य देवोनी कभनी अने ऊरणीनी मिरताने द्वावरा “छीछो”
ना पडदा राख्या छे, आ शासनमा तेम नथा, कभनी अने करणी
अभिन छे (जे जागळ कहेवाहो)

प्रश्न—अभिन ता करणीन करी तेबो बंदी रेहु छ्या, तेने जोह
जगत् अनुसरत, कयनीने जूदा र्घ्ये शा माटे कदी ? तेमनु वर्तनज धर्म

उत्तर—भगवाने लायिक अने शायोपायिक भावे जे कर्त्तु ते
सर्व धर्म देज, तेथी कह कयनीनी तस्वर के अवकाश नभी बेस
नहि इस चाके तेम कागडा नज चाली शके, माटे हसनो धर्म
ते के कागडा माटे चालवाना माग बतावरो इष भगवाननो
मार्ग, तै आपगे प्राण कदाचिन नज करी दर्शिये, माटे उपदेशनी तेबोने
जस्त जणाइ, अने तेज मार्ग जारगनै धीमे धीमे अनुसरयानो छे भगवान्

जे जेवा उक्त भवमां भरेला वीवो ऐ के वेमो जेव कर्हे हे ईम आमे
 छारेवन भसमी वर्ही यस्या नहि, यक्ता नपी अने यस्याता पन नपी,
 पोट बाल्कीवोनां उप्यार माट भगवान्मे धर्म इफन कर्वो वन्हो भगवान्मे-
 नना दग कासोनु पूरेपूर अनुकूल १२॥ वर ऊमा, छिंग पन ऊमा-
 ऊमान काखी दे पही विगेरे राळ जीरापी यह उच्चां पदाटी वालीने ५७
 नाप छेवना अनुयायी न गावर धाचोवरनिक भाव पूरखा छेवना
 कासनु अनुकूल दे थम राहे, एत वो नह पधा भारापी शके ? मोटव
 बार बीचोना दिलाके धमाकाओ दहा देहक, दने दातो दरिक्को शाको औ
 शानेपाली वरी द्वारे छेवनु ननु अनुकूल अज्ञानो ! ता मुपी आगारण जननी
 आडाव, उरजी नही यासकारामे यामुने २॥ दहर द्वानी आवा
 आदी थे, एत छोर पुण्ड्रवाली शिंदिमारै ठेल्लीय निशा न स्व ठी घास्त-
 कानो छाप छापी नव गवाव अदी दहारी निशा वा । एतानो धरपा स्वाग
 तपी करी यक्ता ठेहा अहउनेने याकि नक्कानो भगवानेमात्र इरवामो
 हे, पाद याखानु फ़ कपनी अने कर्वीमां मुरानो भेर होती नपी
 जेवदास्ताक आद्यादि उदाभोधी उर्वी याहा उसानी तेवनी कपनीमा
 कही नव होय

अनेनोनो नवो नुद्दो—

थी बिनेश्वर दग्गने जारव वीउगम सस्त देखिंधे छिने वेमो अंति
 वद्वना द्वावी हे, गोवाक्षिगानो लीठा भावी शय थो दरवशाविव, केप्रे
 आननापी नपी रकार्ही तेमु काल यु ने देवनस्य विगावे राव भग-
 वाननी मूर्तिनां कस्थाननु ५ निह, शाहि अने जानद रापामां धाव्या हे,
 अने हे धाति क आनद पर शानीदघानाव, उप्रस्थावस्याना नहे थो
 भगवानानि जाडार अने दहना रगवाढीव मूर्ख बनारसानो उरेय होउ वो
 भगवाने याखानु स्तनगन कुरु ते भरतनी पा केवनी मुरा जाहिंग ६३,
 “१ वजी या माटे मारानु ल्लवान छता भगवानी ग्रनिथाभो” ७४-८०

आवी नथी । कारण अटलुज के वीतरागतानु घेय होयाथी वीतराग अयस्यामानी शात शुद्राज स्वीकारयामा आवी हे, जेना दर्यनधी आपगे वीतरागवना घेयमा हृदय यई शाकिभे अने तेमना जेवा उपरागो हस्ते मोडे सहन करिए मूर्तिमा वीतरागताना मायन राख्या होत, तो अजेनो जेबीज आपणी पण दशा शात अजेनो ईश्वरमाथी अवतार, ज्योर आपगे अवतारमाथी ईश्वर मानिए छिये पापगे भगवानने जामयीज मन पथव के वेवळशान नथी मानता, पण त्याग आदरी ध्यान, तप थडे कैवल्यप्राप्ति मानी हे तात्पर्य ऐ ते के—मलिनता के जशानवा पहेला (जन्मदी), पठी निर्मलता अने शान योतिनो प्रकाश अजेनोनो आदर्य मलितानोज चिद याय हे तओ याय हे के जेमनी मूर्ति कहै जने शी रीते हाई शके । अर्थात् मूर्ति नज होइ शके ईश्वरमाथी अवतार जेटले ईश्वरत्व (शुदता) पहेला अने पठी मनुष्यत्व (भीलनता) अवी जौन मान्यता हे

प्रश्न— जेनोय चिदने निरजन निराकार मानी तेमनी मूर्ति केम बनायी शके ।

उत्तर—जनो चिदनी प्रतिमाओ बनावे ते चिदावस्थानी नहि, पण जे देव चिद याय ते मनुष्य देहनीज, अने तेथीज अमारे मूर्ति बनावी शकाय तीर्थंकरोनी पण मूर्ति मनुष्य देहनीज, जने अवस्था पण निर्वाण वसतनी तीर्थंकरो वेवढीपण्यामा जभा राइ वेहे, चाले, देव छदामा शरीर पण लाङु करे, जधे पण नहि, समोसरणमां पर्वकाळने नथी वेषता, पण खुरसी ऊपर वेसी पण नीचे मूर्किभे लेवा आलने वेसे हे, अने पण पादपीठ ऊपर थापीने विराजमान याय हे आम चुदी चुदी दद्या हुदा चुदा समये धारण करे हे भगवाननी जे प्रतिमा बनावासां आवे हे, ते नथी देवानानी अवस्था के विहार वसतनी, पण भगवान् चिद यवाना होय ते अवस्थानान मूर्ति होय हे आपणी मूर्ति-

जीना देव प्रकृती हे १ कर्त्तोऽस्मै अने २ पस्तकाभन्ते आदेव
 आणे तीर्थंडे मोहे याय, च्यार वीजा वीजा काह का आवरे
 सोध वाश भावकाळना कठलाळ ठोऱ्यांग सापुभो होउ की
 टीर्थंडला आवरे काउस्तग कला देखे हे क्या प्रथमी देवीने
 काउस्तग दरया कधु हे ? आ तो चाम्बा इमादब उ झाल पाला,
 टीर्थंडला हरको तेवा जां पुस्त की नपीम, महाराज मात्र उ नुचारी
 आवरो बाट पन जब आहा उ आवे तो टीर्थंडला आहोरे काउस्तग
 दरयो उ, अन देवी एवीओ पदावी हे आजा परमाननी मूर्तिमो
 काकार नमस्तासी उ वेभो (अजेनो) परमहत्ते निराकार याने तं
 ओने मूर्ति क्नावरानो नवाहात्र नपी, धाहार अवस्थामी भक्तिनाव
 होय तेनो रामृत्यनी मूर्तिभो करे उ, वाळु तना यन्मुक्ती पदा देता,
 वीजी वातु अजेनोनो उन्यासागत्यासो रामृत्यादिने पानवाना ता निरप
 उ “ तनो इन्द्रायन्न होगायी मूर्ति बनावो हे ” अस की यज्ञाव
 करो तो यज्ञ पाय के खीयत्र यदिव देतानी मूर्तिओ घरवी पढो उ,
 तेना आदय द्वे ? आ प्रभ पूज्याव तभो गुचसादानां ददी याय हे आप
 जानां जालवी मूर्तिरूपा अने तु मर्य जोह अजेनोभे नमे इशी डडाप्पो
 के, “ धात्यानु रुहन देवातु, विचारु अ तो कल्याणी याव हे, हे पेर
 रेठे पन बनी यक ” आयी ददीउ की जेनाने भद्रियो जां स्वाक्ष्यानो
 (अटकारवानो) अने द्रक्षिण उपरी तमनी भद्रा भोडी घरानो तातो
 रस्यो, पन तेमु ट्यू त्रागळ चान्यु नदि तिन मदिरे ज्वा ज्वाना,
 त्यारे तेमने पन मदिरो शह रस्य, मूर्तिओ देउदी, ने तभोभे शावही
 छाविरा अने हापिभाए पन गाठी दीपा अने पदने तामे पदनी तुकान
 सु गी मूळी दीपी, घरां ज्वावो न भोळाया, छाकोवे फुल्ड की...प
 के “ यज्ञ शामदिभो जोवा अमारे त मदिरे भावानी ”
 अमारे स्वी यज्ञाय - ३८८

“आगमोर्मा पाठांतरो जोइए” के द्वारा ए महामूर्खाई हो—

चोबीषे मगरां ज क्यु तेज आगमोर्मा लखायु ते ते पण शिष्यानु विष्यनी धारणा घटवा लगी, स्मरणशक्ति ओछी थी, त्यारे देवदिंगगीर्ण वलभीपुरमा लखायु थर क्युं, ते करते उम्रतो अने फुमदवादिओ पर वलभीपुरमा जीवता अने ज्ञागता दता ऐ शशुओनी वचमात्र जैनागमोर्मा दस्तावज तेयार थयो दतो, आगा दस्तामेजोनी घत्यतामा त श्री खामी होई थके हे ? बधा आगमो लखाया वलभीपुरमा, छता कोइ आगममा सोटडी छाया के देवदिंगगीर्णी पातानी के गुस्सी यात क्याय नपी ऐ याद हु ते लखता गया तमां पेरफार कर्या होत तो तेमना अद्वयगानी छाया तेमा जहर जानीज होत बीजु कह नहि सो स्वयुष्टु गीरन वधारनाह चो तेमा जहर कहर लखायु होत परतु तेगो उडेग क्याय नपी आचकाल गुरु-सनी भक्ति ओछी थई हे, तो पण प्रथ मकाशको प्रथमा स्वयु-हार माक्काओ भस्तिना खाने जाडे ज्ञाय ते ऐ भस्ति केहवाता होय तो देवदिंगगीर्णे ऐनु एक पण कार्य बनाय आज मुधी कोई खदोधरोअं शोधी कादयु नपी देवदिंगगीर्णे स्मरण हु तेज लखवायु हु, तेमा कादना शुष्ठवानी वस्तु तेमने करनानीज न्होती, अने तेम करवा अवश्य पण न्होतो देखोअे गुप्तुप खूणामा येली आगमो घरउद्धा होता वलभी पुरखाते जैन अमणोनीं महासभा मळी हती, जेमा ५८० धमग मदाराजाओ विद्यमान दता ऐमने मान्य रातेला विचारोज आगमोर्मा खसाया दता— लखवायाय अमुकज लखतु अने अमुक प्रकारेज लखतु जेवो ज्या कट्टर नियम होय त्या केटलाको जम माने हे के “अमुक स्थळे पाठातर जोइअे इत्यादि यन्दा केहगा ऐ महामूर्खाईज ते र्वद्वाहोअे जे धिदातोनी क्याखी करी हती तेज आजे चालयु जाये हे धरतीनपनो सभव उखो ए पण नपी, त्या कोई जेम खारे के “अरे ! आ यंक दृटी पढये तो ” ?

आवी धक्का करनाराओने तो देखानु पण स्थान नम होइ थके. आत्माना प्रदेशो पेहलानी जेम आजे पण मानिए छिने, तो पछी, “ शास्त्रमा आम दोऽु जोइथे, अने तेम होइ जाइने ” बिगेरे शका करनाराओने पूछिये के तनने अबो कयो ज्वरदस्त पुरावो क्या मव्यो छ के जे ऊरयी तमे आम कही यको अद्वामा तेने केसार न होय तकाजोने कियामा पेटपार होइ शक्तो नयी ऐय न सहे तो तन कोई पण जातनी पचातम नहि ऐय अने धदा सलामत होय तो जग्मान पण रिचारमा के कियामा परपार सभवेज नहि केटलाको बडी दी ताना दिवसे उपगात आवेल करगानु माने हे, तेलाय परस्पर पेर नयी तत्कमा पेर न होय तो भरभेदने स्थानन रेतु नयी आपणा गच्छोमा तत्त्वयी पेरफार होवाई तेमा सत्य क्या उ, ते विचारतु बहरनु छे दुइयाओ मूर्ति अने देहराने आप्रव माने छ तेथा तेजो भगवान्ना खिदातो बने मान्यतायी लदा पड्या माटे प्रभुना शासनयी विवरात छे केहवु पड्यु रजो मदिरने आस्थवनु कारण माने हे, ज्यारे आपणे तेने निजरानु कारण मानिने छिअे अहि तात्त्विक मान्यतामाज तत्त्ववत पडायाई तेने सम्पत्त्व नयी एम अमणोने केहवु पड्यु छ जे स्ये तत्त्व होन ते स्वेज तत्त्वने मान त्तारन तेने सम्पदशन मनाय आतु बधु अदाद्वने समजायी शकाय, पठी ते शकाईल होय तोय चाले पण जेबा अदादान होइ शाष्ठीने विचारयाना वृत्तियाळा नयी तेवाओने समजापगानु स्थानज नयी घर्मनो प्रचार करवो, परमा अदा दृढ करवी अभा जराय मनमेद नयी जे कह भरभेद छे ते घर्ममा दृटगाट मूक्याना बायतमा हे, द्राय, क्षेत्र, अने काळना अनुसार घर्ममा मतभदा पव्या हे

तीर्थकरोए धर्म उनाव्यो नयी पण उताव्यो हे— *

धर्म तीर्थकरोने नवो बनाव्या नयी, पण हृष्य के अदर बसुनाने स्वभावज तेमने बताव्यो हे **तीर्थकरोना पदेलाय पुण्य या पाप तो लागत** तीर्थकरोने तो **उताव्या** के जगाव्या जेट्टुज

आर ऊढाडे हे त्यारे प्रकाशने देखे हे, परहु तेनो जर्य अवो नयी के हे आर नयी उचाइतो हे पहेळा प्रकाश न्होतो, के प्रकाश वस्तु देसाढवानु कामज करतो होतो तीर्थकरो प्रकाशने स्थाने हे, पा धर्मना उत्पादक नयी धर्मा फेरफार केवो होय ?—

धर्म थे जगत्नो स्वभाव हे, ते कह खोडी कानेली नवलकथा नयी के रंभा तीर्थकरो पण फेरफार करी थके दर्घिमा पदाथ जेवो होय तेवोज देखाय, तेम जगत्नो जे स्वभाव छ तेवोज स्पष्ट रीते जैनशासनमा कहेलो हे ऐट्ठुन बापणा जाधीन हे के आपण द्रव्यादिकने आश्री भेमा फेरफार करी याकिय आ वधु धर्म देसाढवाना माटे हे पण पस्टाववाना भाट नयीज ।

जेतु न मानीजे तो उगलिया ने जानपरेनो आचार पण धर्म माननो पडे तमे जाणो छो के पहेला सापु धर्म माटे चार झतो हता, पाछल्याथी पाच चारना घरते अब्जलनी के खीविहारनी छूट दती जेम तो नदिज पण आवश्यकता न इती, व यु जेतु के केटलाजेक दमियो नत नियमोमायी द्युम्दुम्दुल फरिने बारीओ गोधी काढवा लाग्या हता, ते घरते धर्मनी पवित्र ताने निष्कलकिनी रासना माटे चारनो खुलाएो स्पष्ट करवामा आव्यो हतो, तेथी महावीर महाराजाजे धर्ममा फेरफार कयो जेम मानवानु नयी, लोकोनी मनोहृति वगदवायी शब्दच्छळ नी पापने पोपवा लाग्या ते माटज चारना पाच महावतोमा पट्टो कयो ने धर्ममा मुधारो कयो वृद्धेवाय, पण फेरफार नातरानी छूट—

शरा—हे वसते जियो अने पुर्ष्यो ब्रह्मचर्य न पाळी शकवायी चारना पाच कयी, तेम जोजे पण रिजो महान्यर्य पाळी शकती नयी तेमने पण नातरानी जातराबे चद्वानी छूट आपो ।

समाधान— भगवाने करेला मुधारामा आध्य रोकवानो मुद्दो ! अने तेना पोपक्ज मुधारो कयो हवो, अने यु पण

लोहले जेहुन मूळ उद्देश्यालन न थाव जेबो सुधारो कोजी काळे
र्हई धाकवानो नयीब ब्रह्मचर्य पालननो उद्देश्य होवापी धाळ-ठग्गनो नियेष
करवो जे सुधारो ते, ज्यारे पुनर्लम्ब बे ब्रह्मचर्यभी किनपीत होवायी ते सुधारे
नयी लोकाने तुडुदि यह जेथी मुन्हो पोसाय नहि ते माटे भगवाने गुहो
न यगा देबो जे आशुप्रयी सुधारो कर्मो हतो बे रीतनु परिवर्तन
जे धमनो के वायदानो सुधारे थयो गगाय, परंतु तेथी जेस नयी
उखु के मृद्गधम अथगा कायदो बदलायी गयो, प्रथम तीर्थकर धगत मतोने
लगता नियम हस्तामा आन्यो बहा तेमाथी सुधारो झाडी नासवामा आव्यो,
मणी वडी सुधारो दाखल थया आनो अर्थ जे उ के द्रव्य-क्षेत्र काल-भाव
प्रमाणे फेरफार ता करवामा जावेन, पर ते फेरफार परिवर्तन नयी,
सुधारोन उ, अने ते मूळ ऐयने कायम राखीनेज अमलमा जाव जे आदर्श-
नी जात्मान जबर उनेजे आपग जापणा आत्मामा उतारवा मागिने छिने,
तेज जादह आपणा देवोमाय होबो जोअिने आगे ब्रह्मचर्यनो जादहा
राखी देना दट्टीकरण माट मदिरे जाइने छिए मदिरमा चुही गयेला
देना पोतज वेरीने साथे राखी हायमा हथियार लइने जमा हाय तो जे देव
पासे तमे रमारा आदहानो केवी रीते भेड वेसाढा शका त विचारो । जेगा
यिहुरु तेजा शिष्य, अने जेगा देव तवा धमगुद्धओ हाय, अने तेमना उप
देह पर तेवोन !

त विकर जे आचरे तज उपदेश अने धर्म पर तज, गुरु अन धमना
आधार दव ऊपर देव त्यागा, तेत्राना धमपत्त्वारको ल्यागी, जने तेजोना
पगल चलना भिन्नज्ञाना ता त्यागनाज्ञ आदर्शजाङ्गा, जेठल तुइना वर्तन
मुन्न उपदेश पर त्यागनोन रागा प्रनाप के उत्त्रपति यिगाजानो पाठ भजन
नारा तेवा पुण्येगाँडी राना होता न री, उत्रा नेत्र तो पूनाश्याहा पारणा
विगो तमनोन राले, पर युगावियन रह स्टन ऊपर न ग आरदा, भरे
जैना तो पोताना देवोनो बदारनो जासार पर चातराग तेवो झरी न शृङ्गा,

सेपी ऐ सक्ष हे के तेओ देवता ऐ शु चीज हे ते समजी पण नपी यक्का, तीर्थिकरोनो आकार मनुष्यनां चेयनु चिन्ह हेतु जोभिये, देवोमां गुणो अनुरूप फरवा तेवा होया जोभिये, तीज तेमना गिर्धो ऐ मार्गे जाय अने भागने धर्म गणी शके अर्थात् धर्म जने धर्मनी सब प्रदृशिओनो आधार देवोज हे, माटे जष्ठकोमा पहेतु अष्टफ महादेवनु कल्यु गुणो वै प्रकारना होय हे, साधक दशाना अने सिद्ध दशाना नेपोछियनो वैश भजपनार तेनी गटी त्रियाओनु अनुरूप फरतो नथी नेपोछियन राजद्वारी जीवनमा बहार पह्यो स्थार तने साधक दशानी प्राप्ति यडी, तेम तीर्थ कर पण साधु थया त्यारे साधक दशामा प्रवस्या इता, ज्यारे देवत्व सिद्ध ययु स्थारे तेपा गुणो बतावया जोभिये जे सिद्धपणु सुसारने उपकारक देव भाटे तैन शास्त्रोए जेमनाज देवत्वना वराण कर्ता हे द्वारो लाखोनु पाणी करी लेवोरेठी अने जोनारो थडे हवे सिद्ध ययु के चनस्थनिमा तीव ते, पण भगवान् पावे तेतु कइ न होवा छता तेमा तेवोए जीव कहा उ पाणीमा निमित्त अने उपादान बने काळ वायुज हे जे वात पारीसो वद पहेला भगवाने जाहेर करी हती छ तीवनिकायने मानवी अनोज अर्य तिनेवर देवने मानवा जिनेवरने माननारनी पहेली परज अ हे के “तेजाने आखी तिदगी मुधी अनुभवेतु जोवा मादेर जावयानी जहर नपी, अमारे तो नात्मकल्याणनी दिशाने जातु हे ते दिशा अमने जैन मदिरोमाज भठी घक्क हे ” आम स्पष्ट ऊहीने जैन मदिरोमा जवानु चाढून राख्यु, त्यारे अैन शावनना उगिनान रोप ययो अने बोलवानु चाढु करी दीयु क “हस्तिना लाड्यमानाऽपि न गच्छेज्जैनमदिरम् ” हवे दिचारो के तेमने मदिर मूर्ति ता रापवा हे पण तिन मदिरे जता अटपा ववा हे, पण अम तो कोई नदि कइ के वायदिओ राववी अन गमे तम करीने रावदिओ लह आववी अे घम उ माटेज तिन मदिरे भक्तोनी भीड वधवा लागी हरिराखी करनोरे पेला करता सारो माल रागवा व्येतिए, अम करेवानु न होय के “ सामी दुकाने माल लेवा न जाओ ”

अमैनोने ही पापी करवी हती हो आत्मकस्याकाना उपनो परु देखा
करता हुआ, पर अहि दमनकी इरामतोरी हे आत्मकस्याकानी लाम्हीस्य
मात्र नथी अने पराक्ष्मी ठोड़ी तथी, अंशाकोने लोकों तुकाने रिके
ठिंगज करतु दहे हे "जैन महिरे न बहु" हे केहवापीय ठोड़ो न अटका
त्यारे भय वराप्यो के "इन्निना सद्गुर्यमानोऽपि" जेमना देव शोटा,
नूरिंग्यो राई रेमने ते सहा डरापका भरतक प्रकार फरोज पटे
रेमने पूछिभे के येत्या महिरलो के दूरमहिरनो निरेप दोष गमाव,
पा जैनमहिरमां तु दीदु के लेपी निरेप कहे थो ? त्वारे रेभो
चूप थाय हे ! करवा गया जिनमूर्ठिकी नक्षत्र पर यथी उस्ती
जरार ! असुखमां शुद्धपकाच हठो तेवी नड़ल करतां नदनो नहि, एग
अधार बताउ, तीतिशाष्ट तो ४१८ के, ब्रह्मचर पाल्यु हे रेने अपया
सन्तान याज्ञवाकाशने जीनी प्रतिमा निहाड़ती हराम हे भारीते तो
सन्तानी के याद्यनारी मोटे खी प्रतिमाना दर्हन इराम ठर उ !

प्रश्न — जैनधार्म आत्म परिम अने बुद्धिकुङ्कुम हे तो ऐना अनु
सामिनो मुहीभर ऐम !

— र — रेमे लड़ाभीर्वा जवा तथी, पर देश बाट छारानोने
बनाना जो, अेवी स्पष्ट थाय हे के महान् कामाने सनक्षणारा पहु थोड़ा
जने गनक्षते अमरमां नूर्मारा तो तेपीय भणि भोला जेनोनु घेय
रामरु यहनु उ, परेव त्यागनु अन यहने मगा उहाँरानु होव हो
उ ! रेन हवी, पर अहि तो पाम उहाँरा, जेटके अेवां उप्र बन्धाण्ना
चालद्वे य इाव होयो ! यस्जी मुन्नव बरपानी 'मृद होव तो तुलनारे पर्ये
यवापी उना भडान तरक छुर्मारार लासा ! लानद्या स्याभा
विक तथी, पर भडान दया हे, माडे भडान जगरु भडान तरफ ऐही
सके दुके हे पक्ष्मा मगा गृह्णाट मोड़ानु ठोड़ु परापरा मूळवारी होय हे,
एग ज धन आत्म-कहसानो रहता माने मनाए हे ते छिंडात्मा गुरुहाट
मूळी इकेव नहि भल त, यदूर त्यागन न बनुरहेतु होव तो याद्यन्य
त्याग करता तु अने पूर्ण त्यागनु घ्यय राखतु जेट

जपानानुसार धर्मपा पलटो शक्य नथी—

जपानाने अनुसार धर्मचरण बदलाया करे छे अम मानिए तो १७
 कोडा० सागरोपम मुधी धर्मनो विच्छिद मानीज न शकाय, समयानुसार
 वर्तवु ऐज जो धम होय तो धर्मनो विच्छेद ययो ते बखतनु पण धर्मसम्ब
 मनाय। कारण के ते बखते पण मनुष्यो बदलायेला समय प्रमाणे तो वर्तवान्न
 हता। जो धम वस्तुहमेज होय ता तेमां मूकाती दृठाटो हीरिम
 होय धर्मनैज जो खस्त भानता हो तो तेमा दृठ-छाट के हेचग्निने
 स्थान नथी, दृठछाटनु स्थान लेवा-देवानी चीजमाज दरभी शक, वस्तुहमे
 होय तेमां नहि आ जगतमा बहन बेटीनी दृठ-छाट चाले, पण माताब
 हुनीं दृठाट चालती नथी बहन-पेटी मागवा लानो तमारे बारणे आवे
 पण मावहुनी मागणी करे तो ? लाठीज उठ्डे के बीचु कह ? नगतना
 क्याथी ? जे लोगो दृठछाटना बहाने जागाथी जही रीते नर्ते छे तमो
 धमचाक्ष छे ! तेमन सत्य सहनु नथी, माटे तीर्थकरनी जाहान प्रमाण
 तीर्थकर पण खोटो जानीने कोइ खोटो विचार शास्त्रमा प्रतीविवाना नथी
 कारण आ शास्त्रन ऐ तीर्थकरोना पण चापनु नथी, हिंसाने धम तरीके
 चलावगानी कोई तीर्थकरनी पण ताकाद नथी ऐ लाय याद राखजो ! तीर्थ-
 कर धम नतावे, पण सर्वावता नथी जेथी बध अने जेथी निजरा तेज
 कारणोने तार्थकरे बहान्या छे धर्मनी आधी स्थिति सनातन छे,
 मात्र तीर्थकरो स्थिति दर्शावानु काय करे छे स्या धर्मशा पहटो
 होय ऐ समय नथी तेमा दृठछाट होय ऐ असुभाव्य छ छ जीवनि-
 कायने मानवान जोभिअ पोतानु खोनु सबासो रपिया तालो जने
 लेगानु चार जाने तोलो जेगा बगारी तेजी आपणी स्थिति थअी छ पृथिव्य-
 काय जीगो बाढ़ चरटी मीट लभिअ के पाणी बाढ़ लाइजे अमा देट्ला
 जीगोनो सहार वाय छे ! जस्त्यासनो पण सहारनी किमत केटली मानी छे !

जीवने सदाचरा पूर्खीज, यहु नहि आ चार आगँड़ जीभन मज्जा करावना भी—मर्जु—स्त्राह—सादु—तीक्षु ५०० योभिमें, भेना छाड़ पूरा करता केलातो सदार शब्द हे अ जायनु नपी बधा जीर समाज कानवा हो वो मरचानु जीवानास्रोनो निक्ष बल्ने पाउ करो थरा ।

प्रश्ना—जा वजु एम हे तो जावशा माटे भासमात कर्तो वट

समावान—तमारे भनएन कर्तु ओभिमें, तमे धर्ममा पेरवार करी नहि उझो, धर्म उदाना माटे एह स्वस्माक्षो हे भने गैरेनो, जानोनी जेम अरिचड़ हे जाखा उत्तर याइकी तमारी पोतानी छाँ अंगा समारा समवर्णी खातर जागड़नाइ आनी धर्की नपी तमारी अगरउ सगराईने सभाल्दी नपी तेम धर्म पा भासमवर दर जीवोने तमार दाट-मात शाक लानी थाके ? जोताना एक देणा रातर दीजाना इजार्जु तुक्कान फरनारेने केवा गयो ? थो फ्झो तमे दोजाना खाँक सहेय खातर दीजा अर्हन्त्य जायोना खहार करनारेने एन फेंगे गवतान मानो ? मनुष्मन मरतो तमे एह लाल उतानाना येती आ एक कानी प्रिदी भेवेती गये त एक छेयानु कहो, तो त तु ने ! पहुँ भन उ एह हीय के नरक्को नानकहो कीड़ी ज्ञने जेता प्रिदीने पत्ते करे हे मदाक्कोनी जेती मिथि ठ ठे तमे समो के न समो त तो पाल्यात वट्ठो इती उपर्याके परीमहोय शया गाँड़ सदन करो तो चाले भद्रता आदानीय दृठ, पण शान दैन चारिप्र वयात्वानी उरते झायाउन्मा जापेनी ददा मानी उके पञ्च तेवी उमे आस राती न कही युके तमनेय प्राप्त-समारभना दोधो समजावनार कर तमेय आचो छाडी त्वारे उमारी भुदिने गु एटेनु । तमाद आ परन विचारे के कर्मपत्रानु न्यायालयमा उमारी ती दशा पराली डे । ग रो कर्पा छतो अतय न्यायामा दिग्गिये ददानाली खबा जाऊ थाय, पा उन्हो तरी उपरपी जब्ने गाडो दो वा गुदा वे नो ग ग पञ्च भेनी यतानी माटे कर्तु उ के “ उमारी जीवा रभिनि तु ” पाप करी युजी

थनारने वर्म—पश्चरपी सजा वधु पञ्चाचाप करो तो सजा ओछी, पण चैन
छो माटे नदि पर्मेना उदये गुन्हो करे अने सम्बत्स्वना अने मापी माल
त्यागमा तन्मय थवा जिनपूजा छे—

पुण्यथी जिन पूजा करतां दोष नहिँ आगे, पाणीथी^१ भगवान्नने पखाळ
करता देव नदि, कारण परिणाम भक्तिनो ते भगवान्नना कहेवायी आपने
पूजा नयी करता भेट्ठे अ प्रभु नयी रहेतो के “अपूर्काय अने बनस्पति
प्रकारी विराधनाना बगे भगवाने लक्ष फेम न आप्यु^२ हु आला
जगते द्या पाठ्यी पण मारा अगे द्यानु नाम न लेबु जेवो दीप्तिकरोतो
अभिशाय द्वो !” भगवान्ननी पूजा तेमना त्यागना अगे छे, अने
तेमनो त्याग आपनां न सनठमा थसे छे, माटे अ त्याग पण अपनावी
देवानो होवायी ते न लह शकिए त्यासुधी ऐसा तन्मय थवा माटे
करवानी छे । चौद राजलोकमा अभय पट्ठ वगदावरा भक्ति—पूजा कर
दानो छे, जे वसुनी किमत वघारे तेनी दलाली पण वधु अहिँ त्यागना
सक्कारा आपणा आज्ञामा जमाववा त्यागनी भक्ति करवा भगवान्ननी भक्ति
करवानी छे साथुओ वगर दलाली (पूजा) अ बेपार करनापा छे, सापु
चेटली शकि थावकोपै भैङ्गी नयी, जेयी तेओ पूजाहरी दलाली आपी
त्यागनो वपार करता थाम छे ।

धर्मनि त्या धाढ होयज—

दमे चारे सम्पूर्ण मार्ग पामराना हो त्यारे कर्मनु धाढ जोर करदोज अह
भग ० १३ सामग्रेयम सर्वार्थिदमा अन ६३ लाख पूर्वे एहस्यग्नामो
रहदा त्या सुधीं अतराय नख्यो नदि, पण दीद्या लीधी तेज दिशयी १२
माह सुधीं अतराये अस्त्र जार कर्यु माटे धर्मनि त्या धाढ होय एक माणस
पाए लेणु छे, ते घर उपाही परदेया पालो न आवे जेवो धाल्यो जबानो
छे, तो ते वस्ते यायदा नमे ! त्या तो कहो छो हु १०० न अपाय तो

६० जाए, परं पापी दे ! तेम धर्मनि जयु छे देवठोक अने मोहे-
त्या पापनु चालवानु नयी, माटे पाप पोतानु लेणु बसुल करे से माने छे के-
मार लेणु देनु पताकी छेया दे. पापी तो यदा अहिंज, खेटके तेने तो हु
पहोची बलीश, उतावळ तो फक्त धर्मनिज अगे महावीर भगवान् पण
७० वर्षे घेर रखा त्या सुधी गोवाविद्याने वक न मळी के बे दीक्षा छीधी
तेब दिक्षे मळी. घम करवा जाता विमो देरान करवा आवये अने पाप
करवा जयो तो कोई नहि आवे “ पापी मास्त्र बोपम करे छे, हमर्हां हु
चन्हे आवीश तो मार पोपम अटकी जये ” तेम धारी पापमृतिमा विमो
आडे नयी आउता तपेय उपही जनार पासेयी तडाकावध उथएनी करो छो,
तेम रोग, शोक के आवि, उपावि आदि विमो पण देखे ते के जीव धर्म करये
तो ते देवठोके जये, अने त्या जापगायी ज्वाये नहि न्हानो चिंह वाढा
थीय दट. त शींगदायी तेनो प्राण काढी नासे चिंह जवरो थाव तो तेने
पाच पाढाय नपहोचे, तेम पहेला घम करेलो होय तो पापकर्मोने तोही साफ
करे पण नवो घम न ताढे, शहबातमा घम करवा माडे के उरतज विम आवे,
माटे धर्मनु कार्य काखु हाय तेन अु गाठ वाल्वी के लेपदार मने बधाय
पकडेहे, रोग-धाक, माया—मोह बधाय आढा आवगे, बधा लेणदाराने
पहोची बछानी भेषद करी उठांतरी करतानो विचार करलो, कारण महा
पुरुषोने पण कस्तागकारी कायों धजा विमोवाल्य होय छे, तो पर्ही सामाय
मनुप्पनु लो कहेबु यु ? पण जेने सत्याखल्य खोलु नयी, मनस्ती धतबु छे
ते महारम परिग्रहमा जालाया बगर न रहे लाल्वली बजारमा तीपान करे
तो पर्यवसान बधनमा पडवानु आवे, तेम अभद्रालु, अनाचारी पण स्वच्छदे
चर्ते तो नकनिगोदमां लाय

देव, गुरु अने धर्म—

देवनी सुति देवना—स्वस्पने चिद करे छे, माटेज मग
“ दुदाय बोद्धिमाण, वी स्तवाय हे जने ”

राग—दैपो दूर करो ” जेम शोलाव छे ज्यारे अजैनो प्रभातिया गावा
 “ उठोने मुरारि तमारा यिना गोरीगोना चीर कोग चोरहोरे, गोरसनी
 मटकी कोण फोडहोरे ! ” अम अचान याअिजोज थोके हे जेम नथी,
 धुरधर विद्वान् नैयायिका दा—

नृत्नजलधररुज्ये गोपरपूर्णीदुकूलचौराय ।

वस्मै इष्णाय नम उठारमहीरुदस्य शीजाय ॥ १ ॥

चद्रमान माये रामनार, यामुकीने मोड बायनार तथा लीलाधी नृत्य कर-
 यामा निपुण महादेवने नमस्कार हो तेओजे देयोनु स्वस्य आतु होवाधी
 जेबी स्तुति करी दुमियाअ देपता मानवामाँ जेनोनु जनुकरण क्युँ छे, पाँ
 पाँ नहि तेओजे जन्म जाप्यो आदिस्ये मान्यो तत्पत्तु शान न होवाधी
 चर्ता—इर्ता मानी घठा जेमने तो परमेश्वरना नामे गुरुनी पेडीजो चलाकबी
 छे तेवानो दबु स्वरूप क्याही पिठाने अने परमेश्वरपणाने पामे ? जेमना
 दहनोधी विषयकपाय के आरभ परिप्रह त्यामानी युदि नज थाय
 पछी तेबो जिनेश्वरदेवने मानो शी रीते ? देवने तेओजे तेमना गाम
 हुडी छखारा रास्ता छ, “अमने आट्ठु आपो भम तमने परमवमाँ भेळवी
 आपिजे ” अनो जर्थ ए के परमेश्वर तमने आपदे जेम तमना नामे
 शिथन, वोरा, मुरिलम, खोजा जादिना पर्मगुरुजो द्वाके रारे छे बीजा
 महोनु स्वरूप तो भावि जे लाच है गणाय तु छ ज्यां जातु होय त्या
 देवने रागीन मानवा पढे तेजोने व्यगद्वार दूट के लाच—सद्यवतधी चला-
 पग होय, तेजो त्यागी देवने मनाववा के तेओनु त्यागमय स्वस्य रहु
 करवा तैयार नथी देवने त्यागी मनाय तोज, गुरु त्यागी जने धर्मनो
 त्याग मुख्य मानवो पढे जे तने पालवे के जने मोक्ष—आत्मशांति जोहाइ
 थीकृष्णे बेटली बार उग छोड्यो ? राधारीथी क्यारे छूटा रखा ! महादेव
 पार्वतीधी र्यारे जलम रखा ? कहो के जा बधाज बनिसाने बछायाना
 बछम्याज रखा ते अने तेजोना भक्तो क्वदे छे ईश्वर—लीला गोकुङ्ना
 बालकना नामे छीलाना पढदा पाठ्य आखा नगत्ने छूटार-

यामा आन्तु धर्म हो 'अहिंसामयज, अने 'वीतप्रमे चर्दन् च
कारण बीजा देवो "हु" ना खुडायानी पचातभा नपी उत्तरा, तो अद्वैत की
क्यायी उत्तरे ! तेवाओ बीतु जोड़ेव द्वा । त्वा "हु, हु" ना बातज नपी
तो तेना छेद (परमात्मस्वरूप) नी बातज क्यायी ? केवल खटाती दैदृष्टिक
रमतब "हु" सञ्चिदानन्द अेवो "हु" (परमामा) बदावी भेद छाडा चम्पे
उपदेश ! हुना खुडाता माटेन प्रथम सूक्ष्मा प्रयत्न बातज "प्रतिष्ठ ए ग्रन्थ
उवाइए" परमान्तु बीजाओ माने हो के भनना आधीन मात्रन, ल्लह
जैनो भक्तिना जावीन भगवानसंगु माने अटके भक्तिनी महाप्रदाता "अद्वैत
परिदत्तात्र" मां नम शब्द भक्तिगूचक प्रथम मूरुचो, ज्ञाने दैदृष्टिक
"शिग्राप नम विष्णु नम" मूरुचु जैन ऐय, वैष्णव धर्मे चैत्यकला
नामे, अन आपो व्यक्तीनी महत्ता नपी, महावीर धर्मे नपी इटक ए
गुणगूडा शोकापी जैन धर्म वीतरागशासन कहिए छीए, चिन्हितु चुक
पायो "तमेव सन्च" द्वे विनवनने "तद्वति" केहु अने कल्प
गीने जात्यरक्षक मानवी अज भक्तिनु प्रथम पगोष्टु नक्षत्र दैदृष्टि
वीतराग कहेयाना राघो नपी आवहो वीतरागम्भु औं इ के
साँह छे भाँडे अजैलो पज दोताना देकने शितप्रह इटक चौं
आववा लाग्यो अटके तेना बचाव माठ "क्षेत्र" ए रहना
रास्ता देली कोरनो बच्यो नजर न पढे न" रास्ता औं चौं
असम्य ते अेम तो तेमना भस्तोय कबूले छे पन भैं "हु" दैदृष्टि दृढ़ा
सीलामा भाच, चोरी बदावी, राग के लमा देन अस्त्रामु ! हु ज्ञान
बनावाने निश्चले न जागा देवा भाटे पहरा "क्षेत्र" ए रास्ता
चालक बेटके गमे तेवा कायाने ढाकरा भेदह चु वै वै तम दरे ए
बायो नहि । उपरथी कहे "तमाहा देमने मणी नक्ष दैंदु न चे"
के गिलेरे चदाल्ये न याय प्रसन्न" हु इटक लुह याद " क्षेत्र
कालक अपे भाजा देवने कानो भद्र राम भायु देवने
भेदु केहनारा न ते भाललो रठो गुहनी अ

खरेदी प्रगट करता करता मोक्ष भेदभानो हे प्रविसा हे पण ते कह पत्थर
नयी ते आपणे मोक्ष माटे आदर्शस्प जहर हे प्रतिमा हे व्रात्यविक ते
आपणी प्रतिमा हे, अेटले आपणे जेवा बनु ते ते स्वल्पनो नक्षी हे स्वरे
चुम्हे स्वतंत्र येलानी सहाय लेवी पूजाती धिनमूर्ति जन्मथी मरण मुधीना
अवस्थावाळी हे तेचो पदेला आपणा जेवा हीवा ऊवा पराक्रम फोर्ती
बीतराग बन्या माटेज इन्द्रादिक भाग्यवानो तो तेमने च्यवनपीज स्वरे हे,
गर्मावस्थमाज तेमने पूजवा आवता

त्यागी बीतरागने सुरुटादे शा माटे ॥—

आ तो मूर्ति हे, पण साक्षात् भगवान केगलीणे विचरता त्यारे देवताओ
चत्र धरता, चामर वीक्षता अने पोते विंशाउन ऊपर पण विराजताने ।
प्रतिमा अने पत्थर सरखा ?

प्रतिमा अने पत्थर सरखा केहनार माता अने खी नारी जाति छता
एरखा माने हे सुरुट अने कळश वे सोनाना छता राजाना माये कळश
के सुरुट । पुरुषने धोतिया ना बदले खुदडी के कळाना बदले बलोमु भेठ
अपाय तो परिणाम शु । द्रव्य पत्थर अने मूर्ति जड छता आकार भेदे
पदार्थो जुदा अने तेनी अरार पण आत्मा ऊपर खुदीज
मूर्तिपरत्वे ब्रणेनुय झर—

आय समाजनी सस्ती बदधी मुस्तिमना अने अडधी हिंदुनी, कारण
मूर्ति न माने तोय देवता मानेज हिंदुजो मूर्तिपूजा अने वर्णाधम धर्म माने
मूर्तिने मुखलमानो हयियारथी (उमारपाळना पुन अज्यपाल तोडवा लाग्यो
तेम) अने आय समाज के स्या । वारी तथा तेरा (तेर सापुओअे चालू
कोरलो) पथी वाग्वाणथी मूर्ति रिप्यक पूज्य भावनाने तोडे, अने भारतीय
सस्ती (विचार पार अने आचार परपरा) ने बगाडे मूर्ति परत्वे झेर अे

प्रगेतुय सरए मेर क्षायेसमानीअ जाहेर भाषण करता हुमाई, राम-
नादबी विगेनी मूर्ति क्षर टोका करी के “ जे मूर्ति क्षर खड़ापलो हर
उदर लागी आय त गृहि तमाइ शुभ करे ” ? शनारनीओमे ऐ भाषण
सांभवी थीजे दिवसे गधेडाना पूछे दयानन्दनी छर्ण बाधी, अनेदोड, झाडर
प्रगृहणाथी ते कूदु अने ऊनी लाता मालु भेतु उत्तरण देलो आय
सनारी उत्तरो हतो त्यां पह नीच्चु तेनी अनमान जने लागी हुखामानी
परियाद यह

फोटो—आम कराय ।

एनारनी—ठेने पूछा के पेटो मान हे कैम ? न भानता छाँ
लागी हुखाय तो पड़ी अमे तो कृष्ण के रामनी मूर्तिने लालात् प्रहु
मानिए ते मूर्तिनी टीका टिप्पणी लाहेरमां करता अमाई लागी न
दुखाय ।

आ तो चोर कागजाढने दडे ! परियादी तुशाव कर पत न
आगी लक्षायी कैसे निकली गयो, मूर्तिपूजकोनी लागी हुखायातु
जनुकरण करता जतो फावड आवी नहि

अजैन धर्मगुरुआ हाँके रासे दे—

नाजानोमे देवतत्व भानशामा जेनेनु अनुरुग तो कर्यु, पग “ जन्म-
दाता ” आदि स्मे देव मानी तेना बदलामां तेने देव मन्यो तत्पुरु भान
नहि पण यताहतो मानी बेठा, तयाओ परमक्षरणाने नब शामी यके
कारण ‘ अमने बाटु भासो अमे त्या मेली आवीजे ’ अट्ठे
“ हमने परमबे देव आपदे ” नु देकना नामे गुरुनी पेढीओ चाले
हे. आवी मान्यतामा देवस्तसनी साची सिलग क्याथी थाय ?
थे दर्घनीयी विषय—क्षरण के भारम परियह त्यागानी बुद्धि न ज थाय
पड़ी तेजो बिनेव्वरने मां ज शी रीते ? उद्ध कहे के “ हस्तिना ताड्य-

मारोड़पि ” तेजोवे देखन मारी राखा हे ते भेट्या माटे के लेपना
 नामे तुदी (अमने आदो एमरे दृष्ट परन्ते आपहे) छलवा याय ए
 किंधन, दोरा, मुख्लीन, सोना चिरे जैन धर्मगुणो हाँडे रासे हे
 बीजा जौन मरोनु स्वरूप तो असुं हे क मस्ति ते छांच द्ये गणाय ज्या
 आवु त्या देवने राजीज मनना पढ़ उट के लांच स्वरक्षी जेझोने
 धर्मव्यवहारनी गाढी हाँडे राष्ट्रीयी होय सेमो राजी देवने मानवा भना
 यथा के दस्तु त्यागमय स्वरूप रजू करता तैरार दोयज शाना अने देवने
 शाति के घोष जाइने तनेज थीड़भी देटी यार सग छोड्नो ते ! रापा
 जीथी क्यार दूटा रहा ! भद्राद्व पावतीधी चपारे अछग रहा ! आ
 वधाय वनिता ने बद्धम्याना बद्धम्यात रहा ते भेगाभाने तेना भरतो वहे हे के
 “ ते ता इश्वरनी त्रीडा ” गोतुडना थाळकना नामे भालाना पहाड़ा
 पाढ़क जारा जगतो द्वायारयामा आव्यु हे

धर्म हो अहिंसामया, नहि के कथी मोक्षी अने घरी छीलना
 वैन दर्दनमा जेनो जिओधरोये मो ३ मार्ग बताव्यो हे लेवाज ते तारकोनो-
 अमल पग !

ससार राठानु घेदखानु हे—

आ सधार केयो भयकर, जेमा द्वाकी मारवार्हा आनद माननार कई
 रितिमा पूऱ्यो रहे हे अने वेग केग तुमोधी वचित रहे हे, क्या जीव
 जा सधारसागरनी भूतावद्धमा फसेलोज रहे हे, जेयधी काढी बान्दूले शाष्ट्र-
 चारोये भेट्याज माटे टेप डेक्काने विस्तारथी वर्णी हे के, आपणे सधार
 स्मी भूख-गुणाना दुराने वरावर ताजिने तोज धर्मस्मी अनाज के पाणीनी
 विमत वरावर आकी शकिये कोई माणसनी बहादुरी जाष्टी होय तो ऐने
 करेतु कार्य क्यु अने ते केट्यु कठज हे ते जाणवु पढे कार्य जेट्यु
 कठण रेट्ली ते करनार्हा बहादुरी उदना विजयनी विमत काढी होय त

तुम्हना दृश्यनु करावर माप छातु जोहे तारकोनी भावना १०
 आपजा हैयामां परमनी स्थापना करनी ते, पर्मनी उच्चसता अने पल
 सरावकानी छे अने बेड़ाब घाटे वे पर्म कथा राष्ट्रपी जीरोने मुर्ज कर
 छे अे जतायना ठेरठेर साली यिचिक्षातु दयन कपातु हे भुख्यने
 , रने त साकर लेकु भीदु लगे तेम भवभीतने पर्म ते दर वे सालाइके
 उपकरा माटे नथा तेम सानदो ता पर्म अने सधार भेकनोव उफेव नहीं
 मेड्बो चक्करीना चक्कनी किमत लोडानी इशिए न भाव, तम करता सत्ताब
 स्थावना, कारण वे टाँगे तनी किमत नहीं जेवीव तेनी किमत यामा
 करताय वधु छे ते कार्ड साववानी इशिए लादातु अर्ता प्रमाव अजब ऐ
 शुने सतारवानी राज्य रधानी अने मालिको बचावानी धमितभो भेसा
 छे ने प्रमाव दस बीस मा छोडा कड़ामाय नयी, चक्कनी ने रीटनी परी
 खाव जरी छे बगतनी तमाम वस्तुजो माटे हेव छे पर्मनी पर वर्दिका
 सेवी रीते अबी जोहे घर्मा सधारना सुस्त मछवायी पर्मनी उपकरा मानठो
 - नयी, के हेपी तने शावाना पर्मापणावा उतोव यता नयी जेवी उतारमुखनी
 प्राप्ति तो बेने पर चरमाना छोडा जेवी किमतनी हे, पर्मनी लाची
 १५मत तो ते त्यारेव साने के ज्ञारे अे घमे चक्कना लाचा कार्यना माफ़ू
 शावत् सुखना पथे प्रश्नाग करावका माडे हे, लाहारुखनी प्राप्तिमा पननी
 उक्काढ़ा माननार छेवट पक्कने छोडी सुसारने कळगे हे, अने पर्म त्याग-
 वायी भगटनीमा भटके हे माडे जे मिथ्यात्ती बेदवाया हे कारण चक्कनी
 छोडानी इशिने किमत करनार कोइक दिन वधु बजनदार लोडाना कड़ाना
 लोम्मा चक्कने छोडी देसानी भयहर मूर्जता करे, तेम उतार सुपनी प्राप्तिमा
 पर्मनी सप्तवता माननार ज्या वधु सुखमुख मछतु देगाय तेने पर्म मानी
 ह्ये, अने लाचा घमेने बदाने माटे छोडी दे जे वृक्षयी छाय मछती दोन
 के जे ढाली ऊपर बेउवा फ़ज्जु होय तने । उत्तरी केवी देनार सुहाए नयी
 तमने जे पर्मनी वर्तमान सादरी भर्ती ते (पर्म) ने छोडी देनार मिथ्यात्ती
 गणाय सामायिक, पूनादिना नियमवालो पूजा करवा ऊढ़ता पराग आव्यु अने

हेना छोदामा हजार वे हजार मँड्या पण चरा, ते खलवे छाती उमर शाय
दर्दने कहो के पूजानो समय ते छोदामां बीती गयानु¹ दु ल याय के
मँड्यानो हर्ष याय ! केटलासो तो जेवा सासारिक कायों माट सयोगोने
आडे घरी कहे छे के “ माई, अमारा सयोगो जेवा हता के अमारे तेम
फरु पढ़ु ! ” ऐर, सयोगवशात् कदाच बाधप्रहृति फेरे, पण तमे पाका
अने साचा हो तो तमारा भावो हो नज फरवा जोइचे कारणवश पूजानो
द्यदम जतो करी हजारनी कमाणी कूरी पण त्यार पछीय पूजा न यायानु
दु ल थु जोइजेने ! न याय तो तमारो धर्मप्रेम काचो आपह माटे पळ-
कारमाज लालने जता करो छे, जेनी राल करो छे सयोगोनु व्हानु
पण यिन पायादार छे माणस सयोगोने बनावे छे, नहि के वे देनो गुलाम
हे सयोगो ऊपरज बधो जाधार रासवामा आवे तो माणस कह करीज घके
नहि दुनियादारीना पदायनिं जाधारेन धर्मनी किंमत गणाती होत तो
मङ्गदत्त चमवर्ती सारा गगत पूर्वभवमा वे भाई हता, बजेने एकदम
, पैराम्य यवाधी दीक्षा छीधी आहार, विहार, तप, अनशनादि साधेज
कर्या त्रङ्गदत्ते नियाणु कर्यु बीचाए न करवायी शेठने तरा पुत्र यथो जा
बेमां भाग्यशाळी कोण ! पुण्य कोने वडु फड़ु ! शेठनी सत्ता परना चार
स्त्रो, चर्कीनी छ सडमा ससारैभव जने उचामा आटला महान् अत
ए कारण एक मात्र नियाणु ए बेमां ऊनु कोण ! “ धर्मनी सफलतानी
दृष्टिए शेठनो पुत्र हार दर्जे वडु भाग्यशाळी ” ए त्योरेन गळे उत्तरे
के पुण्य-पापनो आपणने विचार होय अने चर्कीपणाने घास जेटडु दुच्छ
गगता होइए नियाणु बाशाविस्त द्योह तेथी तपनु फळ मर्यादित यह
जाय छे, ते पण सासारिक सुप वैभगो अने उपभोगो पुरुज, के जगा
सेमनयी पुण्यनी पूजी चवाई जाय छे पाप पुण्य एकत्र याय छे नियाणा
वाळो तप के सुयम धर्म नवी, माटे चर्कीनी किंमत ओछी सासारिक वैभ
वनी दृष्टिए चकी चडे, ज्यारे आत्मिक प्रदिनी अने पुण्यनी दृष्टिए शेठनो
पत्र भाग्यशाळी चकी जो धर्मदेव वने तो एनी वातज शी यर्ह याके ? ब्रह्म-

दर्शे मूर्खता करी ! अरे, न्वानु रान्य मक्कुय, महा मुस्केड हो चक्रीरणु वो
क्याँ आमा मूर्खता ब्र करी केहवामा “ द्राषु स्थाटी हे ” एम ईर्ध्याथी कक्षी-
पथानी स्थोटी बगोबगी तो नयी करताने ! राजा आदि भागङ्ग जे उमे
पेते पण छकी छकीने सल्लाम करो छो, तो ए प्रसदत्तनी मूरखता केम है
आजे ते मूरखता नभी बगाती भूतोनो नाच मदप्रयोग करवामा न
आये त्यां मुर्खीज प्रयोग यतान वलायन याय, तेम उत्तास्ता देमदपी
अजाई वातो करिए त्या मुर्खी मध्यदत्तनी मागवी के चक्रवर्तीरणु आप-
जने प्रहर करवा लायक भोहक जने प्रशसनीय लागचानु पण जे क्षमे
बधी चसुओने साल्लामीने धर्मना धराये चडावी घमनुन फळ
मानिए के तेनी तरहब परीका यह जवानी के आ बधु शाधी अने क्या
मुर्खी तथा केवु हे ! एट्ले पेला भूतोना माफळ धर्मन्दोस्य महामत्रथी
तमारी भोहनिद्रा ऊर्डी ज्वानी, अने एव आक्षयक लागतो मुख्यिभास
तमने आपचित्य लागवानो, जेब चक्रवर्तीरणु तमने बोनास्य जगावानु
आ तो बधो यह पारकी बचात हवे तमारीज वात कह समजो के कोइ
स्वगनो देय तमारा ऊर्प व्रतन मागवा रह जने बोछ के—
“ भाई ! भवातर माड्ही आपगानी तो मारी शमित नया पण आ भव-
याब उमने एजा सयोगो भेळी जाणु के उमे चक्रवर्ती यानो या धर्म-
राधनना उत्तमभा उत्तम साधनवाढा बना ! ” ना उमे क्या रखो लेवा
क्षबचाओ ? कहो ने के कमनो ! आमा न तो कोइ देवता आवी आपतो
के तमन कह मठी जानु, जा तो भाव प्रवेष है, नक्की लडाइ उ आमाय
उमे पोतानी (कमने नहि पण भमने मागवानी). गीरता दाउमवा त्रैयार न
थाओ वो साचो लडाईमा (दब आयेब अने आपवा त्रैयार याय तो)
उमे दुई द्यालदर फेह्जाना हवा ! भर्माराधनना साधनोने शाना माग-
वाना हता ! पण याद रासजो के ए नक्की लडाइना ब्हाने तमारा आसा
हृदयनी परीक्षा-फिल्ड भवानी हे जे माजष कोटिष्वन्नपणानी कल्पनानेय
दूर करवा त्रैयार न होय ते कोझनी भिस्करनी साल्लाने ! शी

करी शक्तानो ? आ सचारमा जीव नद दे धर्मनो लेने स्वाद लाग्यो
होय त कदी पण सचारनी गधाती गटरमा मोडु नाखेन नहि धर्मामूलनो
स्वाद लागेलो बीजाने इच्छेन शानो ! उडवीबो मुहिं मार्गमा कटक जने
सचार नाटानु केदखानु छे जने राजबीपणु के चक्रीपणु कदी न नीकछाय
एतु किछाथी पेरायेतु केदखानु छे शश्वात्माना नाना केदरानामाथी
नीकछानी चेष्टा नहि करो तो धीमे धीमे वधु पापी देमा सप्ताहावाना,
अन छेवटे तो तेमाथी नीकछानो उपायत तमारा भगजमां नहि आवे
रोग वधे जावलेण बने छे

पठी उ कखु जे नहि यहो तमने भान आवदो त्वारे उपाय हाथहार
मवलो हशे अवया तने अमलमा गूकता जाकाह पाताळ जेक करना
पढ्ये तमाम शासिने रुठी बनामनार बारावारा जबोढु तुस्तन छे जे
त्याग माटे अनुरुद्ध दमयनी राद जोतो होय त वधु पसाय, अनुचूकना
बदले प्रतिरूपराज जोर करती होय छे राजकुमारने त्याग स्तेलो, तेथी
राजभान्मा पढेला पाठ्यी राजकुमारने मुरसेल, राजाने तो प्रजा-मन्त्री
आदि अनेक बलाओनो बद्धगाड याय तेजो भेमा चोइ के आपुप
गत जमारी जेम पापमा राच्युमाच्यु रहे, कम्कादव पोता उपर लादे
आ सचारनी मनोदशा छे, पण ते याची तो नथीन आ सियतिसाँ छ, पण
ऐही पछो गणाती हाय ते बखतेय वधु योसिरावगानी भावना बागती
नथी, चउशरण जगीकारनानु नथी सज्जु, मन कुडिभीमाज रमे छ जो
भगवार ! केहो कटोर मनोदशा, भेवाओतु उ यवानु ! मरणथी डवा बगर
पानन्दपूर्वक अने भेट्यु जेव पद्धितमरण ! मरणनो भय जीतनानो अमोघ
मार्ग दीक्षानो, के जे ऐहाला करता डुक मुदतवालो अने सरङ्ग छे जावे
घरना औंगणा जेवी मुगाढी सहङ्को छे, पेहलाना जेवो अटवीनो के द्वजड
काटा, काकरा, अ्यापद, चोरबालो मार्ग नथी मृगावतीओ अने जयतीओ
भगवानने उत्तरधा माटे वसरी आपी भेमा तो भेतु नाम प्रथम शश्वात्मी

तरीके अपन्नने पायु, अवै जेनना भे पुन्यकामी परमायाभो ट्रै-
ट्रै गवाओ थे देहमा घेर बयोर अनाव आनारनाय लकड़कार
बोलता होय त्वा मयकर दुष्कर दावा राइन, तेव जा बहारेमी बैनी
गवाकेची कीर्ति ऊरसी सड़ धाव हे के रहने काटे शुद्ध लकड़गाप
दोवा कछता, तेपी वर्णि आनानु काम पु बहस्तु बड़ाइ अस्त्रा
बस्ति अदामा पदा नुकोवाना हवा बाजी खी औ द दक्षिण अ-
जेसो छु भान् दाय रहन हे । छठो अ कासी विज इडी छह
गजाभी ते । यसु पट बेटल रिमत योग्र जावे तो दरदर मुद्र रहने
हे, जन स्तोको पश उत्कासा वैवार उभाव ए भाय शुभीकृत ल्ल
दुनो त्वा उचा महलोवाली भवति नगरीमो पहोच्या शुभ्यो र त
कस्ता भाँडे ह यनी परी ताखना अ । अवतिशुभ्यानी बन्दकाल
(पांडा-गांडाना तमेलो) ऊरसा कठे हे आवे के तेवी लकड़ ।
लीला-हेर छ । प्रावार, पांगी, बंद्र, पांप, जोपादिला इहर ए
ज्यामिये तो ऊरसा तकीक रह जैसी कथी वापरिय तजर छुप्प ते
नयी नीकछता, त फी देहा तेवी वियामो तु श्यो । इह दुर्दु
विय नजर आगाड राजी बाजी अनुकूला रिकौ ए दैहर रहे
विनूरसा विचार करो । त्वारे ये उठीय सभ्य न रहे है छहर अह
मुर्मु थे उनी वगाना भे बांगी वगोवणा इह इ बुज्जन बुर्जी
महारावाना व शनी जहर विपार —

“ हे गोवम ! आ वाचमा आरामा अने अस्त्र (क्षण)
मान यगा वेकाम्लारी (महामिलमो क्षणम्), दुर्दुमो हे, ” “ ए
आगुपणाना तु पद्यु हे ” कहनारा रिकौद्याह-उत्र न्हो ते रहन
या माझ तेक्को जा भाँगी ब्रयाम एर ल्ल, रेहे ते ये रहन
पामहे, मोहो थये त पत्राहे । त्वा व तितर कल्प
दुर्म ते, उत्तरण्यु ठकाणु नयी, शुद्ध दरम्भ

स्वाध्याय यहै दाढ़तो नयी परीछदोने सहन करवानी हाम नयी, उप-
सांगोने इसते मोडे वधावी लेवानी हिमत नयी, प्रमाद अने विराघनायी
भोखु अत्याख्यु चाषुपणु छे, आवा फसोदा सयोग वस्त्रे चाषुपणु लेवा
करतां परम तारकु प्यारे चासात् विचरता इशे त्यारेज चारित्र प्रहृण करी
आत्म-कल्याण करीयु ” आवा विचारवालाओ माडे आ भर्दास
गजीनी बेक गाया बस हे—

लद्दिक्षिय च बोहिं अकरेतो अणागय पतिथितो ।

अब दाद बोहिं लन्मिथि कयरेण मुक्तेण ॥ ४ ॥

हापमानु नारी दर्हने हाथ लाया करी मेलवां माटे आकाशमा दाचड़ी
भरणा बो केतु विचित्र वर्तन ! सारी वार जे हे के प्रमाद रहिव चारित्र
मेलवानींनी साची इच्छा होय तो अत्यारथीज उथम लई प्रथन करवा छानी
जबु जोइबे नहि तो मोख ए कह ऐबी रसे पदी चीज नयी के सहजमा हाथे
आवी जाय ! लखपती यतु होय ता थोड़ीयोड़ी रकम भेगी करवी पदे,,
एकदम न यावाय तेम बहिं पण अत्यारथीज चारित्र पालननो अभ्यास करवो
जोइजे कोई पण कियात्मक आचरण कर्या यगर क्षीपेसीधु तेतु चारित्र मेल-
वानी यातो करवी बो बेबढ वाणी-विलाप हे बेतु परिणाम हवामा
शाचका भरवा जेतु हे पासे जेक पाई नहि अने यातो करे आखो यज्ञीर
सरीदवानी, “ हापमा नहि कोडी अने ऊभी बजारे दोडी ” दुनियामा
माल गमे केठ्ठो होय तथी तमारे शु । तमारी पासे पैषा होवे तो कहक मढ़पे
नहि ता “ बोई जईने दरस्तो मारा छाल ” जेबुन यवानु हे तीर्थकरना
समयमा आध्यात्मिकवादनो आखो बजार जनेक उत्तमोचम पदार्थोयी भरपूर
होवानो, गणपत, कच्छी वधाय भोजद, तेथी तनाद शु बक्कवानु । पाडीयी
फोडपती छतां जापणे शु कामनो । ते यथते बजारो अनेक मालयी भरपूर
रखा, छतां तमारी पासे पुण्यनी पूजी होती तेरी तमने “ धोया मूळा ” जेतु
बीचे मोडे बजारमायी पाछु फरवु पड़गु, भयिव्यमाय पाछु परख न पदे

रे माटे अत्यारथीज देवा ही करवा लागे जने देखा पहाड़ु चारित्र, जानीने रखारा पुण्यना पुछने समूद्र बनायो, भेम करकासांब दमाके भनिष्य उभयं अने कस्ताप धरे बलवर, एक बाव घर यानवा भेवी हे के चारित्र पाढ़ी बसते निरीचार भने प्रयादारि दोषराइने भादय तरीके राही आपगा बदमान चारित्रमना देखे यह यहे देटला अरे वधारे प्रयादमा दूर फरजा ईमेष प्रकल्पांड रेत्य, पर्यु गिरुपना भागी बाव हे, भवि चार देवन यह बाव हे,, प्रयादाचरा यवा बगर ऐत्य तप्ये, माटे जल्लोर चारित्र प्रह्य त फरजु भे प्रान्ती अद्ये मागे न्यु बनारी हे. ते तमाटमा होय तो काढी जान्नावो । ठारकोने भे बाहु बाल्कती नथी, अरे भडा भाराठ । आ छा देखा दफ्फनद रास्तरालिना इदाँउ जेयु पर्यु भगवान्ती प्रतिमा ऊरे भेदाद बलव गीढ़ी द्योढ़ी के झेदाहो द्योहेने भाइने रिचार आन्यो के “आ टीइ न देदसाय” उपाय ५३८ दिचारका चाही, अेक देवाय मन्द्यो “एला थोपदीमांधी शाय देही” कांट तम भारैस्तेव उपदेह भापया एम्या के “मूर्ठिज यानदी नहि,” पही बोडानझोड़ी जडे रही । बाहु भारे यह । फरजाना ५१ रखायी नाता परवु, शहीरना दर्द धयु जटहे शरीरनव कापी क शाही नाल्यु अे ते दृश्य नहि याव महानुभावो । आ एरो शारो तप्ये, निरायना हे. ने गत न क्लता “न्हायां जे”यु पुण्य ” मानी यने देटभी यधोरे चारित्र आरायना अ पी ल्यी यावे तप्यो याहे पद्धाना जीरी कदि नथी, राव रहानी दिला के चक्रवर्तीनी लाङ्गरी नथी, छाँ नमी जानी बहु-ओनो ल्याग करी भा भयार खडारमोधी चार लेवा लेवा-ठने छोट्या वैशर नहि याभी तो पही बकारे यहा । ते दे देवा न भारी छहे भे जाखोनु दान दी रीते करवानो । आज्ञा जेला बाधारम दायठेली यात जुदी हे, बानये छोहने कह धज भासिभे अने यागिभे पत्र लहा, अटडे भीक्ष मागेयामो आरजने जेट्ली नानप तप्ये लागावी, अटडी जेला मग्नवां चक्रवर्तीना कदिनो राह भरायेवी हाय क्यो लागे तप्ये जेम दीक्षा मिला

माटे बरानु कही थाय तम चकवर्ति न हि तने कहे पर कोग ! उत्तं
जेवा नीडर साधुओ दता जने हे तेनी कदिमा अनाया यार बेघडक
दीजा लई मिला उपर निर्वाह करतानो उपदेश आपदा रिचारो के केवा
नीडर हये ! उत्तरनी तुण्णायाकाने जेनो र्याल नहि आये बाँझी फिरि-
महर्थिजोरे जात्मानी हस्तिरे तो चकानी कदिने पर कोडी भट्टीय नपी
गती, अन जावी भास्त्रामापीज नीडरता ज ने हे पठी तो भेने उत्तरभो
कोइना दर होतो नथी जे नीडरता जेट्टे आत्मदद्याननु प्रथम खापान ?
चकवर्णी करताय जे सापारण शेठनो पुन चकारे भास्त्रायाढी हस्तो घदारथी,
खार देराता चर्नीपणा पाड़ल अनेक यातना गे गुपानेली हे, ते उहन
करता तो राधु जोक्या जेन्तु दद थाय उच्चराध्ययनमा—“ नरिंद
जाई अहमा नहणा ” वहु हे राजानो दरजा सीधी ऊचो, जेनो भान-
मर्तनो, जमन-चमन, अने सत्ता सबोरम होवा उत्तो जे आक्षयक देराती
यथी सुदरतानी पाड़ल पापनो पुन भेकठो रखानी मजीन शक्ति होवापी
केम बखणाव ! तम गरीब के निधन छा जे जाणवानी अने रागा के महा
रागापणा न महत्व आपमानी शाङ्कने कह पर्नी नथी, अनी साथे निस्तव
नथी, शाङ्कने जेती फिकर नपी, तमे धनी हशो तो तरशो अने गरीब
हशो तो द्वावी जगाना जेबो पक्षपात शाङ्कमा क्याय नपी तमे गमे देवा
हो, गमे त्या हो के “मे ते परिस्थितिमा हो, तमारे सदा काळ धर्माराधन
करता रहु जा उत्तरने जिन्दजाळ उमानी धेनाथी बचता रेहु, जेमा
पड़वा रेहशो तो पसशो, धर्माराधनथी तरशो, आ वधाय आखोनो सार हे,
अने सूर पर जेज हे जे सूने खामड़ये ते मार्याशाढी अने आचरहे ते
महाभास्त्रायाढी थये !

जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है वह खोवत है

आ बीज अर्नादिरालयो सहारमां जन्मे पछा मर, पाणी न मे, एम गोया सावा छता केम कटाक्षा नयी ? एकब काम रोज पाच सात दिवस सुधी करो तो कठाळो आव्या विना रहतो नया अरे, भाणामा रोज एकब धाक आव तो शब्दतु नयी । उहार करता धीजी चौमने किमती मार्ना नयी, रथो त मेलवयानी भावनाय नयी यती अत एकज चीन नजर आगळ होय त्या कई पषद करवी, के उची कर खोटी करे जे रिवेक कररो ऐने अवकाशन न होय, कदाच दीजा चाँडने सारी जाणी होय तो उ छागना कीदानी माझक आ बानद झोड्वा बापग दैयार नयी, माटे कटाळो नपी आवतो रसडमट्ठीनो कठाळो आव्यो होत ता उत्तु कारण विचारवा छाग्या होइ अनत शक्तिशाढ़ी बाल्ला कर्मने स्वामी वरीके स्वीकारी देना केहरा प्रमाणे नाचे छ उलार हे त्या सुधी आ आत्मसूरी इह कर्मसूरी शियाळनी गुलामी स्वीक्षे, सेवा शुश्रय करे, देना आगळ राह जेवो बनी जाय, औरे छेवटे जे नमाङ्गानो मार पण सातो होय हे, अने सातो रेहवानो एक तरफ पोतानीज मालिकिनी अदलक सपति, ज्योरे गीवी तरफ परम लोभना कारणे भीखारी जेवी हात्व, ज्ञे भे बने एकब माणसमा । आ दयानी लागणीपीन शास्त्रकारोंमे आपणी कगाल सियाहनु भान करावी सहारसागर तरवानो मार्ग बताव्यो ए लागणी भेटल मध्य द्वियानु बहान भूख्यानु मातु अने मरतानु बगृत । त भार्ग तूच छेट्ठे धैर्यमदाक्षतोनु पाठन एथी कमराजाना भूळ हरियारेना नादा थाय, एनो देपार बघ पढे छता सहारनी बासनाओ अने ढाक्को धणमरना पण एवी ते वे आत्मानी मोटी बाधनाने काह कोइ बतत भाटीमा मेलवी दे ते, सेपीज जा प्रमाद (बासना अने साल्चो) जे शास्त्राधारा ए महासापनु कार्य मान्यो ते, प्रमाद पेनो त्या आत्मविचारणा पवायन मा पण उग्रमदीउ अने ज्ञानव खा बगर न चालनु होय, कार्यमा तो दायव

प्रश्न— देवारु कह दे क “ मन उगा तो ऊरोटमें गगा ” साधु
वेश पेहरवा उता पालन न थाय तो शु मउ थगानु छे ! ज्यारे वासनाओ
उपर साचोज अगगमो थयेलो माणस घरे बेठा महाबनो पाढ़े के जात्म
कल्याण वरे तो वेशनीज द्वी उहर ।

समाधान— आसनासना सयोगो जने सामग्री आत्मा ऊपर बहु
असर करे डे, जने पणी यखत ए असरे जात्मा ऊपर विवद
मेळव्यो छे ने वस्तुने खराब जने जात्मवातक मानी ते वस्तुथी
एरला वेगळा यह जु के तेनो पढ़चायो पण आपगा ऊपर न पढ़ा पामे
तीर्थनरो माट पण गृहत्यागनु पिधान हे अने तेओए पण दीक्षा वेश लीधो तो
आपगा जेना पामरोना वातज स्था ? तेवनी महस्ता अनब छे शिर
गासनाथी उचेनित यह रावणे सीताने इरण करगानु जपहृत्य रुई, तने
पोतानी जाद्धमा फसाना जनेक गागादानाजो अने प्रयत्नो कया, पण
भगा निष्कळ गया छेन्हे रामचन्द्रनीना यप धरी सीतानी पासे गयो, स्था तो
तने अत्यत जाध्यवूर्धक अनुभव ययो के रामना ह्य जने वेशना कारण एनी
पिधयगासना समूलगी गइ, सातानीने फसाववानो रिचार पण न आव्यो

एस करत उमारणाले सुहर राजा साथे लड़का नाटे उदयन मनाने
मोक्ष्या, त्या घगा प्रशारो वजापी सेनकोए मरीने छावर्ण मा लाव्या
त्या पोतानी उला दद्या विचारी पोतावी शुतुजपनो उदार अन शुनिवा
विदास्ना पुनर्हदार न वगापी धणुदु ख यु, धणु यदन कुई, त्यारे पासे बठेला
ओए जगायु क “ तमाया जाममट अने यामट पुत्रो ए काय पूरु करस्ये ”
एम सामळी धणा हर्व ययो जीतम रेढाए अराधना यगा साधुना दशननी
उद्धट इङ्झा रावी तपास धगाय करायगा छता, कोइ साधु न मळगाया
कोइ पुरुने साधुनो वेश पेहरावी लाव्यो, तेनेज महामुनि माना तेना ते
पण लङ्घ पोताना माया ऊपर उदयन माए दद्याया, जने जाराधना करी
मरी तो मरण पाम्या चदनरूपाधी भागाय वृक्षो सुगधी थाय तेम उदय

नहीं भावभाकि जोइयेला बेशपारी साधुए प्रतिशेष वामी बीविता मुषी
साधु वेह राख्यो, अने रैपताचले अनशन करी देहत्याग कर्यो

महानुभावो ! जा बधानो प्रमाण हे ! बधाना वेष्मा एवोज छोई
महान् चमत्कार समायेला होय एमो थी नवार्द्दी बात हे ! पड
तानु अठन एनाथी याय, दरेक पाठ्य अमुक प्रकारनी भासना रहनी होय
उ तेम सिंपाहीनो येप रायनी एक निशानी हे, अने तेनु अपमान ए
राख्यनु अपमान हे, तेम साधु रेपनुय रहस्य ए हे के कमने भाषीन होवा
छाँ झर्मनी मुलाभी ए मामधने स्वीकाय नयी छीनबीने पोतानी
बनायेली बस्तु कोइ पण माणस एमने एम मागवार्थी के द्वेषाइथी
नपी आपी देतो, तेना माटे लदाइज फरवी ए दरेक लदाइमो
पोताने केट्टीक बस्त शार साकी पडे, पण एम हारनार शीबी
श्रीबी के पाचमी बस्त उहर विजयी बनगे उसारीजोनी लदाइ-
जोमा ता केट्टी बस्त केवळ हारखुञ्ज पडे हे, पण कर्म साफेनी लदाईमा
सो अस्त्र आत्मानोज विजय उ, एवी लदाइ कोण मूलां न छेडे हैं
कर्मना उमे मोर्चा माढो अने पही तुझो के एक बस्त समळ छागता
कमो केवा राक बनी जाय उ माटे दियाक्रियानी मार लाता तमार
हिंहे जगाहो ! देहकानी जेम कर्मनो अकुर पण शाढ़ी रह्या तो फरी
आखोय सकार भमवानो प्रसंग आपी जाय, क्षेत्री धर्मी मेहतत धूलमां
जाय आया दिदियोग करताय चटियासी शुभ याग चारनार मळतो नपी,
आ शुमारी देनारना नशीषमा माथे हाय दई रेवा दियाय कुम भाकी
नपी रेतु इजीय जागो, चेतो ! आत्महत्याणना माटे दैगार याबो ! ज्ञास
चाना नीर जेवा सकारनी मोहकतामा पछाया ता दियाळ करठाय वधु
फगाल बनधाना, अने आत्मास्ती हिंह गाना झरे तो तेमाज दियाळनो
नाय हे आत्मा ज्ञानये त्यारे सकारना पाया थरवत्ता मादहे ! आ
निर्वेळ देखाता आत्मामा वेट्टी महान् शक्ति समायेली ते-एन्हो केवळी-
समुद्रनात उत्तम दारसओ हे

व्याख्यान वाचस्पति जा. श्री विनयरामचंद्रसूरीश्वरजी

पदाराजना व्याख्यानमांधी.

पेसावाळा एटले अविरतिना गुलाम

“अविरति एटले विरतिमा विद्धेष करी नरके लाई जनार भोगिको ?” तै कुभायानी गरन सारे हे कुभार्यानो पति मुग पामे तो अविरत सुख पामे कुभायानो शुक्र पावता सुख तो नमाळा घणीने ज थाय, के बेने “नमालापणानी शरम न होय तमे विरति रासी हे, पण सूणामा तमाहे मारिक ता अविरति विरतिना रम्म तमारी साथे करावनारा अमे गोर पैसावाळा एटले अविरतिना गुलाम रमारा धर बगलाओ मोठा एमा पापरम, जान्स, रहोईधर जादि खण, पण एकाद न्दानु धरमदिर ते सामायिक करवा माटे जग्या नभी, अो कर रकावी के वास्तवो परमा माण थोपीय वधु, पण चरवळा कटासणा माठ एकाद वे मछ्ये मित्र उबषि जोनी तेम धार्मिकनेय जमाना बोलान्ता ह्यो ! केम ? उमकितीन धरमा सदा अविरतिना अपमान यता होय, वातनातमा ते तेने ऊगर पाइतो होय थोड भाणु अने घणी वाजगी भो एटलेज अविरतिनो आदर घणी वारी जो उपर्याँ आदिने जमाडवा होय, पोता माटे तो ते चार चीजोज थीने तो एमाथी एक रस बाहुए मूस्या के अविरतिना अपमान ! पैदलाना थावडो शु जमानु करउ ए धरमा कड नहि पीरघनार एकाद उसु भूली जाय तो भासे नहि रगोइ यगढी तोय थोड नहि तमे बहुज यनयन करो तो “ तु करिए ढाय ते यगढीय जाय, वकडाड न करसो ” एम सामल्यु पढे तमे मुखी गणाभाने ! तमारा धरमा मडिर उपाध्य, सामायिक पूजाना सावनो, धर्मना पुस्तको चौइएने ! धर्मिकोने त्यां धर्मी बाने जने त्याग पैराम्यनी बातो चाले के अविरति ढाक्का रोवा बैठे अविरतिमा रेहनु बहु स्तराय, माट विरतिना महोत्सवो धणाधणा थाय एट्यु साह जेम मादो माणस अपथ्य कदाच करे, पण थोड एने विचार आपै के नहि पचे हा ! तेम महाजातिकने पण पारनु पछ नजर थामे देखावापी ते करता हरे

ॐ भर्गम्

श्रासनप्रभावक व्याख्यानवाचस्पति आदी विनयरामचन्द्र-
सूरीभरती पाहाराज साहेबना जाहेर व्याख्यानपाठी

देशनी समय प्रजा धर्मप्रवान वने तो
दुःमननु पण हृदय पलटाइ जाय

(प्रेमामाई दौँड, अमरावती रविवार या २०१८।५५)

सद्ब्यय भने 'स्थाने चैतन्यकिया' नो सदाचार—

अनत काळ्या महापुरुषोंने अनादि काळ्यां आ सदाचारा परिप्रक्षय
करता जीवो, जे आ मनुष्यमने पास्या छे तेनो मनुष्यजीवना परमा
दशनु परमपद पामे, तेना अर्थी बने जने जात्याने परमपद काये
जोडी जात्यार योगना उपाखक बने, ती ते ग खत्तात्त्वागरने यार याम
जने परमपदने पहोची अनत मुक्तना भोग्या याय, आ इच्छायी ज
परमपदने शाभदवा, लमज्वा, ने गोगना लळन समवगा खाडे केंवा जीको
सायक होइ याढे छे ने जे लायकात माटे कया कया युजो नम्बदरा नाई
चेनु चैन कर्यु छे

"पहिलां" नामने सदाचार जास्ये याक क्यो उ पत्र जे नागर
पर नावता पहला घेक वात क्षेत्री जहरी उ के, एक्कार आ सदाचार
जाय दधका स्व इतो, परतु वारे तेनांग पास्या छे आ "याना
नीतिशाखीजोंने घेक वात वास्तार रक्षी छे क जे मनुष्य अमे ते
ते वीजाना छपर आधार यात्तवा इच्छे के पेशना पुण्ययी शीरका
इउत जोडु जहरी के त पोतानो जब आरक्षना प्रमाणी सापदरा
मागे छे के यु यात्तग मागे ते । त पोताना पुण्य प्रमाणे ले
के त्वचो नक्की झूपी आवक ग्राधवा नीक्कढे । आव
आवक । ॥१॥ गार वग वप्पो छे, स्थारयी । ॥२॥

अनीति, अप्रामाणिकता, वेर्दमानी विग्रेरे दुरुणो वध्या ते आ हिति सर्जी कोने ? आ स्थितिना मानगे पासेथी कोई नीतिनी आदा राखे ते यसाबर ते ?

“ शाद ” डाकु करता भयकर छे —

आ देशमा आ आदश एक बार जीवत हतो के, दरिंदीमा दरिंदी माणस पग मागीने के अनीतियी मेलबवामा नानम मानता आजे आ प्रकारली नीति जीवत थाय तेम छे ? “ अमे तो अमारी मर्जी प्रमाणे जीवीश्च तमारे शु ” आउ कहेनारा वध्या छे, अने कहेनानो तो बायरो बायो ते आवी रीते “ शाद ” चनीने जीवतो माणस डाकु करता पण भयकर ते कोइ अे समजतु नथी के जीवनमा सारी रीते न जीयायु तो माइ नहि पग पराब रीते तो नहिज जीवतु जोइअे आ नियम नारा पामवाने कारणे सदाचारनु आचरण दुष्कर बन्यु छे अे बेट्ठु शक्य बने तेट्ठु जीवनमा उतारका कोशिश करवी घटे आपणे आपणा कम्हे जन्म्या छीअे, माटे कोइना ऊपर आदा राख्या चिना पोतानी जात ऊपर विश्वास राखीने जीवतु जोइअे महापुरुषोंने परोपकारनो उपदेश आप्यो छे, पण आपग कोइना आपणा कपर परोपकार इच्छावो न जोईअे, एवी मनोददर्श आपगी थाय तो आपणा हाथे अनीति, अप्रामाणिकता इदीये न थाय ते माटे आयानुसारी व्यय नयी करीने जीवतु जोईअे जे मछ्ये रेमांज सतोप मानवो गोइने जेना चिना जीवन जीवी शकाय नहि तेवी बस्तुओ माटे जे कई व्यय करे ते जसद्वय नथी, पण जेनी जीवनमा जरूर नयी तेना माटे दुरुश्योग करतो अे मोटामा माटो अनाचार ते पहेलो आठ्ठु बने तो बीजो सदाचार आनंद्यो रहलो बने अनेक जातना पापथी वैसो मेलबवानी प्रश्नचि जे पाप छे महापुरुषों वैसो मेलबवानु मूँझीने छोडी देवानु कह्यु छे ते गाढपग नथी, पापथी मेलबेलो वैसा जेना चिना जीवनमा हरकत आऐ तेम नयी तरी रस्तुओमां माणस केबा रीते खर्ची शके ?

माणसार्हनु लीलाऊ छे—

आय देशमा पैसो पाप्ती मेळवबो पढे छे तै यात समजावनी नहि पढे नोकरी करीने पैसो मेळवनार पण पाप करे छे, कारम के ऐठनी आज्ञापी अने पण न करवानु काम पण कर्तु पढे छे ढाँगा माणसोअे इमशा हायमा पसा अये त्यारे विचार कर्बो जोईअे के पैसो आव्यो क्यायी ? भठे पैसो प्रामाणिकपे आव्यो होय, छता अे यात चौककस समजबा के ते पैठो कोइ अनिष्टदाराज आव्यो हप्ते अनीहियी मेळवेडो पैसो ऐरां हाय कपबो जोईअे, ऐयु एजनु जोईअे आ पैसानो उपयोग जीवन झीकवामा जे वसुनी जहर नयी ते माटे कर्बो अे माणसार्हनु लीलाऊ छे

आय माणसोअे देशनी हवा बगाई छे—

आजना मध्यम धर्गमा भयकर बेकारी चाले छे त धामापी जन्मी छे ? एकली रोटलानी हप्तामायी से जन्मी छे हु ? आ देश आगो छे क जेमा माणसने रोटलानी भूख येटवी पढे तेबो काळ हसु नयी आव्यो आ देशमा इहु पण अे मानवता जीवउ छे के भूख्को माणस खोरेखर भूख्यो छ तेरी खपर पढे तो आ देशमाना भयकरमा भयकर माणसने पण नूख्या माणसने कोइक पण आपवानी भावना जागैब छे मोउमा पहेला माणसने तो जेटलु मळये टेटलु पण थोडु लागशे आजना धनादयो पण शुरु यतु नयी एवी परियाद करे छे घरनी स्त्रीओ पण दरजना प्रमां मागे आय छे, अने जेमणे बुद्धि बेची नाल्ही छे ते दीपेज जाय तेके टेला पापभी आवेलो पैसो आम बद्धाय ? शानीओअे घारेला रसा प्रमाणे तेनो अय थबो जाइये जो आम याय तो आई देशमा कोई उपाधि नयी, पण आ दरजनाना भ्रूते तो समने नीति आदियी परवारी दीधा छे तमे जे रीते पैसानो उपयोग करवा माव्यो ते तेथी रोगो वस्त्रा छे, देशनी हवा बगाई ?

असद विचार अने पर्वापी देखी दका थाहे हे आव केंद्रेष्टा सोऽप
पेदा पाय हे ! ऐ असद यत्नुं परिगम हे

भाणे नडि पण भट्टी खानारा—

आपगे त्या जाते भागे देखी खानारा रहि, पण भट्टीने खानारे पाँड
हे हॉगेले जने रेत्योरदो जोहने मने एम थार हे के आठदा बधा भट्ट-
कवा भूख्यावी नीरच्छा हे क्यापी ? भूख्याळमा पेट भरीने खाना इता,
आरग के ए लोको जीवना माटे खाना इता, जीमने इत्तद जानया माटे
नदी यारे जाने लोको स्वादने कारबं खाया टेयाया उ तेमने पटु पा
भाष्टु नभी, ने ने रीते अमदव्यप एलो धो नभी गधो हे के याँडु
थोडु ने सचो पांगो आ रीते विचार कराने तमे संगो कर सा अहपो खर्च
आपोआप घटी जाय अमदागादमा पगो माटा भाग घरचाराळो उ तेम छडे
उ, तो पछी तेक्षो पर वद्धार खाय सराई क तेमनी पर्वतिनिझोने रहोइ नभी
आवद्यती ? ऐ जाना जाफीने चहाना कोहिया पीनारा भूखा पास्या दयापी ?
व रोट्टा खाहने चीमाठी नात दे कर रहाना च्याला वीने स्वाक्षरा
चीरी गाइ उ जा सचो जेवने पोणाय उ च्यापी ! लोकोना भग उत्तर
पण तोहमे तेट्टु कापड हे आ बधु जावे हे क्यापी ? चु आगाह्यमापी
आवे उ ! लाङो अनीतियी मेलवता शीरी गया हे आ अष्टदव्यप
नीकळी जाय तो जावक वधे अने तर्चेय पटी जाय शीढी, धिगारेट
वगेरे चीरो पण स्वागत करतानी नभी पण जे वो फ्वेली हे
स्थाने त्रितनुकिया—

सामान्य माणसोजे अग्न्लो सचो राल्यो हे के तेमनु आवकर्तु पासु मझे
तेम नभी, जने तेना माटे पण नाह नरु कर्णु पडे हे ऊपरमा अने स्वप्रामा
मग ऐ जने जेत आवे हे जे धनाश ते तेमनो सच मोटो होवा छता
तेमनी पाहे स्वप्न धगो रहे हे आ समहोरी जे पाप हे जे लोके

आरक्षायी बचावडा होय ठमना माटे " रखने पैतृकिया " ऐ उसके सद्दाचार हे पन घ्यना स्थान ठमने कहापा हे ! भा देशमा आपेक्षणार पामेलाने पत्रा स्थान दीन, दोषी के भवायी खेगा माटे जही आपये आई क्षमनदीपे छोको बाने हे के अनीति ऐ लाह उज नहीं अनीति जीव जला प्राय तेरी थर गर छ दूदा आर दहायाँ लोहोने जीननां सगाइ ओझो हुआ, माटे " स्थान पैतृकिया " लूँ ही आव देशमा तेनना, माये दर हुता, अमना जीननां दर, धर, उपर्मीभाद, दीन, तु रही ए वधा ठेमना धाटे घ्यना इथानहा हुआ आजे स्थाने घ्य कराता नर्थाने वधी गवा हे

जाव मानवीभोज धर छोडपा हे, कर्नी छोडपा हे, चाल छोडपा हे, देव छाड्या हे ने जबको धधा माद्यने तेडा ।

पापनी नमार्णा झीना माटे—

उमे कमानी बयायी रहे हो हे पद्मानी सरकार तो न्होडा उमायी, पा बाजनी सरकार तो नमारी हे, जने तबो तया तमारा रुजाभाने थुँ थायी, दीते चाये हे, बड्डा के माश यमो दड्डाया गिना रद्दरना नपी, या पडी आ काळमां पुँ शा याटे कमायु हे रेहु अही, कमायु यगारे ने थर भरथो नहिं ते तम चाहे । त माटे दो बीजे रात्ता नु लोहमे नहीं धरानो नयी, नहीं तो तु तो ठमने पर कहु के ने उत्ती ठनाठी यटि गोगितु नयी आस्ती काले अथा धारीयु तो ठमने उगाई नूँझीयु हो नूँझी आये हे, तमा रगगळा, धन रामनर, दहु बालनारा, गारगनाल्याभो अने दुन्हाओ चूद्याइ आवहे, ऐगमार्णी माटे आ स्थान नया हमगा दहाहनी पा रीत एको हे कोई दहु गीर्घ ता कर भासगा छुता यम । चमारी छरडार हे नम तु मानवी नपी ज्ञान काढ्या प्रयाने रातेज तु न आयतु के अयो राज हारी जाव भार तो पकडाई बाय

दुर्घननीय हृदयपलटो थाय—

दिनी ४० करोड़नी पत्ती सेती-प्रपान बने तो जहर दुर्घनन
हृदयपलटो यई जाय साची भावनाओंथी दुर्घननोनी दुर्घनवट पण चा
ज्यो आटलो उदाचार जे दिवसे आवधे वे दिवसे हुं आ जुग आ
रहेये । मारो देतु तमारु मानस पेरवगाना छे माटे उगमीरिवर्तन छरखु दे
थी कल्पनाना पोबा धोडाकता बध करी महापुरुषोंवे फटेला मागे भागा
चु जोईओ

—००—

[व्याख्यान २]-

आ काळनी ए वलिहारी छे के लोको अति
निय वस्तुना व्यसनी बन्या छे

—००००००००००००००००—

(प्रेमाभाई दौल, भसदावाद रविवार दा २०।८।५१)
मोजशोख क्यारे मरे ? —

अनतकालमां महापुरुषोंवे जति दुर्लभ एवा मनुष्य जन्मनो परमादर्श
परमपदने सिद्ध करनानो प्रहस्यो छे, जने जे देवधी आत्माने परमपदनी
साये योजी आये वेनु नाम योग, ते योगनी जे कक्षा आपणे वर्णवी गया
छींवे वे कक्षाओंपदोची शके वेवा जीवो केंद्री स्वमावसिद्ध योग्यताने
परनारा होय अयवा एरी योग्यता केव्यव्यवा कदा कदा गुणोंने जेये
मेलव्यवा जोईओ, वेनु वर्णन करता आपणे जोऽु के, ते गुरु देवादिनो
पूजक होय, अने चीजा गुण वरीके वे उदाचारी होवो जोईओ
उदाचारातु वर्णन करता चौद उदाचारो ऊपर आपणे विचार कयों, अने

तेमाथी छेल्हानु बर्णन गई बहत आओ करी गया, ऐना पाया मोटे, आयानुषारी नीति मानवो स्वीकारी छे तो, योग तो मछबानो होय त्वारे ज मछे, पण ए ऐना जीवनमा भेवी सारी रीते जीवी शके के मरती बखते एने परलोकनी चिता करवा न पढे, अने आ लोकमां ऐ भेवा आनदधी जीवे के कोई मुखीने जोई तेने इर्षा पेदा न पाय, ने गमे तेजी स्थितिमां ते मूकाई पाय तो पण तेनामां दीनतां न अधि, जे अटलु समजतो होय के जे पुण्यना बछ्ने लीपे जन्म पाय्या छे ते पुण्यना प्रमाणमाज ऐने मछ्डे, द्रूकमां ऐ महासतोदी बनी जाय छे, अने ऐना मोजशोय मरी जाय छे

आबो मनुष्य असदव्ययी होतो नथी, ने पछी पुण्यनो योग होय तो ते “ स्याने चैतत् ” तो सदाचार आचरे आपड प्रमाणे जीवनावाढो, ने मछेला धननो योग्य उपयोग करवावाढो ते होय आबो मानवहमाज बने ता तेमा दु धनो अद्य पण रहे खरो ! आबी स्वभावाधिद योग्यता आप जामा ल होय तो ते पुण्यार्थ करीने मेल्हवी जोइमे प्रामाणिकपणे महेनह करता ज मछे तेमा जीवतु जेज साचो पुण्यार्थ छे अति छोभीने वपी अनु नृद्धता होय तो ते अति मोजशोसवाढो होय छे स्याने धननो व्यय करवामां तो तेजो धननो व्यय समने छे

“ लोकापवादभीस्त्व ” ऐ पहेलो सदाचार छे—

‘ बी सदाचार बहु उपयोगी छे धनी बार एवा धण छारा कामो करवा जेवा होय छे के जे बहानी लाकोने गमता नथी होता, छता शानीओप्रे जे काय आ लोक अने परलोकना हित माटे होय तवा कायों लोक विरोधमा होय छता पण करवा भेम ज्ञान्यु छे लोकनी शरममा पहीने तमे रमारा रोजदा जीवनमा पण न करवा जेवा बेट्ठा कायों करो छो ! उदाहरण तरीके तम महेमानने स्वागतमां कोइ दूध आपो ते योग्य छे, पण छिगोरेट घरो ए स्वागतमी चीज छो ! लोकवृत्तिने तावे यवानी जे आ देव ते रहदाचार नयो बहु अशानी लोकोनी, बहु परवा कर्ये चाले नहि,

दुर्सननीय हृदयपलटो धाय—

हिंदनी ४० करोड़नी वस्ती ऐती-प्रथान बने तो जहर दुर्सननीय हृदयपलटो यई जाय खारी भावनावोधी दुर्सननीय हृदयपलट पथ चालें जाये। आठलो सदाचार चे दिवसे जावहे ते दिवसे हु आ चुग भावने रहेहे ! मारो हेतु चमार मानस पेरवानो छे माटे मुगपीत्यतेन करु होइ थो कल्पनाना घोडा दोडावता वध करी महापुरुषोंके कहेला मार्गे भावने हु जोहंडे

—००—

-[व्यारवान २]-

आ काळनी ए वलिहारी छे के लोको अति निय वस्तुना व्यसनी वन्या छे

(प्रेमाभाई हॉल, अमदाबाद रविवार शा २०१८।५१)

मोजशोख क्यारे परे ! —

अनन्तकाळनां महापुरुषोंगे अति दुर्लभ एवा मनुष्य जमनो परमादर्थ परमपदने चिद करवानो प्रस्त्रो हे, अने अे हेतुथी आत्माने परमपदनी थाए योजी आपे तेनु नाम योग, ते योगनी जे कथा आपणे वर्णवी गया छीने ते कक्षाने पहोची शके तेवा जीवो केवी स्वभावचिद योग्यताने परनारा होय अथवा एवी योग्यता केलववा कदा कदा गुणोंने ओजे मेळववा जोईबे, तेनु वर्णन करता आपणे जोयु के, ते गुरु देयादिनों पूजक होय, अने भीजा गुण घरीके ते सदाचारी होयो जोईने सदाचारु वर्णन करता चौद सदाचारो अमर आपणे विचार करो, अने

‘ सेवारी हेलजानु र्गन गई बलत आपणे करी गया, अेना पाया माटे, आयानुसारी नीति मानवो स्वीकारी ले तो, योग दो मळवानो होय त्योरे च मळे, पण ए अेना जीवनमा अेवी सारी रीते जीवी शके के मरती वरते एने परलोकनी खिता कर्वा न पडे, अने आ लोकमा अे अेवा आनंदपी जीवे के कोई सुझीने जोई तेने इच्छा पेदा न थाय, ने गमे देवी सिधितिमा ते भूमाई थाय दो पण देनामा दीनता न आवे अ अेटलु समावदो होय के जै पुण्यना बळ्ने लीधे जन्म पाम्या ठें ते पुण्यना प्रमाणमाज अेने मळ्ये, दृक्मां अे महासतोपी बनी जाय छे, अने अेना मोजशोख मरी जाय छे आवो मनुष्य जसदूत्याही होतो नयी, ने पछी पुण्यनो योग होय दो ते “ स्याने चैतत् ” गो सदाचार आचरे आवरु प्रमाणे जीववायाळो, ने मळेला धननो योग्य उपयोग करवावाळो ते होय आवो मानवउमाज बने को तेमा दुरुपनो अश्य पण रहे खरो ! आवी स्वमावासेद योग्यता आप-
णामा ज होय तो ते पुण्याथ करीने मेलवी जोईअे प्रामाणिरुपे महेनत करता ज मळे देमा जीवतु अेज साचो पुण्याथ छे अति लोभीने धर्मी अनु चूळता होय दो ते अति मोजशोखवाळो होय छे स्याने धननो अव्य करवामा तो तेजो धननो अव्य समजे छे

‘ लोकापवादभीरुत्त्व ’ जे पढेलो सदाचार छे—

आ सदाचार चढू उपयोगी छे धर्मी वार एवा धणा सारा कामो करवा अेवा होय छे के जे जडानी लोकोने गमता नयी होता, छतो झानीओभे जे कार्य जा लोक वने परलोकना दित मारे होय तत्त्व कात्यो लोक विहे धमा होय उत्ता पण वरवा अेम जाानु छे लोकनी शरममा पढीने समे तमारा रोजदा जीवनमा धज न करवा अेवा केटला कायो करो झो ! उदा दरण तरीके तमे महमानने स्वागतमां कदेकु दूध आपा ते योग्य छे, पण चिगारेट धरो ए स्वागतमी चीज डो लोक्युचिने तापे यवानी जे आ टेव छे वे सदाचार नयी चढू अडानी लोकोनी चढू परवा कर्ये चाले नाहि,

ऐनेमानी लते सर्जियेली पायमाली—

न जोवानु जोवामा पण प्रमाद हे गाटक, ऐनेमानी तो आ बमा नामा वातज दी करवी । आज काल नाना नाना ठेणीया बहार नौकडे हे त्यारे अे जे गीतो बोले हे ते बोलता मने पण शरम आवे हे, न आसा स्थाने सगो चाप दीकराने लळने जोवा बेसे हे आ महाप्रमाद हे अे खिले-द्यो लासोना सर्व बने हे तेमा भणेलाओ द्रव्यनो व्यय नयी जेगा, पण तेने घरले जो ल्या मदिरनी वात करी होय तो । विस्तमा जाप चाओ-हैयाना जापळाओ जे स्परग छुभे हे तेने परमां लावगानु हडे हे, पा भेमना कोडीया जेया पकाढमा नाचनारी, गानारी जने स्थानी चायदी क्यायी होय ? अटले भेमना दिक्ष अने रात केवा पसार यडा हरे चेनो विचार करे आम क्षय रोगनो वधारो यतो जाय हे बळी फिल्मोनी जे जाहरातो ने चिप्रो लौटा यच्चे टिंगाळे हे तेनी तो वात ब शु करवी ? जने कायदो आने रहे हे आठला आठला उपदेश्योधी भेमने ऊची चक्षा प्राप्त नयी करी तेबो शु चिनेमामाधी ऊची भावना लहूने पाच बायवाना हे ! यक्की आ चिप्रो ली-पुरुषो साथे जोवा जाय हे, ने पद्धा पर चाढतु नाटक जोहने हसे हे आ अनर्थता ने अनाचार जावा क्यापी ! आतो नयो जागचारनो असादो हे

आंखनो सयप—

पदेला बेबी शरम हती के रस्ते गमे तेबी देबी जेबी छी चाली ज्ञी होय तो पण ऊची आपे तेनी यामे कोई जुबे नही लक्षण सीहाने दाखले रमे जाणो छो ! लक्षणजी सीताना तुडळने के ककणने नहात जागता, पण जाणता हता माझ भेमना पगना नुपुरने, कारण के अने कपी सीता साम ऊची नने जोयु न हतु आमा आसनो सयम हे त्यारे तशे चो आज पाढी फाईने चुओ छो आय देशना सखार वो कहे हे के खी पुरुष यामे न जुबे ने पुरुष छी यामे न जुबे

फिल्ममार्ग आ यचनाये । यास्तार स्वरुप रम जोहने तमाह हैय विडाट
पी अनुभवतु । तमे तमारा शालकन ऐ रिवे केळबी आसो छो ते
योगा वो ते तमने चूर्णीए ने जूतीए मोरे दो दग मने नवाई न लाओ जेमठेम
तात्वातमार अनान्वार धीखो छो, अने तेनी पाउधी तमे सदाचारनी
प्राप्त गम्भो है । आ वो नवु शुद्धिनु प्रदर्शन ऐ भाज आठ आठ यस्ता
गाना याढ़को रियनी खानमा रुराव चेष्टा करता रही गमा ऐ पड़ी
मस्तिष्ठ यद्यन्वय जल्याय भ्यायी । ने उमरे द्वोचना पटेला वो तमना
थरीस्तु बहु धन वेलाइ जाय उ आ बहु प्रमादना तासगमा समाई जाए
उ अने आ । देहमा इकप्रश्चि मानी है, तेने जानीभाने यस्तनमा समावी
दीधी है जे मात्रत्वने विश्वमा ने क्षणायमा रमले बनावी दे उ देयो आ
महा प्रमाद है

सोटा लोकाचाराने बगु न धाओ । —

लोकाचार या लगी दम्भोपको उपार्ने आचरायनाहे न होय त्या मुष्ठी
अनुसरत्वो जोईजे, लोकोमा जे काह साह होय देनाभी दूर नहि बहु जोईभे न
आपगने हानि करे हेतु न होय तेने अनुसरतु, अने जानीओ उदाचार कहे
ऐ लोकोने राजी करता ज्ञानवी नपी जो शक्ति होय वो प्रसग पामीने
दग कोइने लानदावीबे ते गुप्त हे, पग लोकदृग्मा पढ़ीने गम तम करीते
संवादबहु के लोकना आचारने बगु धद्दने कर्तु तेनां सदाचार नपी

सर्वत्र औरित्य वर्तन —

आ उदाचार हे कृपग पग आपगे त्या दातार बनी शके हे—
जे कोइ मागनार आये ने मागनार योग्य मागे तो “ भावकानी ताकाङ
होय ने न जावीन जे बहुचित हे ” भेन मानीने आपार कृपग पग
उमटे तो दातारज ते बड़ीउ के दुमन गामा घडे तो पग अेह सरत्वो
न्यवहार होया जोईन दुरमन ऐर जावे त्यारे दैसामां गमे तवा मार होय,
परु तेमनु रागत करपु जोईन अज धम हे, जावे बा जीचित्त वधु हे—

सिनेमानी लते सर्जियेली पायमाली—

न जोवानु जोवामा पण प्रमाद हे नाटक, चिनेमानी तो आ खला नामा यावज शी करवी ! आज काळ नाना नाना ठेणीया बदार नीळजे के त्यारे थे जे गीतो बोले हे से बोलता मने पण शरम आंखे हे, ने भास्याने सगो चाप दीकराने लहने जोवा थरु हे जा महाप्रमाद हे ने किंच या लाखोना रचे बने हे ते तेमा भणेलांबो द्रव्यनो व्यव नधी बोळ, पण तेने बदले जा त्या मदिरनी चाव करी होय तो ? फिल्ममा जाक छायो—दैयाना आषछायो जे रुपरुग लुने हे तेने घरमा छाववानु हळ्हे हे, पण जेमना कोडीया जेवा कपाळमा नाचनारी, गानारी अने, स्पाई चायडी क्याथी होय ? जेटले जेमना दिवस अने रात वेवा पहार याहा रहे तेनो विचार करो आम धय रोगनो वधारो यतो जाय हे कडी फिल्मोनी जे जाहराहो ने चिनो चौटा चन्द्रे टिंगाळे हे तेनी तो बाद ब श करवी ? अने कायदो आने रहे हे आठला आठला उपदेशोयी जेमने ऊची फक्ता मात नधी ऊरी तेजो शु चिनेमामाथी ऊची भाषना लहने पाडा आयनाना हे ? खडी आ चिनो खी-पुरुषो राधे जोया जाय हे, ने पहार पर चालत्तु नाटक जोहने दसे हे आ अनर्थीता ने अनाचार जाव्या स्पाई आतो नयो अनाचारनो अखाढो हे

आखनो सयम—

पहेला जेवी शरम हती के रस्ते गमे तेवी देवी जेवी खी चाली ज्ञ रोय तो पण ऊची आरे तेनी सामे बोई जुने नदी लक्ष्मण सीतानं दास्तछो तमे नाणो छो ? लक्ष्मणजी सीताना कुहलने के कहाने नहो जाणता, पण जाणता हता मात्र जेमना पगना नपुरने, कारण के जेने कर्द खीता सामे ऊची नजरे बोयु न हु जामा आसनो सयम हे त्यारे तमे चो आर पाढी फाईने दुओ छो आय देशना सस्तार तो थरे हे के खी पुरुष सामे न जुने ने पुरुष खी सामे न जुने

फिलमर्मा आ सचवारो ॥ वारवार रुप रग जोईने तमाठ देयु विकार
 नयी अनुभवतु ॥ तमे तमारा बाढ़कने जे रीते 'केळबाई आपो छो ते
 बोतां थो ते तमने जूतीए ने जूतीए मारे तो पण मने नवाह न लागे लेमतेम
 शत्रुघ्नातमा अनाचार धीखतो छो, अने तेनी पाखेथी तमे सद्याचारनी
 आशा याहो ते ॥ आ तो नयु दुदिनु प्रदर्शन डे थाने आठ आठ वर्फन॥
 गना बाढ़को विषयनी खगबमा खराब चैष्टा करुता यह गया छे पडी
 पस्तिरु बझाचर्य जलजाय म्याथी ॥ ने डमरे पदोचता पहेला तो तेमना
 गरीए बधु धन वेराह जाव छे आ बधु प्रमादना त्यागमां समाह जाए
 ते केने आर्द्देशमा हितप्रहृति मानी छे, तेने गानीओभे व्युत्पनमा समाधी
 त्रिवी ते जे माणसने विषयमा ने कपायमा रमतो बनावी दे ते तेबो अह
 हा प्रमाद दे

लोय लोकाचाराने वश न याओ ।—

लोकाचार ज्या लमी दभयोपक ने लुचाईने जाचारावनारो न होय त्या सुर्खी
 प्रनुसरत्वो जोइये, लोकोमा जे काह लाह होय तेनाथी दूर नहि जखु जोइले न
 वापणने हानि करे तेहु न होय तेने अनुसरतु, अने जानीओ राहचार रहे
 । लोकोने राजी करवा व्यानवी नयी जो शक्ति होय तो इन्ह शमीने
 प कोईने सबडायीजे ते गुण छे, पण लोकदृष्टिमा पडीने गर छें, कराने
 राहचारतु के लोकना आचाराने वश यहने करतु तेमा साक्षा गर्नी
उत्तर औचित्य वर्तन—

आ सदाचार छे कृपण पण जापगे तर्ह न गनी शक्ति
 । कोइ मागनार आवे ने मागनार योग्य मागे छ गनी वाकाक
 त्रै ने न आपीजे भे अनुचित ते ” जेम गुण रुप रुप व्युत्पन्न
 नटे तो दातारात ते बढील के दुइमन सम्मान
 पवहार होयो जोईने दुइमन पेर नामे त्याही
 रुप तेमनु स्वागत करु जोईदु अद्यता

योगनी पूर्व भूमिकामा जे चार गुण कसा हे तेमांनो पहेळो “देवाधि
 देव पूजन” ने यीजो “सदाचार” आपणे लगभग पूरा कर्या हे, त्या
 तेमा छेहे घगी उतावळ करी हे आपणे जे १९ उदाचारो गणी
 गया ते तमने सीने याद हे ? जे गुणे तमारे जीवनमां जीवतु हे तेनी
 आने आ दग्गा होय तो तेने मूळीने गया पछी इती वले थडो ? तमारे याद
 राखवा जेवी थात याद राखवानी तैयारी क्याधी आवडो ? आपणे अेवी
 जातिमा, कुळमां अने जेवा देशमां ज म्या ठीए के आपणा शास्त्रोभे दर्शा-
 वेला मार्गे आपणे चालु जोईजे नास्तिकमां नास्तिक माणस परल्योकने ना
 मानतो होय यता पण जो ते सदाचारानु आचरण करे तो काही थांधो
 खरो ? अने तेमां कुळ गुणाववानु हे खरु ? जे आचारो शानीभोभे योगनी
 पूर्व भूमिकामा समजाया हे ते एवा हे के जे जीरे हे पणी उपाधिमार्थी
 रुटी जाय

धधामा चोरी अने चुगार—

“सदाचार” भा आपणे छेहे कठे प्राण आवे तो पण गहित प्रश्नापि
 न करवी तेमां सात व्यष्टनना त्याग विषे आपणे विचार्यु तेमाना छेहा के
 “वेद्यागमन अने परब्रह्मगमन” जीवानी साची लायकातवाळामा
 तो होवाज न जोइजे, जने आवा पुस्तोने चुगारनी जहर नथी होती,
 चोरीनी जात्यक्ता नथी, तेनो खर्च आयक प्रमाणे होय हे, अने माझ
 अने विकार तो तेमना मने वर्च हे, चाहुकारा धेपमां वेढी जो चोरी
 करे तो दुनीया विवाद कोना ऊपर करहे ? पण तमो धपो जेवो करवा
 गाड्यो हे के चोरी कर्या निना इट्टो न थाय, जने आवा लोळोने
 अची भाराम माटे मादिरा जोइजे, वळी पथामा चुगार पुस्तो हे चुगार
 मे अेवी जातनो धपो हे के माणसने चोरी पण करता इतीव्ये वळी
 तमामा मध्ये एडलो वधो नस्तोरी बनी गयो हे के धपामा चोरी
 रमाविह ननी गइ हे, ने पडी भाराम माटे मादिरा आनी ज हे चुगार

एवं नामांतर स्वरूप किसी एवं अन्योन्ये जला हो के तो न जारी अनुष्ठो
सकर्त्ता न हो, ऐदिकाल्ये नहीं अनुष्ठो
सेव्यागमन भने परम्परागमन—

‘ज्ञान निष्ठेना ।’ परमागमन । एवं महारी राधी इत्युपरि ज्ञा-
नांतर स्वरूप हो हो दाता दाते दुश्मन न तो जेता दाते दाते दुश्मन हो
ज्ञान निष्ठेना नहीं होये इत्युपरि ज्ञानांतर स्वरूप भाव याव दाता दुश्मन
गिर देखाती था, तेहा उत्तर न हो जाता तेहा निश्चय दूधी उक्ते ।
दूध उक्ते ज्ञानुपरि तज भावग्रामे पापी कीरे नहीं अन्तरी दाता हो तेहा
हो दात्यांतर स्वरूप भाव भावोऽप्यभी इत्युपरि ज्ञानी नादद्वय गिर वीचन्द्रे
कन्तु देहे के क्षेत्रधी था, इत्युपरि ज्ञानांतरे तेहा जाती
था, इत्युपरि ज्ञानी थोड़ी और उभेत भावो उही न राखिये तेहा
वाही कोइ जल ही न इत्युपरि था, इत्युपरि ज्ञानी उपर्युक्ती इत्युपरि
ल इत्युपरि ज्ञानी इत्युपरि जल नामांतर । इत्युपरि ज्ञानुपरि
दाता न उखाना लोगता भा इत्युपरि जल नामांतरे उपर्युक्ती नहीं, एवं
ज्ञान दुष्मनी , १०५३ यज्ञी रिति इत्युपरि नहीं हो, अन्तरी
थोड़ी उपर्युक्ती दाता दुश्मन यो सहायुपरि रेखेता आही इत्युपरि ज्ञानुपरि
हो तेहा जीवनका जीवन जिता बोइ दुश्मनो नपी, ठेवेते अन्तरी दाता
इत्युपरि ज्ञानुपरि जेवी केवी यज्ञी दाता भावो नपी हो । एवं यो १०५३ यज्ञी
ज्ञानुपरि जल अने एष, रसु जेवी यो उक्ता दाता दुश्मन, तेहा अन्तरी
कल्पी हो तेहा जीवनीभावे अनुष्ठो जेवी अन्तरी दाता दुश्मन
प्रथमा जानीभावे भा जाता अन्तरी इत्या ठेवेते ज्ञानुपरि जल अन्तरी
ज्ञानुपरि नही इत्युपरि भावे जल अन्तरी दाता दुश्मन दाता दुश्मन
युक्तापी अने दुश्मनीभीभावे जल अन्तरी दाता दुश्मन दाता दुश्मन
महाग्रिधरण ननर्पेतारी—

भा देहना उद्दिष्ट उपर्युक्ती नहीं ।— यज्ञी दाता दुश्मन ।

राख्यो है तैमये शुभपावे सदाचारी कस्ती लीधेला ! तेमना छोकरा मौहे है, तेमना मा चाय जीवे हे तो यहने ! तैमने तेमना अदुभवो, तेमना अत करण के स्थितिनी खबर हे सरी ! हु आधी विदेष शु लोलु ! छोकरा हो हउ तिन अनुभवी हे तेमने खबर नयी ऐम मानीने आपणे चाढीअे, पण तेमना मा-चापो तो पोतानी जातने सारी रीते जाँचे हे ने ! समझा छता जे मा-चापो आ स्थितिने अग्रवकारी हे तेमा तेमनो इरादो घो रुपे ! युत्कु श कह, इशारो बध हे ! आवा सरधमां मानवजात केटली नीचे उतरी गई हे था विदे काहू कदेतु नकामु हे, तमे धजारमां परनाए हो, राखना बार चाय्या लगी बहार रहेनारा छो आ देशना महापुरुषोंमे मानवजातनो उद्धार करवा साधुओ जेवाज कायदा तेमना माटे कर्या हे शु तुममा बड़ीलोने क्यो जाड शु भे कद्या विना कोइ पण बहार न जहु, आवी मयादाभे यद्यस्यमां पण सदाचार जीवतो ने जागतो राख्यो हवो, अने आजे ! बहारथी मोडा आवता पुञ्जने पिता कारण पूछे तो पुञ्ज भेलु नीविनु दूर समझाये हे के “ सोळ वर्पे पुञ्ज मित्र समान हे ”

प्रेम आत्मानो के शरीरनो ?

बड़ी आजे लिनेमानो युग हे तमारा अवरमा उतरीने तेमा चालता चित्रनेज जुनोने ! लिनेमामा काम करता भाणसो नीतिमान् हे खरा ! गो यज्ञी अने जोयाथी शु कल्पाण यशानु हे ! आधी तो अतए गलिन घने हे आ सदाचार आवी जाय अने आ मर्यादा अकाइ जाय तो जगतनु महाकल्पाण यहै जाय परिणीत स्त्री-पुरुषे (पतिवलीअे) अची मयादित ग्रीते जीवतु जोईअे के तेमना उपर विदेष उबार न यहै जाय तमे आत्माना प्रेमी छो के शरीरना ! जेओ आदर्श प्रेमनी चात करे छ तेओ शरीरना स्मरणना के शरीरना प्रेमी होय वो त आदर्श प्रेमी खरा ! ने बड़ी पाझ भद्रेये के “ प्रमुक्तामा पगला माझ्या हे ” आ भधा बेबूफना सरदारोज मेगा यथा हे ने ! दापन्य भीवनमा पण विषयनी बासना न जागे ते रीते

ऊठे, ऐसे ने परस्परना स्परण परस्पर न छुअे, पण आजे तो पाठा बटनमा घोया राखीने परे हे आ ते काहुं पुग हे आ केम चाले ! नाना बच्चां दो मा-बापने दावे हे, देमना माये कर्ह जशावदारी हे खरी है दरेक कहे हे के बारी बुद्धिने खले तेम कह तो कान पकड़ीने कलेजु पढे के आप न चाय ! आजे जे आ एहु ट्यल ऊभु चाय हे ते सहायिक्षण आदियी यमु हे, ने देमापी उमारा चालझीने बचाववा जरूरी हे

सदाचार उपर दावानळ—

सातमा व्युहनर्थी बचेला केटला भाग्यदाक्षी हये है छेवटे चेनचालामायी बचेलाय केटला हये ! ठसादार सारा कपडा पहेरी चाले तो तमने लोको सदाचारी कहे हे ! के मानी देरो ! दमे अम भानो छो के सामाययनो रायग तमाह करताय खाएव हये ! रावग सीताबीन उठावी लाव्यो हतो ते केगा प्रसगे उपाढी लाव्यो हतो, कहै रीते ते जीव्यो, केटलु दुख ते पाम्यो तेनो शास्त्रोमां मोटी चिगार जाम्यो हे आजन्मी सामग्रीजे जगतमा अटले प्रधाचार ऊभो क्यो हे के, तमने जी पुरुषोना सबधमा वाधो लायतो नपी परस्परने मछवामा दोप न जोवाय ते सदाचार उपर दावानळ सङ्क्षगाववा जेवी वात हे माटे सातमा व्युहनर्थी बच्चवा बहेन, दीकरी के सबधी तरफ बेवो सद्माव राखो छो देसो सद्माव जगत्नी तमाप स्त्री गत्रे राखता यह जावो !

अभण रामवजो पण सहायिक्षण न अपावशो !

इमणां हमणां दाङ्गा माणझो छोस्तीओने स्टेज उपर नचाववा माडी हे ने ते नाच मा-बापो जोगा जाय हे मने लागे हे के छषो आरो तमारे नजीक लाववो हे आगळ नृत्यकला हठी परतु शिक्षको पढामा राखीने कन्याने गिभण बापता अने तेनो उपयोग ज्ञाआ मात्र पोत ना पति बने भगवान् सामेज करती गमे त्या अने गमे ते

रीते जावीने उभी न रहेती आजे तो सदाचारीओ—तमे आ उझी छो
त्यारे उमारा हैयामा तमने काई नथी वतु । पोतानी दीकरी दजारो बामे
नाचे ने मा-बाप ते जुने ते कैतु लागे । मारे पूछु हे के क्या शुभ हेतुयी
तमे आ करो छो । माठ तो जे कहु हे के अनार्य देशना सस्कारो अही
चालवा लाग्या हे पण आ वे देश बच्चेना सस्कारोमा धणो ऊडो
बाजवत हे माटे मारी तो तमने सछाह हे के यई गई ते बात गई
छोकरा जभण रहे तेनी चिंता न करयो पण उद्दिक्षण मेलववा न मोक
उशो जाजना युगमा छोकरी मोटी यह माताने काम लागती नथी,
मोटो आकरो तेना बापने काम लागतो नथी, धणी मादो पहे त्यारे
धणियाणी तेनी चाकरी करती नथी आ वधी अनार्य देशनी छापा हे,
ने उद्दिक्षणना जा अनिश्चे हे आर्य देशमा जाम्यानु गौरव होइ
अने तेना सस्कारनी उच्चता तमे समजता हो तो तमारा मनने
समजनो जने मुधारनो । शाखोमे सो लख्यु ते के दीकरी साये
पण जेकात न सेव्यो, कारण के अदर बेटेलो शेतान जागे त्यारे
सामे कोण ऊमु हे ते नूर्गई जाय हे परस्पर आगछी पकड़ीनो ने
चालो । कामनी मर्यादाने तो जरा लुओ । राम बनवाए गया त्यारे राम
आगळ, सीता पाठळ ने लामण सीधा पाठळ चालता, आ तेमनी आचार
इतो । पण तमे तो जेवा सदाचारी छो के तमने शेताननो भय नथी
सदाचार माटे चोकी जोईओ—

नीजा अने चोथा शुण उपर आय देशनो धणो मद्दार हे आ शुण
जापदेशमा पर्णी स्फुलाइधी पाठी शस्त्रातो हतो जेनामा खोटी मोटाई हे
ते सदाचारने नहि पाठी शहे शाखोन तो जमने—साधु मुश्याने पण कहु
हे ५ चद ८ जानो तो वे जणा नहार जानो । अने ज्या अमे जा नियमनु
उल्लंघन कर्यु ते त्या अमे मार लाखो ते तो पठी तम तो जमारा करता यधु
उच्च न रा ने ? पण तमने माथे धणी गमतो नथी जेन्या जेन्या नियम

माटे रखदी बने हे, तो तमे बधा पाप माटे रखदता बन्या ठो शाक लेवा माटे मोकलेलो नोकर पण वे पैसा खाधा बिना पाढो न परे अेवी तो आ उगली बलिहारी हे सरकारी खाताओंचे हिसाब माटे वाउचर राख्या हे पण वाउचरमाय केटला चोर पडव्या हे ? सारा माणसोंचे पण कहेड जाईपे के मारे सारा रेगा माटे मारा माये धजा होवो जोईअे, मारा माये रक्केदारी होवी जोईअे, सदाचार मोटे चोकी जोईअे, धणी जोइये, नहि तो ते चिंवाय नहीं जीवाय

महान् गुण पापभीस्ता—

जीबो गुण हे तप आ देशमा मानव बेटलो पापभीष्ट हतो जने आयो बेटला पापभीष्ट होवा जोइअे के तेमनाथी पाप यह जाय तेवा सौथी हे आधा रहे, ने जो भूलथी पण पाप यह गऱ्यु होय तो तेनु प्रायभिचर्त लेवानो तेनो स्वभाव होय पापभीस्ता ए जार्य देणानो महान् गुण हे जापगने आवे पापनो भय नयी, पण मात्र कोई जोई जाय ने वात करे तेनो भय हे जा देशमा एक काळे पापशुद्ध माटे तप चालतो, भूतकाळमा येला पाप माटे, वर्तमान काळमा यता दोयो माटे जने छेवटे मरणनो भय ने आगे तेना निवारण माटे लोकी तप करता बेटला जन्मे तेटला नरे तो खराज, बेटले मरणनो भय टाळवो होय तो जन्मनी समावना ज टाळवी जोइअे तपे दु स नयी छता दु स आवी पडे हे, स्यारे ते भूतकाळना पापने काळे हे तेनु तमने लागे हे सरु ?

काळनु अपलसण—

मानवीने शहेर, शेरी, घर, पधु ढोढवानु हे ने ते छोडवा पछी क्या जबानु हे सेनी तमने खबर हे ? सारु कर्यु हये तो सारी जम्याजे जशो ने खाड कर्यु हये तो खोटी जग्याजे जशो तो पछी मागसने अेम तो पधु जोईअे के माया भूतकाळना पाप धाचे, ने तेना निवारण माटे

गुण तरीके धार्योंने वर्णित है तेनु आचरण करु जोहूंभे, आजे जे के स्थाने जे जे माणसों पेठेला है ते वथा आजे इरादापूर्वक पाप करनाह ते पाप आजे नयी करता मात्र अशक्तो आने लहने एक नुकशान ए मोहू यहु है के सारा माणसोंमा खोटा माणसा घणा शुर्सी गया है जेकले पेटो जेनी पाए होय ते सारो मनाय है ते काळनु अपलक्षण है नहीं तो सामुख जेबी जातने दस्क बिनानो एक पेत्सोय लेवानु मन केम याय ! कोई व्यवस्था माटे सोपायेला द्रव्यनो दुरुपयोग करवानु मन केम याय ! कोई जे विधान मूक्यो होय तेनो द्रोह करवानु मन केम याय ! आ वधा पापनु प्रायश्चित्त तप करीने करवानु तपने मन याय है ! हवे तो आ देशनी तपमाधना नाश पाभी है जेक काळ जेवो इतो के आर्थ देशना छोकोनु उप जोहैने अनामों झोमा जागड़ी नास्ती जता, जीवनमा पेट नीरूल्ली जाय तो कथानी गरज रहे खरी १ माटे जानीजोबे खावारीदाने पण पाप कहु है आ देशमा एवा तपस्तीओ जीवी गया है के जेभो जीव्या घणु ने खाधु जोहु

बाध्य अने अभ्यतर तप—

जेमनामा तपनो गुण जावी जाय सेमनामा खावानो घणो सुयम आवी जाय ते जानीओंने तो कहु है के मोटा भागे रोगो पेटथी धाय है, कारण के मामुल पेटमा रोग भरे है जे दिवसोंमा तपनो गुण इतो स्यारे देशनी आ दुर्दया न इती घणा एवा माणसों है जेमनामा तप गुण तरीके नयी आधु तपने तप देरान करे है वधती इच्छानो निरोध तेनुज नाम तप आपने त्या वे प्रकारना तप है, एक बाध्य तप जने बीछ अभ्यतर तप आ बनेसा है छ मकार है

बाध्य तपमा—(१) अनशन तप (२) ऊणोदर तप (३) रथत्याग तप (४) शृंगिसक्षेप तप (५) कायाकलेश तप (६) सलीनता तप

अभ्यर धर्मा—(१) प्रायश्चित्त (२) विनय (३) वैषाम्बव
 (४) स्वाप्नाय (५) ज्ञान (६) कायोत्त्वग

आम बार प्रश्नानन्द तर छे. देयी मन, वसन, खाला पर काढू आवे
ते भा रिते भूतकाळमा सप्तका आब दशनोमा तस्ना विधान हता
इन्मा परिजामे इन्द्रियो पत्र काश्यमा जावडी, अने इन्द्रियोनी विझार पाम-
वस्ती दक्षित नाथ पामती

प्रोफेशनो अट्रेप—

ચોણુ શકે એમ કણુ હે કે મોખનો અદ્દેય હોવો જાહેરે સોધની શરૂ
ગોરને કરીએ તો તે પૂરુ ઝ “ત્યા ખી છે! ” “સિનેસા તે! ” “નોચ
પોખના થાપનો છે! ” આવા માગણોને મોખનો રાગ નાહિ, પર દેશ હોય
હે અદ્દેયની ભાવનાને ચાલ્યોએ યોગની પૂર્ણભૂમિકાનો મોટો ગુગ કર્યો છુ
સોધ પર રુગ ભલે ન હોય, પણ દેશ તો નાહિ આખનો જોઈએ, અને તો જ
માનવી ઉત્તર કાઠિનો બની જાય, જો યોગભૂમિકાશાસ્ત્રની વિજ્ઞાન
પહોંચે

महाजनोअे मारु नाक काप्यु ते श्री अर्जुन भगतनु निवेदन

उग्रयुक्त प्रवचन थाद भी अर्जुन भगते पाच मिनीट वॉल्वानी मांगजी करता आचार्यांभे लेमो समय आप्यो हतो

धी अर्दुन भगते गायोनी कलाल अटकावचा आमे पोते बे उरगाव
क्यां दवा तेनी अने महाजनोंने तेमने जे चायचवी वारूने उपग्राह ।

इता तेनी याद आपता जगाव्यु हतु के " महाजने मारु नारु काप्यु है, अने गोवध अटकावया मारे हु परी उपवाहे उतरवानो धु "

" खोटी धाघलमा अमारो साथ नथी "

धी अर्जुन भगतना निषेदननो जबाब आपतो महाराजपीभे जगाव्यु हतु के—महाजनो जेटला सबल नथी के आवती निषिने पेठ्या तैयार याय, अने अमे तो उपदेशमा माननारा छीभे उप देवाची याय बेट्यु परावतु जे अमारो धर्म हे आया लोकशासन युगमा अमारे कप्यु केतु नथी, कारण के मुत्साहिअनि दोठे कई दोब छे अने हैये कई होय हे सौभे नानामा नाना जीवने देमो गीमालानो पण छमारेश याय हे उचाववाना उत्तम कार्यमा नदद करवी जोईने, बाड़ी रोटी धाघलमां अमारो साथ नथी

आचार्यश्रीनो जगाव—

आचार्यश्रीभे धी अर्जुन भगतना प्रबचन उपर लुलाओ करता जगाव्यु हतु के आ घमधफट्टी यात हे अमारे तो सर्व जीवरथ णतु पण हे, अने जगत्तना नानामां नाना जीव मानने अमारा जेवा मानीभे छीभे नामो गाय पण आवी जाय हे महाजने गोवध करवी प्रजाने नहि जीवाढवी जोईने, अने धी अर्जुन भगते पोते उपवास करे त्यारे सौभे रुपे प्रकारनो साथ आपयो जोईने जेतु जगाव्यु हतु ज्योरे आ देशना लोको आ देशमा राज्य करता होय त्यारे देश जेने जीवदयानो धर्म माने हे, वेनी भापना पोषकी जोईने, पण राजकारण ए भयकर चीज हे आजनु राजकारण ए खरडाओतु राजकारण हे मारे राजकारणने स्पृह् ।

आख बद्ध न हु, पर ज्यारे हु अहि बेठो हु ने यात पर छे त्यारे मारे
 जेतु स्थीकरन करु जोइमे बधा भेड उत्तरी भागवा भरायता नपी,
 खट्टाक्को बेट्टा उबड नपी के जेभो आवती रिखिमे बेट्टा तेयार
 याय अम उपदेशमा माननारा हीए उपदेशयी याव तटउं कराय हु ऐ
 अमारे यस्ते हे पा प्रभ जे हे के प्रादिवोप फर्गो कोने ! आजे तो
 छोक्कासक्को युग हे प्रमुग यदाप्रधान पाए मोडवहे, तो यदाप्रधान
 रेक्किनेट पाए मोक्षहे, हे चली रेक्किनेट बद्धे के पार्कमेन्ट पाए जाओ !
 पाटे आवा उत्काय माटे जे कोइ उपवाह करता तेयार याय अन भा युगमा
 नूचने बेट्टां प्रसन्नता मेडवर्ती मरी जाय, तो शालो मागलो उत्तरास करे
 तेया कह लोड नपी, आया छोक्कासक्का युगमा अमारे कायु बद्ध नपी,
 काम के मुत्सदिओना हाढे काह होर छ अने हय कह होय हे हु
 हो बेट्टु कहु के सौअे आवा उत्तम काममा पोतानी मदद करवी जोइने

“ आवी आवी धार्घल्लां अमारो याय नपी ”

-[व्याख्यान ४]-

राम सारा हता, माटे रामराज सारुं हतुं ! रामराज माटे राम पेदा करो !

—००००००००,००००००००—

(प्रेमाभाई छोळ, अमदाबाद रविवार ता १११५१)

मोक्ष अने तेनो मार्ग—

आ वार्यार्थीनी महता शाने लहने ते जे आपगे मानव जीवनमा परमादयनी स्पष्टता करता महापुण्योना वचनने अनुयोरे समृ करी आप्यु ते जेमने मन मानवजीवननी किंमत छे तेमने मन परमपदनी उधना धिशाय चीबो कोई परमादय न होइ शके ते स्तेलाईयी समजी उक्काय तेबी बात हे, जने अे परमादर्शनी चिद्दी माटे जात्माने परमादर्शनी साथे योगी आपनारो जे योग छे तेनी उधना करतानु दिल एवा मात्रासने यथा दिनान रहे, अने एवा माणसोमा योगनी पूर्व भूमिका तरीके आएगे जे उग्गो वणव्या ते तेनामा का तो स्वभावविद्द होय अने का तो ते केलवणानी देने लगनी होय

मोक्ष प्रत्ये अदेष्यभावनावालो आशीपरूप छे—

योगनी पूर्वभूमिकामा आपगे जे उग्गोनु निरूपण कहु, तेमां आर्य देणनो मानवी, भले ते बीठ काहि न करे, परदु आमा ओतप्रोत यपेलो होय तो दुस्मन पन तेनी सामे जागली चिंधी शके तेतु तेतु वर्वन होय नहि, वली भले ते मो जने न समजतो होय उता पण तो तेने मोक्ष प्रत्ये

अद्वेष मावना होय तो ते मानवी जगतुने माटे आदीरस्म छे, शानीओभे
यो कहु के के-चेनामो मोक्षनो अद्वेष नपी तेनामां गुणो पर दोषम्य
नैरंदे हे, अने मोउ परलो अद्वेष दोषने पर शुग्ल्से उम्बावे हे ते
श्वेदे वे उदाचारोनु आपने ख्यन क्युं ते स्थार्यो नहीं पर पर-
स्थार्यो आचारमयो उसर होउ जोइये, स्थाप खातर वडीलोने बद्न बर-
नर लो आजे पर पगा मळी आरये, परनु पोतानी शुद्धिता के कर्मने
पगे वे कोइ बदाल मध्या होय तेमना प्रये पूर्यमार हैयामां बेडो होय
गौ ते नि स्थार्य गुण हे

ससार असार हे—

मोक्षनी वात साधकता घग्नाने थार हे के-त्यां शु हाय हे ! जेम भूख्याने
थागनु, वरस्ताने पाणी अने भोगभूख्याने मोज-शोख याद आव, तेम जा
भौगमां भटकी सानाराओने मोक्षनी वात आधता तेमा पर भोग सामग्री
जोईती होय हे आधी मनोरुचिचालाओने शानीजोभे मोक्षना देखी तरीके
वर्द्ध्या हे जेमने मोक्षनी वात गमे छे, ए वात जेमना हैये उतरी हे, तेमने
देव भोगमागना इथाक होय तेवा, गुरु दर्शक होय तेवा अने पर पग
मौख नजीक लहू जनार होय तेवो जोईते के रामायणना बधा पाथो आया
देव, गुरु अने घर्मना उनाहक हता हो प्रभ ए हे के-जा माटे आव
देवमा मदायुस्योभे मोक्षने आटु बहु प्राधाय आप्यु हे ! ये माटे शानी-
ओभे कहु हे के-उचार जे धार विनानी चीज हे, कारण के तेमा जीप्नने
बेउ होय तो पर तेमे माटे स्थान ज नपी आनु द्रष्टात वास्ते पोते ज
ठोभे तमे विचार करो के-आ सुषिमा आव्ये अपगने केटला करो पया है
ने हदु केटला वर्षा रहेगाना ढीभ ! जो तमने खरेखर सात्री हात के पाडा
जगनु ज हे, तो तमारी तेयारी पाछा जवा माटेनी होय के आगळ ज्वा
माटेनी र जीव मात्रने सदा जीवता रहेगानी इच्छा हे मरमानी कोईनी
इच्छा नपी त्यारे आ सहार एरो हे के कोइने सदा जीमगा

“यां जीवभावने सदा जीवनानी न इच्छा हे ते कदी पण फल्लीभूत
शके तेम नथी तेमने माडे आ साथार सारभूत के असारभूत ?

सारभूत वस्तु मोक्ष ते—

बळी जापो तो भेटना यधा स्वार्थी धन्या छीओ के भीजा जीवो
जापणी माझरु सदा जीवया इच्छिता होय ते मानवा पण आपणु निहुर
तेयार नथी आपगा देशमा ‘ आत्मवत् उर्बंसूतेषु ’ नो जे आदर्श हे
शु मिथ्या हे ? नाना जीव करता तो वहु बढ़यान् छो माडे तमो तेम
नाथ परो ? सहन करवा माटे धम निर्विकल्पो के बड़वाननो होय ? बढ़
वाननी शक्तिनो देतु निरचना रक्षणनो होय के भक्षणनो ? मारी मूळ वा
ऐ हे के—जीवमात्र सदा जीवनानी इच्छावालो हे पण तेनी इच्छा कदा
पूरी यई नथी, यती नथी अने कदापि यवानी पण नथी माडे साधा
जसार हे जो साधार असार हे तो ते जगहमा चीजु सारभूत गु होय
मानवी माडे मोश ए सारभूत यस्तु हे, तो असारमाधी छूटीने सीने सारभूत
त्यक्ते पहोंचगानु हे ते वात नफी हे “सा विद्या या विमुक्तये” मां मुक्तिर
शी चीज हे ! जाने शाळा, कोलेजमार्ह जे शिक्षण अपाई रहयु हे, ते
मुक्ति माटेतु हे ! ए विमुक्तये शब्दनो सार शो हे ! दु जा शब्दनो
अर्थ मुक्ति भेटक्के आत्मानी मुक्तिच-मोक्ष कर यु, मारे सीने मोक्षां
अभिलाधी बनाववाना हे

जेनी साधनार्थी माँग्यु मळे ते देव नथी—

एक वार आपणन मोक्षनी अभिलाप्या यई जाय पछी आपणने अमुक
अपाये ते देव, आपणा माडे अमुक करे ते गुरु, अने आपणी इच्छानुसार
बोधे ते धर्म एतु कश्च नदि रहे एवा माडे तो एवा देवनी शखना होय
के जेना स्वरूप माघने जोवारी तेना आत्मानी उनति याय आपणे तो
आ साधारमा परनारा प्राणी छीओ मानवीनी रियति एवी हे के “मेलब्यु



ऐ, भोगब्यु धोड़ु ने एमने एम हात्या ” माटे आ सहारमा दु यन्हि
ई किमत नयी, पग उदाचारनी धणी घोटी किमत हे बर्तमान काढनी
रणी वारो लेजी ते के तेपी माणसने सनेपात थाय धर्मने कठिन क्षी
क्षीने आपगे ठोकोने धर्मयी विगुख करजा न जोईने आपगने एक बाजु
वगडनी साद्धनी मढती होय अने बीजी जातु धर्म मढतो होय तो,
पहचनी ने लात मारवानी ताकात आपणामा होवी जोईने साद्धनी माटेनी
हृतिने बोधनारो देष के गुह जापगने न जोई, जने आगी वस्तु साये
गापगने अनुरूप बनावे तेवो धर्म पण न जोईये शाळे फहु ते के-जेनी
धनाधी भाग्यु मळे ते देव नयी मनमा इच्छा चालीने देसी भमित
रीथे तो ते भावित ज न कहेवाय

महादुखनु साधन राग—

इवे मुग शेमा छे ते जोईये रागधी मुरल मळे खण । दरेक नीव मुखी
हे खरो ! लो पठी जो रागमा मुख आशवानी शमित होय तो जगतमो जीव
भैम मुखी नयी । राग अे तो महादुखनु साधन हे आपगे जापणा हैयाने
एउ बनावकु जोईये के जे चीज जापगने मुखी बनाये तेनीज चाढना थाय
रोग मुखनु साधन नयी, माटे दुनिया दु ली हे कोईनु पण काई लेवानी
इच्छा, के ते प्रत्येनो स्वार्थ सेनु नाम राग जगतमा मनुष्यमा जेट्ला बोडा
रागादि होय तेट्लो ते ओडा पापनो भागीदार, जने जेट्ला वडु गागादि
होय तेट्लो ते वधु पापनो भागीदार थाय, आपगे मुदेय, दूङ्ड वन
मुखमने जेट्ला माटे शोधवा छे के-उठारनी आ बीजी नमामन ।
आपगे नमरीने मोशना भागे जह शमीने जम्या ठीने कटे दूङ्डनु ते
छे, जने जीवगा माटे केट्लाक साधनो जम्ही नवाववान्द्रजु ते, दूङ्ड दूङ्ड
जीरयामा जाधार पूरताज होवा जोईये राजी दो भ्रातृज्ञान दूङ्ड दूङ्ड
आरमाने ऊचो चुन्नु तेरा धर्मनी हे

जन्मपरणनो रोग—

तमे धधा रोगी छो, ए रोग तो हो ! ए रोग हो बनवानो
 भरवानो आ रोगमायी तमारे उगरवानु हो सुखदुःखने जनुभस्तानी !
 जह एवा शरीरमा नहीं, परतु आत्मामा होय हो जे आत्मा परमदेह
 हो तेने मरवानु के जन्मवानु नथी होद्दु, पण अदरना विषनन
 आत्मा ज्या त्या भटकी रखो हो, ते जन्मे हो, मरे हो, ने सुखदुःखनु
 करे हो ते पापना योगे दुरी पाय हो शरीरमा सुखदुःखना तेस
 शक्ति नथी पण आत्मायां ए शक्तिह हो, अने तेथी जन्मपरणना रोगमा
 आत्माने मुक्त करवानो हो रामराज्यनी वातो करनाराज्योए आशी
 जोईबो के राम चारा हता माटे रामराज्य लाल हतु तमे आप हूँ
 तो बधु लाल यशो तमारे कोने लावगो हो ! रामने के रामराज्यने
 अने आ राम तो तमारामाज बेठा हो, तेने वेदा करो ! कर्मना इष्टन
 योगे आपगे जन्मपरणना केरामां फर्या करीबे छीबे, अने जीवन
 दरम्यान अनेक उपाधिन येडिबे छीबे हवे आपगे ज्ञानु पण नवी
 अने भरतु पण नथी जेवान्ह माटे मोक्ष हो तेने माटे सुदेव भे
 मोक्षमार्गना स्थापक हो, सुगुण ए मोक्षमार्गना प्रचारक हो, अने पुष्टवै ए
 मोक्षमार्गनी निकट लहै जनारो मार्ग हो योगनी प्रथम भूमिका उत्तर
 चाषुओ होय हो, अने चीजी तथा नीजी भूमिकाने गृहस्थो होय हो
 प्रभोधी बटाउशो नहि—

समामां पूछाता प्रभोधी क्याल्हो नहै ददाढदा मताव्योना ओता
 जनोमायी चुदा चुना पनो उभा चाय ते स्वाभाविक हो, परतु तने लूँ
 चातिधी अने उहानुभूतिरूपक धामल्लवा जोईबे, अने धित्सपद वर्तन समाजे
 राखतु जोईबे.

-[व्याख्यान ५]-

ससारना समग्र दुःखनु कारण एकमात्र — राग छे —

दवतत्त्व, धर्मतत्त्वने शुद्धस्वरूपे चतावनार गुरुवत्त्व छे.

(प्रेमाभाई हॉल, अमदावाद रविवार ता १६।१।५१)

परम आदर्श मोक्ष—

अनव हितकारी महापुरुषोंने जगतना जीवोना कल्याण कागे जे वातो
परमावी छे, तेमा सीधी प्रथम वात ए छे के, आ सुषारमा मनुष्य
जननी प्राप्ति थपी दुर्लभ छे ए मानव जीवननी प्राप्ति पछी भानव जीव-
नना परम आदशने समजावनारी सामग्री सहु जीवने मछडी नयी, पण
जेने भले छे ते जीवने परम आदर्श मोक्ष ज होइ शके ए समजावनु
फटिन छे जेने ए मोक्षनी वात समजाय छे अने परम आदर्शने साधी
बाये अबो जे योग अने ए मार्गे चाल्हु ए दुष्कर छे, एठे आ जीवन
द्वारा परम आदर्शने योकी आपे हे योगने पासवानी लायकातबाला गुणोंने
पूर्ण भूमिका वही छे आ गुणो जेनामा स्वमायखिद होय ते परम भास्य
शाळी छे, पण जेने ए स्वमायखिद न होय ते आ गुणो साभकी एने भेड
चयानी इच्छा अने प्रयत्न करे छे, अने भेडवे उए आत्मस्वस्मनो शोधक
चने छे आ स्वस्य शु होइ शके हे जागवानी ईर्षेवारी जागे छे अने आ
सुषार एवा जीवोने असार लागे छे जे बघनमा ए पढ्यो छे तेना प्रतापे
अने सुषारमाधी लूट्यानो कोई उपाय नही जे ढाढ्हा माणसोने आ
गुणोनो अभ्यास छे, ते बढालीनी आडा, सदाचार, नाना प्रकारना तेपनु
सेवन अने मोक्षना चहानारो छे, तने सुषारनी असारता

वक्ती पड़ती नथी” आ सहारमा ते केम, केवी रीते अने स्वाधी आब्बो ते जापतो नथी आपणो जन्म समय पण मा-बापना कहेयापी जाणीभे छीअे, जम्हा पट्ठी केम उठार्दा ऐनो रखर नथी समज आब्बा पछी जै सुखार चलाब्बो छे एमा धर्गु मेलब्बा पट्ठी धर, पेढी अने मुरली सामग्री जे सज्जी छे ते तु जवानी इच्छाथी सज्जी छे। आ बधु परोपकार माटे मूकीने जवाना छो एवी इच्छा छे ? जे मेलब्बा जिंदगीभर महेनत करी, ते जहिन भढे ए इच्छा उता जुँ पढे क्या जवानु छे तेनी रखर नहि एसो रिथिति जीवने खटके के नहि। सारा आत्माने ए खटके अने परिणाम सहारनी असारता समजाई जाय

सहारनी असारता—

तमने सहारनी जसारता समजाई छे खरी ? समजाती होय तो अनाधी शूटवानी इच्छा छे ? इच्छा होय तो अनाधी शूटाय अेवी शोध करी छे ? जो जाज रीते जन्मतु भर्खु अेम चाल्या करतानु होय तो ते अशान जीवने शोभे, शानीने नहि, आमाधी शूटवा देवाधिदेव, सद्गुरु, अने सद्गुरुनी जरर छ

एवा देवनी जरूर छे—

आपले देवतत्त्वमा मानीजे छीजे ने ? हु जगतमा प्रीडा करता देवोनी वात करतो नथी हाय जोड्ये खुशी यनारा देवोनी पण जा वात नथी, आपणी भक्तिची सोपाय अेवा देवनी पण जा वात नथी, पण जे देवो रागद्वेषथी पर छे, सपूर्ण शानना स्वामी छे, जगतमा मोक्ष मार्ग मूकी मुचिष्पदे गयेला छे, कदी अहो पाऊ जावगाना नथी अने सदाकाळ पोवाना स्वरूपमा लीन छे एवा देवाधिदेवनी वात ते

‘भाषणा देहतु भतु थाय’के ‘माग माग जे मागे ते आपु’ अेवा ने ए ? देव नोइने, के आत्माना तोप माटे देव जोईभे ? मोक्ष माटे देव

जोईं तो मोहि शुद्धिरूपरीन्साते- बताव्यो- होय तवान्दीवेन्हीवर्द्या ने^४
ए देव जागली चर्चीधीने बतावाय जेवा नभी, पण अेनु स्वस्म नतावी
शकाय

दुखनु मूळ राग—

दुख आपनारो- राग छे कदाच तमने लागतु इतो के मुखनु
साधन राग छे, पण अेम नयी राग होय त्या द्वेष आवे अने ए वे बेडा
हाय त्या अरान, क्रोध, लोभ विगरे कपायो आव्या विना न रहे राग
दुखदायक लागे बीतराग देव मञ्ज्ये, राग मुखदायक लागे देव मञ्ज्ये
राग खराच ते अेम या सुधी न लागे त्या सुधी अेने सालिक
नहि बनावी शकाय पण रागने सालिक बनावी दुरागी मूक्यो
छे ? गुरु रागना रोगथी बचवा के जीववा अेने सालिक करवो
छे ? आपणे नोना तरफ ममता रान्धीअे ठाने, बीतराग भावना पर
के रागी भावना पर ? आपणे एवी बलुयी राग करीने हीने के सारो
माणस भागणे न चढवा दे ने रागे मानवाने हेवान बनाव्यो ते जगत्
आजे जे धाघलमा पड़ा छे ते ए रागनु परिणाम ते, रागमाथी लोभ,
मोह, मद, दिला, जस्त्य, चोरी, बदमाशी, द्वाराहश्चिं ज मे ते जबा
अेग नाटको नम्ब छे के कोई जोइ न जाय तोज आवस्त रहे ए रागने
योगे बेटो बापनो, 'मा'नो जने बढीलनो न रहे, मिनानो साथी न रहे, जने
सगी खीनाय न रहे जा अटडा माटे कहु द्यु के बतमान काळमा तमारु
व्यु प्रियगत्र खी छे ज्या सुधी राग ए भयकर शरू ते जेम न लागे,
अने ए रागयी बचाउया देव अने गुरु न मझे त्या सुधी ते बीतराग भनाव
अरी भावना न जागे, जने ए भावना न जागे त्या सुधी यधी यातो हैवाना
मार्गानी छे तो जा रात समजाय तो रामायगना पात्रो नीठा लागे, झु
अहि कथा करतो नवी पण तमारा जीवनवा परियन माटे प्रथाउ कह
द्यु मात्र लोहरजन् माटे कथानी शान्त्र मनाइ करी ते शान्त्र बनावि ते

के सात्त्विक राग बिना योगनी पहेली भूमिका न आवे सात्त्विक रागने दु
मोक्षमार्गे लई जगानो छु भेवा रागनो निषेध हे जे जात्माने बधनस्थ हे
जेणे जात्माने शरीरमा पूर्यो ते तेने दूसरम् शरीर कहीजे छीजे तेना सर्व
नदार रागनो विरोध करीजे छीजे जावा रागथी न रीचातो होव भेवा
भाग्यशाली कोक दृश्ये त्या सुधी सत्तारमा राग खराच हे अम न छागे,
जे रागे घणाने भयकर स्थितिमा मूक्या हे अने ए दूष्या बिना सत्तारमा
सातु सुप्र शक्य नथी अम न छागे त्या सुधी बीतरागनी भावना न जागे
जेठले जा भावना जगाउवा बीतराग देव जोईअ आ हे देवाधिदेव, जेने
रागद्वेष पीढवा नथी रागद्वेष जता सपूर्ण ज्ञान पेदा थाय हे परिणामे
फोष लोभादि दुर्गुणो आपता नथी आवा मार्गनी स्थापना करनारा
देवाधिदेवनी कोटिमा नूराय हे बधा राग जापणामायी काढी ए देवाधि
देवमा स्थापिअ तो रागरोग नाश पामे आवा देव जोईजे ने । तमे शु
भम्या अन नाळसोने शु भणावो छो । मानव जागनमा आवेला जात्मा
देवाधिदेव जने सद्गुरुने जोळखे भेतुज भणावो छा ने । गेहु शिशण न
जापता हो तो रामायणना पामो कई राते समजाशे । राम ए हे जेना
पिताजे जोरमान माने वचन आप्यु अने रामे ए जानदारूदर्श स्त्रीसायुं ।
तमे एरा राम ठो ने । आ बवा पाश्रो देवाधिदेवना उपासक हता, योगनी
पहेली नूरिमापा पर जीपता जापो हता भेमने समजावडा आपो सद्गुरुनी
स मुख रहीन, रागनी सारे रेता उना नेनी भेके सलाह न मानीजे
ददारगूरुर विरागथी जापिने तो ए पाश्रो समजी शकादे राग पर विजय
नेव्याय तो बधा दोषो ज्ञाय, रागना योगे सगा बापने मूरुनारा आ सभामा
हो खरा के नहि । रागद्वय पर अधिकार भेडरी जेवे ए विरागा, पण
ए तो बीतराग करी शके जे ताप पामे ए बीतराग नहि जन भक्तिधी
शोष पामे तने देवाधिदेव अने न गी फहेता देवाधिदेव हो कही गया हे
के-जे हे ते मूरे । जने जे मूरुनारा कही गया ए आपे तो ए देवाधिदेव
नहि आपमे भोग मार्गे बागळी चौधनारा सद्गुरु जने सद्धर्मनी

सासुल यहैए तो जग जीती जहैए जे देव, गुरु, धर्मपर राग करे हे, तेमनु घर साह नहि चाले अंको भय छे नै ? पण रागी जेतु घर चलावे अथी साह पर दिरागी चलावी शके हे आर्यावर्त तो अनासुल योगीबोनी भूमि हे आ देवमा चन्मेला जीवोनी महत्ता ए हे के गमे तेतु साम्राज्य जेनी आगळ जावे तोय वहे के इच्छा नयी, अने ए साम्राज्य सजोगोबद्धात् हाथमा आवे तो एतु चलावी चतावे के जगत् ताजुब याय, राम बीतरागना सेवक हता जेट्ले राज्य साह चलाव्यु बीतरागा अट्ले सखारना, पदार्थना के मायाना विरर्गा

सुखी रथा मुधी ?

तमे तमारी चातने ननुकूळता मझे त्या मुधी सुखी भानो ऊ, अने अथी उलटु बने ता दुखी मानो छो नै ? आ तिथिति कादवानी हे अने अथी रहित बनेला महावीरने जमे देव मान्या छ केम के ए जरिहत हता ए जरिहत न होय तो अमे वहीने के ए महावीर जीजा जेनामा भयत उपर तुण यगानो पण राग नहि अंजा ए देव भस्तिथी तुष्टमान यनारा पण देव हे पण तेबो पुण्य उपर तुष्टमान याय हे आरिसो स्वच्छ दरो वो अंगा होय तेतु देवाय ढांधो होय तो य ए नतावे, जेज रीते बीत राग देव हें, ए हीराना हार चढाव्यावी तुष्टमान न याय पण मने मझेला हार राख्या ए भूइ कर्तु जेम याय अने जेनो उदुपजोग जमने चलाववा नाटे याय ए भाजनाथी के ए हीरा भूलाइ जाय, पण जेझ चडावी चार हार मागवा जेनो जर्य काई नयी जो प्रभुने खुश करवा भक्ति करो तो ते भिक्षाम भक्ति न होय मा चाप तरने राजी करवाना हे माटे तेम करे, पण राजी के नारानी न याय ए मात्र जेक बीतराग हे माटे जग तना अने तमारामाना ओके दोष जेमनामा न होय ते देव, जेट्ले दग्ने हु दुखीयो छु जेम रुदेशो नहिँ-भुरा पाये हु दुखी छु जेम रुदेशु होय तो कहेजो जैन आरसो ३३३ माटे अने ए ढाप कादवानी

केढ़वा माटे हे, त्रेज प्रमाणे वीतराग देवनी जहर हे अमनु स्वस्य भेदु
 हे के तेमा आपणा दोयो देखाय ते तमे वीतरागनी प्रार्थना करो छो
 केम के तेमनामा जातने जोई शब्दो तो ज्या सुधी उखारमां लाम, हिंसा,
 अनाचार बगरे हे त्या सुधी वीतरागनो कोईने खष पढ़तो नथी रागादि
 जये तो ज वीतरागता जावये दुनियाना पदार्था उपरनो राग इच्छा पेदा
 करे, इच्छा पूरी न थंता दुर्य याय, बधानी इच्छा काह फळे नहि,
 अने ते चीज जापणी न होय, ते माटे इच्छा अने महेनत कर्या उता न
 भळे भळे तोय सुप जापे नहि, साचामा उता रहे नहि, जेने मूकाने
 जानु होय ए चीज गु कामनी ! वीतरागे राग खराब कल्पो हे अने
 तेथान अमे पण राग खराब हे जेम कहीभे, छीभे जेने फळे वीतराग
 नहि तने वीतरागना सेवकोनी कथा पण येम गमे ? जेने दुनियाना भोग
 गमे आजे जगत् राजा या करता वऱु रोइ रऱ्यु हे जगत् कोई दिग्गज
 मुखी हऱ्यु नहि, अने होयानु नथी जगतमा तेज मुखी हता जे विरागी
 हता वीतरागना उपासक हता

ए रागपाँ रम्तु सारु नथी—

आजे दुकडा रोटलायी रीशे नहि रूपाळी रमीली मळी जाय तो मोज
 करनारी जात पोतान मुर्ही माने हे, पण पुण्य होय तो रमी, 'सपत्नि के
 यमलो भज्या होय एमा राजी छ यानु ? ए रागमा रम्तु के रीत्यु सारु
 नवी, पण रागने मुख्यु नाण मानमारा आ जगतमा वेहोश घणा हे
 वीतरागे कहतु हे के राग जेवो भयकर काह शत्रु नथी रागदृप भेगा
 यता काम, कोव लोभ, जस्य, चोरी जमे हे, हिंसा ज मे हे, जा धधा
 दोयो देवमा न होय देवना दीनी राजी यानु, देवा रानी यरवाना
 नहि सद्युधनी जहर जात्मानी तपास माटे हे, शरीरनी गदि देव मो ?
 मार्ग स्थापी भोक्ते यदा तन गुरु प राधेतो सदे तो कहे हे भगवनक
 जरा रेता जनासे दापत घेरे हे

गुरुतत्त्व—

बीतरांगे इवे गुरुतत्त्व भेदु निष्पत्तु हे के बेथी योगनी पहेली भूमिका पर आवतु पडे बन्म-मरणनी इच्छा न होय अने भेदोऽउपदेश आपनारा जने शाळ कहे ते के देवताव, धर्मठन्नने उद्द स्वरूपे करामनार जने मलीन न यथा देनार एव गुरुतत्त्व हे गुरुतत्त्व खामीभयु बने तो देवतत्त्व जने धर्मतत्त्वमा गरबड घाले, अग्रे गुरुतत्त्व निर्भेठ जोईअे साचा गुरु ए के सारांगा भेदु कोइ नहि, ए कोईना नहि माने तो बधाना ए चोले तो धर्मतत्त्व बोले एव गुरुतत्त्व चोक्यु रासगा गीतराग साधुधर्म सदाध्यो हे, पण ए सबोधेलो साधुधर्म नावरनारा बाढा मछे ठे नम देवमा रागादि दोष न जोईजे तेस गुरु ए रागादि उपर चाकी रामनारा बनवा बोइने, गुस्तु लभ्य ए के ते महाकृतधारी होय, ते पाच महापाप त्याग करे, करारे महाकृतने प्राणात न तने अेवा धीर जोईजे अनो पालन माटे ए भिक्षाधी चालाव, ए माटे भित्ताने माधुररी कही हे, गोचरी कही हे, साधुने माटेज बोइ वसु बनी हाय तो ते तन न खपे, गाय चर ल्या घास करी ऊंगे गदो चरे ल्या साक यहं जाय लोक जमे जेमा ए साधु जीवी यके साधु भिजा लेवा ने मारवा जाय हे एक सर्वमुश्टी नने चीडु तपोपुष्टी सरी साधुता ए कहेवाय के जे जगत् मात्रना नीव दर प्रेम केव्ये पद्भजीयनिकायना हिंसात्यागनी प्रतिशा करे, जीव मात्रने हानि न पहोंचे अम वते साधुनो चीजो गुण “ सामायिरस्य ” जेटले शशु-मित्र समाज जेवी प्रवृत्ति आत्माना गुणोने शीलन्वा माटे होय ए ममत्व ने माया मूकाय ए रीते जीरे ए हे गुरुतत्त्व, बीतराग सिवाय देव नहि, महाकृतधारी शिवाय गुरु नहि, भोक्षनो उपदेश जाने ते शिवाय धर्म नहि येतो दृष्टि दाकतो नपी माटे दान धर्मनो उपदेश कद्मो हे, ज्या दान होय ल्या कोई दीन दाय नहि जे शीलधर्मवाढा होय, सर्यमरेवी तपस्ती बने, अने चीतराग दशा पामवानी इच्छागाढा होय, आ घ्येवगङ्गा रामाकर्णना

पात्रोने समजी रक्के, ऐना पात्रा देव, धर्म ने, गुरुतत्त्वने समर्पित हवा-
यागनी पहेली भूमिका पर आवी शके नहि, पण त्रीजी भूमिकावाला चधा
चीनी भूमिका पर जीवनमी इच्छा रखे ते ऐनु उत्तर जीवन जीवे छे ते
रामायणना पात्रो परथी समजादो था देश तो मोक्ष साधनानो छे अहिं
जामलोने मोक्ष साधना शिराय चीनी साधना गमे नहि ऐनु मानस होइ
जोइओ देव, गुरु, धर्मतत्त्व समजु होय ते त्रीजी भूमिकामाथी बीजी
भूमिकामा जावे पण तेमनी ननर तो पहेली भूमिका पर ज होय

-[व्याख्यान ६]-

साचा गुरुओज आत्मानु ज्ञान आपी रक्के
प्राचीन ममयमा गभमो नाळकोने सस्कार सींचाता हवा

—○○○○○○○○○○○○○○○○—

(प्रेमाभाई हॉल, अमदाबाद रविवार ता २३।१।५१)

आत्मानो सप्त—

अनत उपनारी महापुरुषोजे मानवज म लारामा सारी रीते जीवाय के
मानव जीवन पामेला जात्मानु ने साध्य छे तने छिद करे ऐनु जे कछु
तेनी बातो कहबाह गइ छे रामायणमा जा जात्माना सबधनी बात कह
रीते ठासी ठासीने भरी छे ऐना यिचार दशरथ रोजाधी माडीने जे ज
महत्त्वना पात्रो जावे छे तेने लड़ान करवो छे, अने भेटला भाटे आ
चधा यिचारो गोठधी लीधा के आत्मानी सुस्तित मानव जीवनमा साधी
यक्षाय छे ए भाटे मानव जीवनमा परम आदय तरीके आत्मानः

मोक्षने—परमपदने निश्चित क्यों अने आत्माने मोक्ष साथे योजी आये जेवी योगनी पहेली, दीनी अने प्रीजा भूमिका वणरी योगनी लायकात आपनारी पूर्व भूमिकानो विचार करी जे आत्मा योगनी पूर्व भूमिका तरीके जावे हे ते आत्मा स्वस्थनो शोधक बने हे वा रीते ज मतु, जीवतु, मरतु जेना करता आत्मानी सदा स्थायी त्विति होनी जोईने भेवु पुरेपुरु हैये ऊने अने आत्मानु स्थान सकार नहि पण मोक्ष हे ए वात जेने रहे हे तेने माक्षमागना स्थापक मुदेव जेना प्रचारक सुगुरु अने मोक्ष ए शी चीन हे ते जागरानी इच्छा जागे दधरय राजायी माडी रामायगना बधा पाओ योगना ताजा भूमिका पर हे योगनी पहेली भूमिका परना माननो जगतने जाशीर्दिरूप होय हे अने सुगुरु सुधम अने मुदेवमा निश्चित बनेला माननो नगत् माटे जाशी वादरूप रहे जेमा काह नगाह हे ?

शब्दव्यभिचार—

आने नगतमा केवी वातो चाले हे ते बधाना मगजमा हे, अटले मारी गावा तेमा देसती नथी सेवा तु, ए कोने कहेवाय, उगा औनी याय ए पण समजवानु हे अजे शादव्यभिचार घओ चाले हे केवो शाद कथा योनगे जेनी समज नथी हु मातापितानो सेवक छु जेम कहो तो ठीक पग हु धमदलीनो सेवक हु जेम रहीजे तो ए शब्द जस्थारो वपरारो कहवाय मानव जापन माटे महापुरुषोने जे वात महारनी लागा हे, जेना परोपकार तुदिया शाळो रख्या हे जाजे जगत् दुखा हे जे भुद्र जनुओ जीने ह, मरे ह ए जा जापाणी हाटि समक्ष आऐ तो ते आगङ्ग मानव उख्या न जावी हे महापुरुषो ने लासोपकारी वातो ते कहाच हैये न रहे तोय तेने हैरे स्तिपर करवाना प्रयासो उख्या जोहन् मानव गमे त हियतिमा होय पग सार जीपन जीवा कयु ध्येय होउ जोईअे ते तेजे रिचाखु धे मोक्षन्हु जे ले सकारना फोइ वग—

पदार्थनो अर्थी नहि भेवा पदार्थनी जहर पडे तो ऐमा ते पामरता जबे कदाच ए पदार्थ मेलवावो पडे तो, ए माटे भेने लागे के हजी शास्तनो विकास थयो नथी तेथी जा पराधीनता छे, अने आउ जेने लागे ते मानव दुखमा निमित्त थाय? ए तो बीजाना सुखमा निमित्त थया बिना न रह भोक्ष परनी दृष्टि दसेहो तो मानवनु कणु घेय रहे छे? शु बधामा उपकारबुद्धि छे ररी? जे पेदा त्यारे ज थाय ज्यारे पोतानी जातने भूले नात त्यारे नूलाय ज्यारे ऐम लागे के आत्मनि काइ जोईनु नथी जे जोईओ छे ते शरीरने जोइओ छे, आ आत्मा रीरमा बेटो छे, माटे मिन्नारी छे बधा शरीरधारी जीवी शरीर मिनाना थाय तो ज साची रीते मुखी थाय शरीर सूटी जाय अटले शरीर मिनाना थर्ह जईओ छीजे खरा? मरवा पढीगु त्यारे जगतनी कोइ चान अलर नहि करी शरेने? तमने प्रेमभाव के ममत्व जगतना जीवो प्रत्ये छे ने? जगतना सो जीवो प्रत्ये प्रेम छे जेम थोही शक्वानी रितिमा तमे तो खरा? तमने शेना पर प्रेम छे? तु नशाव जाओ?

सेवाना यात—

जापणे सेवानी यात लोनो कहे छे ऐम नथी वरदी, पण अनत ज्ञानी-ओजे यरी छे ए रीते करवी छे, अने रामायणना पात्रो ए राते जीव्या छे, माटे भाष्ये अहिं तेमने ईश्वा छे त्यागीजोनी यातो तो बीजी पगी छे पण ए भारे पदे भेत्री छे सुदेव-सुगुरु अने मुधमना सेवक बनी चूकेला औ तमारा करता पण बधु मुर्ती भेवा जीवा भीक्षना जादशने आर चामे रागी कई रीते जीया अने तमनामा केवो मैत्रीभाव-सगाईवधी साये क्वो सदध, केवो भाव हस्तो तेक पात्रो तमारी समक्ष रामायणमाथी मूँख्या छे मोग उिवाय चीजो जेना जेके आदश नथी जेने मानवीना आदश तरीके स्वाकारी शकाय, कोई पण पदार्थनी इच्छा दुख पेदा करे छे जने ए दुख पेदा न थाय ए माटे भोक्ष ज जेक जादर्ही छे आ

आदद्य हैये समाय अने कोई चीजनी इच्छा पाय त्यारे हैयेपी अवान
आवे के ए इच्छा व्यानदी नर्या मोक्ष सिवाय बीजी चीख नथी आवी
आत्माने सलाह जापनारु नगा मोगनी पूर्व भूमिका पामेला जीव हे ए
भूमिका मेलवता खरपडता जावने सुसारनी असारता समजाय हे ए
असारता समजाया यिना सदाचार न आवे जे कोई दुख अनुभवता होय
तो ते स्व, रस, गध, सर्व जने शाद ले पचनोपने कारण छ आ पावे
उपर्नो रग जेने न ऊटी जाय, आ उपर्नो प्रेम जन कुनी नाय दमन इच्छा
मात्र दास्त्र लागे, अने जेम याय ता काप करता जेतु न रहे मानव मात्र
याप हाडे तो जगतनी अशान्ति जाय स्व, रस गध, सर्व अने शब्दनी
इच्छान मोगना आदाचालो पाप माने हे परिजामे मोगना स्थापक देव,
मोक्षना प्रचारक गुरु जने ए मार्ग लइ जनार धमन त्र मुदर, मुगुरु अने
मुखर्म माने हे जे ऊँा पाचना इच्छान पाप मानवा होय ए दिसा कर-
वामा रस न ले आरा बधा याय तो ते अगगमती बात हे, पण जावा
बधा भया नथी, याय द्वि भन यवाना पण नया कदाच याय ऐवी
समापना करीभे तो हैयान शाति याय के अशाति ॥ आपणे भले जग-
तनी जसापदारी न छइने पण जातनी जगावद्धारी तो लइ शक्तीभे ने ॥
अने जी लहने तो अपादि पाच जे उपर कछा, ते माडे मरीभे तो मानु
के बापणे मूरतो छी तो

गुण रुइ भीम्ब मार्गी पेलववना नथी—

“यो मुधी मो ॥ आदर्न न बने जने ए याया पढी हैयामा मोक्ष मागना
स्थापकने, जेना प्रचारकने जने थेना धर्मने अनुत्तरवानी तालापेली न
लागे या मुधी ल्यादि दोबो तमने ओबद्दो नहि मोठा रायना मालिक
छती, अपादि भागवता होया उत्ता जणाने घरते जेमने छाडवा नाहे अखर
न यह नेना जादश ॥ पूर्व दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत,
शत्रुघ्न ते साम्राज्य ॥ १ ॥ इच्छे तेतु स्व, रस, गध शब्द-

स्वर्णनो भोगपटो करी शकता हुवा, उता आ पांचे जेमनी आगळ पाप कराववामा निष्पळ नीवड्या अवा महापुरुषों आपगे नहिं लाववा हे आ स्पादि पाचमां भान नूळाव जेवी शक्ति नथी जेम वरनार हे कोइ ! जे जा पाचमा लोभाय हने जगतमा ऐतु अेके पाप नथी जे करता दल लागे रामायणनी कथाना पात्रो यांधे तमारी सख्तामणी करवानी हे येम के तमन राम चनाववानी पणी इच्छा हे भले समे राम न बनी शको पण तेमना जादशने पण जो जनुसुरी न शक्तो तो ना कथाना काहे अर्थ नहि महापुरुषों क्या जेठना मठि के तेमना गुण गारानी तक मळे जे गावाधी गुण आये अने गुण जासता दोष जाय, जे माटे तमारा हैयानी भूमिन भारे धसर्वा पढे हे अमा निमळता जाये तो गुण क्षट रेखे गुण काहे भीत भागी मेळववानो नथी स्पादि पात्र माटे भीत मागवी पढे पण गुण माटे नहि केम के जे तो जापना आत्मामा बठा हे आपण गुणना मालिक ढाये, पण ए प्रगट जटला माटे खता नथी के आपणी आये पढळ आन्या हे तमे हैया जेमा निमळ जने चोकवा करो ते रामायणना पात्रोना गुणो तेमा प्रतिरिभित थाय

ए पाच रहेवाना हे—

हन, रण, गध, शाद, सद्य जगतमा रहेवाना हे जगत् जनादि काळधी हे जन रहेवानु हे भले जेमा परिवतन जाय, पण स्पादि पाचनो समृद्ध रहे वानो उ, तेमा तमारा पर आवृण करे जरी शक्ति हे, पण व्यारे अेनाधी खेचाहे त्यारे रोईक शत्रुना फदामां पड्या छीअे जेम लागु जोईजे पाप करनारने पूळजो के पाप शा माटे रुये ! जन वा स्पादि पाच शियाय छावा माटे न रुये होय तो मुने क्षेत्रजो ! तमे पाप करनार उपर नहि, पण पाप उपर तिरस्कार लावजो ! पाप वरनार दयापात्र उ, पाप तिरस्कार—पात्र हे पाप नूळ तो ज लागे के ज्वार हैयु चोम्बु हो भोला गोला जो पाप करता होय तो अभग असहस्रारी दितिमा होय ते पाप करे तेमा

नवाई शी ? आपगे स्मादिमा सुख मानी बेठा तीने अटले स्थिति बदलाई हे रामायगना पात्रोने वीतरागे कई रीते नीस्प्या छे तेनी वाच कहेयानी छे, अमणे जे दोषो तब्या अने गुणो मेलब्या ए रीते आपगे दाषो तजीओ ने गुणो मेलगाज मा-बासे जे आप्यु नथी ते आ वातो आपी शके ते

तो अमेरिकामा जामतने ?

दशरथ राजा साम्राज्यना मालिक होया उत्ता, स्मादि पाच सामग्री ऊची कोठिना होया उत्ता तेमनो मोक्षनो जादय हवो, जने योगनी गीजी भूमिका पर इता, तेथी साम्राज्य तेमने पोतानु बनावा शम्भु न दतु, पण तेजो साम्राज्यने पोतानु बनावी शम्भ्या इता धर्माने जगतमा शूपडामा जम्भु पडे ते, तमे पुण्य यागे बगामा जम्भ्या, पण पसदगी करीने जम्भवानु होत तो अमेरिकाने पसद करतने ? दशरथ राजा साम्राज्य चलावता होवा उत्ता भेमा जाहमत नहाता कळा वधी शीख्या दता पण ते कळा वर्महीन नहोती ६४ के ७२ कळा शीखे पण धम, रम न शीखे त्या सुधी वधु नकामु अेम प्राचीन काळमा मनानु पुरेने पण पेढी त्यारे सोंपाती यारे अने परलोकनी शीउग थती, पापनो डर लागतो तमे पेटी कोने सोंपो ? तमाराधा घमणो उठाउगीर याय तने ने ? के कळा वधी शीखे पण ते धमहीन न होय तने ! पण आने ती धर्मा अेम माने छे क हु कह ते याजभी, बीजा करे ते गेरव्यानशी शासी जेने जेने शानी-जोओप्रे पाप वह्या छे तने तेने तोइ पण काळमा, कोइ पण सरकारे गुन्हा ज वह्या छे जेन नगदमा सुखे जीर्खु होय तने भेमा गुह्ये काह पोता प्रत्ये न करे अबी इच्छा होय ते

भणतर पाढ्यनो हेतु शो ?

तमे सनानने मणानो छो ते दिग्री लाईने आने त्यारे पूछो ओ के नइ

भण्टर पाउळ कया जीवननो निषय हीधो छे ! नथी युज्यु, ने मा-बाब
ब या छा । जेता करता तो रासीया रक्का हीत तो खाच तमे छाक्का
चोबरीने भणाव्या पण रिगाल नथी तमने जेमो निशाल होयो जोहंभ के
भणावेला सतान स्पार्दि पाउळ गुलाम नहि बने तमे आउ शीख्यु हे ।
न शीख्यता हो तो ते आर्यदेशना मा चाप मोटे लाउनस्य हे दशरथ राजने
पोताना सतान बन तुड्य प्रत्य रिगाल हतो राज पर बठा हावा छता ए
राइ नाइ आय अनी यात्री हती तमने तो घर राइ जाए एवा धास्ती रहे
ठे घरनी एक ईट जेवी नाइ होय जेता पर तमने ममता न होय, ममता
नथी अम वही शक्षी । मरण भले काल नायु होय त आजे जावे, मन
नारी पासे छे, जे त्रोइ वस्तुमा नथी जेतु स्पात य जेमनामा होय तमनो
जादा मोक्ष छे

धर्मकळा—

धर्मकळा स्पार्दिमा लाभावा जेतु नथी अम कहे छे, अमा जल्कमळ
गत रेतु जाइमे नमळ जेम वादयमा जाम्या छता देवन अने राबाने
चहे छे, तम र्मल्ही वादयमा जाम्या छा, भोगर्ही पाणीमा वध्या छो,
छता छ खरा चलेथी जाधा ।

दशरथ राजामा महाशास्त्रायनी खुमारी न हती ते जेमा टेपाया न
हता, वरिण्यमे जेमना सतान राम, लामण, भरत, शशुध जे लगारे
चिंता करवा जेता न्होता, वेम के अमने धर्मकळा शीख्यी हता

सेगानी रात कई रीते ररो छो ?

तमे सेगानी रात कई रीते ररो छो ! हाथमा ते मामा ने बाकीनु
तिजोरिमा आरी ऐवानी रातो मोरना गृठ जेवी लागे दशरथना
समयमा केळगरीनी प्रया हती के केम जेम प्रध पृष्ठो छोने ? ते वरते तो
उसम गुशो जेज केळगरी हती शाळा, महाशाळा तो अदरशान माटे छे
आपणे त्या तो बाल्क गर्भमा होय त्यारथी सस्कार सीचाता माताभे केम

वरुन् भेना विधान हे, वेम के बधा सत्कार गमनाथा पहे हे जेम जेम
 आळकने सस्कार सारा पडे तेम तेन ते गभनु दु प नूँठे हे ए ज मे ट्वार
 सस्कारयुक होय जाप्या पठी बाल्कने रमाइराना पग निमा पला हे
 रमाइवी बलते सारा शब्दो बोलाय सी तना सद्वार सारा पडे तम बाल्क
 रमाइवा यु खेलो छा । बाल्कने लोटा सस्कार पाड्या होय अन ते मेरे
 तो अनी दुर्गति याय बेटले जागल भा वाप दिक्षक सगालेही सद्वारी
 हजा, अने बाल्कमा सस्कार रहता आजारी दिक्षगस्त्याजोमा भाद्री
 दिक्षकी आत्मना सस्कार नालय लरा । प्रामेसगे, हि रहो कहे हे कोए
 वधो छ कन्काके कलाके नगा दिक्षक, अने दिक्षक दालो पोचो हाय तो
 अनी दुयो पण खेलये, कायदो पग जबो के दिक्षक दिक्षा न करी थफे,
 मैत्रिकरालाने गृहो क नामु बापड हे । यान फ़ाडता आपड हे ? तो
 कहये ना पहेला दिक्षक्तु मान जब्दानु, चिनय जल्लातो अने दिक्षक
 पुरु शान जायता जाने लो दिक्षक रुगारु जावीने बोरी जाय, भगे तो
 भगे नहि तो नाइ नहि येठायाना झकरा हाय तो उपर चरावे, मास्तर
 कहेये पाच मऱ्या होय तो मारे यु ? जाम जनीतिनी शदआत मूळ न थइ
 हे इवे काइक मान लायु ते अने कहे हे आवा माणसो हे, पग सस्कारी
 अने बालाशक्तुमना कळा जागनारी होयाधी परगेक्तु अने पारथी चचगानु
 दिक्षग आपरी जाने भवली ता नास्तक बनी नाय ते इधर ज्या ते जेम
 कहे हे, पण माचाय बोण हे ए पग मा वाप कहे हे त्यारे तमे मानो छा न।
 अनत परिम पठी जनत जानीओने इधरनु न म कहेड हे, इव तो
 चोपडावामा इधरनु नाम नहि जाव, ए नाम नार्यानी पेरी यह उ
 नातिरो ने ईधरनु नाम लीधु हतु—

मोठी मु— “जेम नास्त्रिहो दिडर, मुसोलानी—
 इधरनु— ! ” तु तो तमाय देगाना तो ॥

जेगा सस्कार हशी तेवा सतान पाकदो आजे आ देय खराब नथी ईश्वरु
 जाम लेनारा नहि अनेक हे शिक्षको पण समजे के पगार टाह्ने पण
 चाल्वोने कल्पवानी भेमने तक मळी हे तो तेओ छोकराना
 मा बाप बनी जाय, तेजो नीतिपाठ भणावे शिक्षण कोई ठगी न
 जाय अने कोह्ने ठगीते नहि अे माटे हे कायदानु जान गुन्हो करवां
 खचाब माटे हे, पण बर्कीलो तो कहेहो गुहाथी गभराता नहि, काममा
 रहीने रखो । आजे तो भेवो जमानो आब्बो हे के शिक्षण धधे ने बेव
 नूप धधे, बर्काल धधे ने कभाया धधे, डॉक्टर धधे ने दर्दी धधे आजे
 शिक्षण क्षेरी मक्कु उ भणावनाराओअ भणावती बरसते शिक्षण शा माटे
 असाय हे ते क्षु नवी वर्णाथी आ माटे रिमालज चाले हे, पण निझाल
 जान्यो नथी सातु शिभज मा बाप अने शिक्षक जापे भेवी शिक्षण-
 सस्वानो जापणे त्या इती

बीतरागनी चीफी—

दशरथ राजाए राग सामे बीतरागनी चाकी भूकी इती तेओने
 राग रोकी शक नहि, द्रेप दहाडे नहि, लोभ ललचाने नहि, शोभ
 अपक्षार नहि, मान मूले नहि, माया ठगे नहि आ
 स्थिति जाइ तो कनि ऊची भावे दशरथ राजा ए रिपतिमा
 इता ए बातरागमा रस्त हता रामायणा पाश्रोए अने दशरथ राजना
 कुन्है बत रला बर्तनमा यग दशरथ राजाने वाढे जाय हे अमना गुणनी
 छाया बधामा पड्दी हे कुद्दरीनो बढो केमो होगो जोह्ये भेनो भेमा
 बावपाठ हे दशरथ राजा जनासस्त यागी इता, रोज बीतरागनी भक्षित
 करता इता

-[व्याख्यान ७]-

आर्य रमणीओमा धर्म जीवत चेठो छे रामायणमा सस्कृतिनो आदर्श

—००—⊕—००—

(प्रेमाभाई हॉल, अमदाबाद रविवार ता ३०।१।६१)

महापुरुषोऽ जापरेशनी बे उच्चामा ऊची कोटिनी आमर्त्सूहि पढी
उे तेनाथी काहिय सूचोल्लोच भयुँ छे, असे तेमांच धी रामनु नाप
जगतमां भेट्यु यु मुश्किल छ के बे नामने लगभग सौ कोइ जाओ छे,
आन कारणे जास्ते जा रामायनो रिष्य लीधो ते

“रामायणमा सस्कृतिनो आदर्श” ए रिष्य द्वाय रामायना
पात्रोना रि त लीधो छे के तेथी तना पात्रोने समजवाना आवे, ते ए
दुर्गे दे न नव जीवन केट्यु महसनु छे, तेहो परम आर्य तु होई
शक न ना । १० परमादरायी मुस्ति मेल्लवीभे जने जपनोमा पछ्यु पड नहि
मात्रः ज्ञ ननो आ मो त्नो परमादर्त उ मानव जीवनो परमा ही अने
योगता न न । भिकाअ पहानेग महाराजा दशरथजा पात्रनी बात गया
रविगोरे ५६ । ५ गहूँ छे रामना पिता दशरथ महाराजा योगनी प्रगत नूमिता
पर हता तेथी तम । अनाखरत योगी तरीके ओळखान्वा उ, तेभो तो
परमार्थ तेमना देखामा ध्यय त तीके लैने येठा हता, मुर्माता परम उपा
यह हता मुखोमोगनी गिरुः सामग्री होरा उतां तेभो परम भस्तना
भाव नीरवा हता आ उपरथी नाहो आगो जातने घोडा समजी लेपानी
इच्छा करीबे बे लाको नहि जेवी, याढा समय वडा काग फैन्होरी
सामदीना उपरगने जापीन बनी जीवन बरबाद ।

राजा दशरथनु दक्षत बोधपाठस्य बनगे महाराजा दशरथने गावी, द्रव्य,
अने बीजी सामग्रा होवा उतां तेबो तेनाधी चित अने भक्तिमाने रहेगा
आ स्थितिना अनुभव तो ते स्थितिमा रहेता होय देने सबर पडे सारी।
स्थितिमा उपभोगना आसन्तिधी रहेता होईओ त्या सुधी दशरथ बनी
पुरगना नथी जने रामचंद्रजी आवी शक्तराना नथी रामचंद्रजी तां
दशरथना पुत्र छे सामाज्यना मालिक तो दशरथ राजा छे ।

महान् महोत्सव—

आ दशरथ राजाने जेक्कार उच्चकोटिना भक्तिमाने जेक भोइे महो
त्सव क्या जने तेमा शातिस्त्राते महाभोगे कर्यु, अन तेनु जछ माये।
चढावगानु महात्म्य समजता अवा दशरथे ते जळ पटराणी माटे कनुची
साथे अन बीजा माट दासीआ सापे भोकला पु, परतु योगनी प्रथम नूमि-
कामा पहोचवा जाग्रत थाय छे, तगा महाराजा इग्रथ पोताने जळ माक-
रगानु भूली गया होउ तेगी खुदि पटराणीमाँ केगी रीते पेदा थाय छे, तमाधी
गरु रामायण जन्मे छे रामराय कर्तु ए एटली महाभागी चौज नभी,
षीतरागमा तने महत्व नभी, परतु रामना राय पदेला बगेली वात बधु मह
धना छे महाराजा दशरथे स्नानजळ भोक्ल्यु देमा दाढीओ तुवान हाई
ते तो जलदी पहोचाडी आवी, परतु पटराणीने तो जे कनुची साथे भोक्ल्यु
इतु ते कनुची तुद हवा, जट्टे तने जळ मोहु मब्बु अन जळ भठ्ठे ते
पहला ता पटराणीना हैयामा ए वात ज मा के, महाराजाने जारी वस्तु
मोक्षामा पण मने कैम भूत्या ? आम तना हैयामा भोहे स्थान लीधु
समजदारने पण नूल्वे तेगो भोह छे माहधी मागसाई रहती नथी, इपर्फे
ज मे छे जाज तो सारा गजाता माजसोमाधी पण मागसाईना नाश थयो
छे, तो भगेलामा भोह १०८य आने कहन नथी भोहने तव ओळपो
ओ ? तमे देमाधी सामन छो ? के पछी गावेवगिरीधी गतो छो ? पट
एगीनो प्रखण तो जेक नगा सो ननार छे, जे दशरथ माटे बहु रामदायहि

हवो, छता योगनी परम भूमिकामा देटेला धूणने माहे लूळ्या छे-
प हडीकत होवा छता मोहने लूळ्यरा तरीके अळगो रापदो चो
दैमे उचम दर्हन नाहि करी शको मोहने कावम नजर समस्त राखी,
देन्यापी सावध रही आ बधी वातो सामळबी जोईअे महाराजा
दशरथनी पटराणीने अपमान लागता तेनामा माहे सचार कर्यो, अने
आकळविकळ बनी, छता पतिना अपमानया ऐक आदश आर्य खी
तरीके तेंगे पतिना सामनो न कर्यो के कजीयो न कर्यो तो यु
समान दक्षने नामे सङ्घवा जवाय ? तो यु याय ? अतमा आमां प्राण ज
याय, अने ते पर्य पोतानी जातने मिठावगाना निश्चय पर आवी जो के
महाराजा तेने भूले नाहि, अने मळये त्यारे कहेवाये ऐटलेयी तेनामा मोहे जे
स्थान लीधु हतु तेनापी वात न अटकी जो मोहे स्थान न लीधु होत तो
वात आठली हदे न जात, के तने अपघातनी तैयारी करवी पडे, ऊवा बीजा
उपाय लेवाने बदले पोतानी जातने मिठावगानो मार्ग लीधो ए बतावे छे
के, आर्य खीमा घम जिवत बेठो छे, घणा घरोमां आजे क्षमदा जामे छे,
पर्य मयादाशील झुळजो तेतु नाटक मनवता नया आवेद्य आवी जाय तो
परिस्थिति भोगनी ले के माग करी ले, अने गळे पासो पर्य खाय आम
पोताना अपमाननी वात बहार कदेवाय नहि, ए स्थितिमा पटराणी गळे
पासो खावा जाय छे, त्या महाराजा दशरथ आवे ले अने परिस्थिति जुने
छे, समानदानी वातो ते खलते नदोती अने खीओ समान दक नदोती
मागती, छता जिवेकी पुरुषाने मन खीजो केटली किंमते हती ते तमने
आमाधी जागवा मळये राजा तो परिस्थिति जाई आमो बन्यो, अते
फासो काणी नव्याव्यो तेने “देवी” थी सरोधी खोळामा वेसाडे छे,
कारण के ते समनवा हता अने पटराणीने ओळखता हता के कोई काण
यिना के आउ पगलु न ल्ये आजे हो अनेक वापडी यातो याय ले
आर्य सरद्दिमां जेतु त्रे स्थान छे, तेने अगे जे कई वायडी रातो याय ले,
तेमापी कई पर्य मळगानु नपी ते

राजा दशरथनु दक्षात वोधपाठह्य बनवे महाराजा दशरथने गावी, दृढ़ नने बीजी नामग्री होवा छतां तेअ तेनाथी वचित अन भक्तिमावे रहेत जा सिधितिना अनुभव तो ते सिधितिमा रहेता होय वेने स्वर पडे सा सिधितिमा उपमोगना आसरितवी रहेता होइबे त्या सुधी दशरथ ए राजाना नधी जने रामचद्रजी आवी शकवाना नधी रामचद्रजी ए दशरथना पुण छे साप्राव्यना मालिक दो दशरथ राजा छे

महाराज महोत्सव—

आ दारथ राजाजे अेकदार उन्नकोटिना भक्तिमावे अेक मोटो महो सर क्यो जने तेसा शातिस्त्वात्र ते महाभोगे कर्तु, जने तनु जळ मावे चढावानु महात्म्य समजता नेगा दशरथे ते जळ पटराणी माटे करुनी साथे अन बीजा माटे दाखीजा साथे मोकला यु, परतु योगानी प्रथम भूमि-कामा पहोचना जाग्रत थाय छे, तगा महाराजा दशरथ पोताने जळ माफ-लवानु भूया गया होय तेबी दुर्दि पटराणीमा केवी रीत वेदा थाय छे, तमार्पण गह रामायण जन्मे छे रामराज्य कर्तु ए पट्टी महामनी चीज नधी, चीतराममा तेने मठत्व नधी, परतु रामना राज्य पदेता बनेली वास वधु महात्म्यनी छे महाराजा दशरथे स्नानजळ मोकल्यु तेमा दाखीजो बुधान दार्द त ता जलदी पहोचाई आवी, परु पटराणीने तो जे करुनी साथे मोकल्यु रहु ते करुनी चूढ दता, जेड्हे दने जळ मादु मछ्यु अन जळ मठे ते पदेला ता पटराणीना हैयामा ए नात ज मी बे, महाराजाजे जावी वसु मोकल्यामा पण मो केम भूल्या ? जास तना हैयामा मीहे स्थान लीखु-सुमजदारने पण नूड्वे तेगा मोह छे मोहथी माणसाई रहेती नधी, इर्पी जन्मे उ जान तो छारा गणावा माणसोमाथी पण माणसाईनो नाथ थयो छे, तो भगेलामा मोह नदावाय आओ कइज नधी मोहने तम जोळन्हो छो ! तमे तेगाथी सापव छो ! के पठी गावलगिरीमी वतों छो ? पटरामानो प्रथम तो अेक नजारो नमाप ते, जे दशरथ माटे बहु लामदायी

हो, छवा योगनी परम भूमिकामा बेतेला धगाने मार्हे सूक्ष्मा हैं।
 ए हड्डीकृत होवा छवा मोहने लूट्यारा तरीके अलगो राखदो हो
 ऐ उचम दर्हन नहि करी शको मोहने काम नजर समझ राखी,
 तेनाथी सावध रही आ बधी वातो सांभळथी जाईव— महाराजा
 दशरथनी पट्टरणीने अपमान लागता तेनामा मार्हे संगर फौ, अबू
 आङ्ग्लविकङ्क बनी, ऊता पतिना अपमानथी ऐक आदर्ह धार्य थी,
 दरीके तेप पतिनो सामनो न कयों के कबीयो न कर्था हो द्यु
 समान हृष्णने नामे लडवा जगाय ? तो द्यु थाय ? अतमा आर्या प्राग अ
 अय, अने ते पण पोतानी जातने मिटाराना निर्जय पर वारी, जो के
 महाराजा तेने भूले नहि, अने मलदो त्यारे कहेवारा भेटेथी तेनामा भाँडे भे
 स्यान छीधु द्यु तेनाथी वात न अटकी जो मार्हे स्थान न सीधु हो। तो
 ज्ञात आटली हृदे न जात, के तेने अपधातनी तेयारी करी रहे, छाँडी छीमा
 उपाय लेवाने बदले पोतानी जातने मिटाराना मार्ग द्याये ए बावजु छे
 क्रे, आर्य छीमा धर्म जिवत भेठो हे, धगा घरेमा लावेग्रामा जाव है,
 पण मर्यादाशीछु कुट्टबो देखु नाटक मजगती नधा लादेय आरी जाव ती
 परिस्थिति भोगनी ले के मार्ग करी हे, अने गढ़े रामे कृष्ण सार, आप
 पोताना अपमाननी वात बहार कहेवाय नहि, ए मिर्जिमा पद्मारी गृहे
 पासो खावा जाय है, त्या महाराजा दशरथ वाई ए इन परिस्थिति कुरु
 है, समानवानी वातो ते घबरे नदोती ले भूक्ता ध्यान इक नदोती
 मागती, ऊता विषेकी पुस्ताने मन खीझो इन्द्र निक्षित ही त तमन
 आमाथी जाणवा मलदो राता ले रहिन्दू रही आनी ब यो, अब
 पासो काटी नसाव्यो तेने “देवी” यी छुरी श्रोत्यामा बुवाह के
 कारण के ते समजता हता अने परागिन कृष्ण इना क छोई
 बिना ते आउ पागउ न ल्ये आरेक्के बैठे रायही वाता
 आर्य उत्तरितिमा जेनु जे स्थान है, जेलो ते रही आनी बड़े
 तेनाथी कर्द पण मलबानु नयै, ते कृष्ण पुक्कर करी

नहि करता होय तेम मानो छो ! उतां राजाओं पटराणीने' कोने' अपमान' क्यु ? श यथु ? योरै पूछु आठली समानतानी यातो नहोती ते वसवें पण पुरुष लीनु अपमान करतो नहि तमे श करो छो !' थांगे मारा उपर फेटलक बागळो आवे छे तेमा' पूछाय छे' के, तमे अहो जे आज' मुझी व्याख्यानोमा कहु तेमांधी केटरो' अमल थयो छे ! हु पढु सु के, डाढाने' हिसाब पूछाय नहि अनेंगांडो' पूछायामा' मजा नहि व्याख्यान यामच्चनारा बाढा होय तो इच्छानोगे छे; के तेम तेओ रामबीने जीवा जेवु कार्य करीने' जीवे, पण तेने पूछाय केम ?' गांडाने तो पूजीधे तो' ते थामो याय माणस' नमने आपारे ऊचो नीरो याय छे तो कमनी रचनाने एमभनारो नीचे' रहेला जाधोना तिरस्कार करे ते आर्य देशनी' याव' नहोती चीजा यनी बेटेला आयोभे आतु कहे कयु होय तो ते आर्य देशनी बाव तो नहोती जा दशरथ राजा अने पटराणी बेटा दता अने' याजा यात पूछता दता, चोस्या नेंद्री स्थिति तो रही न इती, उता पोताने जळ नहि पहोच्यानी' यात करी, जेनाधी आठली हृद पटराणीमा' मोहे स्थान लीपु हृद तेनो राजाने ख्याल आव्यो, अने यस्तु बरावर होवानु मान्यु आ दरम्यान कुकी जळ सैने आव्यो, सा तेने केम मोडा आव्यो ए पूछता तेने पोतानु शरीर पताङ्गु पृदावस्थाधी तेना दात घडीशाला लोलकनी जेम दालता दता, शरीर पळीसोना भावता जेतु हृद अने आखनी भम तोना घाठ आरामो आसता दता त कृद्य गरीने कारणे ऊ' ऊपो कपतो हतो शरीर मतावस्था सापे तेने जाम्यु क, मोहु थरानु कारण मारी पृदावस्था छे कनुकीभे महा राजने शरीर बतांयु अन पोतानी यात रङ्ग करी ते उपर्यी तमे जीशो के त वसते नो ईरो कण भोया राजाओंधी बेटला निर्वय हश ! आशा महान् अतावक्ता योगीओ राज वरता त काळमा' प्रजाने कोई हु ग्व नहोतु कारण के' प्रजाना दुपे तेमो पोतानु दुख मानता कचुवीना शरीरना दशत उपर्यी' अनने अ पण दाखलो रुवानो' ते के, सारी ईते रावव्या' उता आ दुवाना नया मुझी रहवानी छे !' आ कपता' क्षुकाने

राजाराणी जोई रहा अने पटराणी मूँझाई, पण महाराजामे' कह ठपको' न आय्यो, के बोल्या पण नहि, कारण के तेमने सुहार जीवंता आवडतो हतो आये ज जो समने पूछया के वात क्याँ हिकाय तमारी पत्नी गढे फासो स्खावा जाय तो गुस्खानी वात नयी । उतां राजो समाया के जळ मोड पहोचे तो' आम ज जने ते' वात' खरी' हे' महाराणी पण समजी जाय हे के, भूल यई, परतु' थयेली भूल याद राखवी तेना जेवी कोई मूखता नयी राजाराणी बने' कसुकोने छुपे हे अने विचारे हे के, आनु शरीर केबु दृद, अशक्त यई गयु हे ।' आवी' अवस्था आपणी न आये त्या सुधी आपणे चोथा पुरुषार्थने' ऐटले' मोक्ष साधवा सज यहू जबु' जोईभे चार पुरुषार्थमायी' तमारा केटला पुरुषार्थ सधाय हे । अप अने काम अर्थ अने काममां लीन' थयेलाने धर्मनी' जहर पढती नयी, के तेओ मानता नयी, परतु मानवधर्मना परमादर्शरूप चोर्यो योग आवी जाय तो धर्ममा लीन यई जाय हे अने पापया छूटे हे, जे पुरुषार्थ जीवनमा पाप करावे अने पाप धिकाय न सधाय ते' पुरुषार्थने साचा गणवा के खोटा गणवा । आवा पुरुषार्थमायी पण माझस योग माटे तैयार याय हे परतु ते छाड्यो चाकी धणाने नठोर अने नक्कर बनाय्या हे

शु नीवतु जखरो हे ?

आ मानव जीवनमा जे रीते जीन जीवो छा तेवा सयोग मळ जधावदाय उठावनार माटे तो पती, धधाधापा उपर ऐटले भोह नयी ने । महाराजा दशरथ स्त्रीलेलु साप्त्रान्य मूँकवा तैयार 'या, पर आवी महा राणी, कुटुंबियोने शोहतव्या अने साप्त्रान्य छोडवाना वात शह यह मारे पण तमारी पासधी द्यु छोटी देयानी वात कराववी छ तमारे छाडवु हे । आनो ज्वाव तमारी पासधी नही मळ कारण के तमे माहमा आशक्त छा' महाराजा' गादीस्थागनी यातुयी बासक्त हता, तेमने तेनीं असरै' यहि, --- तेमने' जोहने ते' द्यु उद्देश्य करनाय हता त बधाने

जनायकतमावे बधु दाबी गया तरत सामे जोयु तो खुदु ज परिवर्तन
लाग्यु पिताना वैराग्य करता पुत्रनो वैराग्य वधी जाय तेम हस्तो, परतु आपा-
तो कैकेयीने चिता पेठी के पति जशे अने पुत्र पश जशे अहिंसी कैकपीना
पात्रनो प्रसंग शुद्ध याय छे, महा पुरुषोंने कैकेयीने दखोडी छे, पश ते भूल,
छे मोहनी आखितयी भूल याय ते ते कबूल करेछे पोते कबूल करेते वातः
खुदी अने बीजा कही कही कबूल रुरावे मुखारे ते वर्दी लुकी आपणे तो
बीजानी नारीवी सामान्य भूलने सहन करी शकता नथी बीजी वात ए,
छे के भरतने गादी सौपवानी वात याय ढे त्यारे भरत वैराग्ययी आनन्द
अनुभवे छे, अने दशरथ साथे जना तैयार याय छे, राजनी पदापडी कर-
नारो माटे आ वात याद राजवानी छ राजा सामान्य छोड छ, भरतने हे
भोगवानु हतु बाम भोगवानु भागडे ते त्यागी बने के न
भागडि त त्यागी बने ? जेने जेने महा विराग जाने ते बधाय
सामान्य अने भोग मूके भोगवानी, लेवानी के मूकवानी टेक
सारी ? लेवानी टेकमा हवे हु लेवानु बज्यु छे तमे अद्यो तो हीरा
पश कोळसा याय छ आजे शु लेवा जेतु लागे छे ? आजे कोई
चीज जीवनमा मूकवा के त्यजवा जेवी लागे छे के नहि ? परिदिव्यति
प्रमाणे आरणे तैयार नहि होइबे तो ज रीते जोवा मागीअ छीमे ते
रीते नहि जावाय कैकेयी पोताना पतिने रोकी नथी शकती, अने पुत्र पश
जाय छ से सामे बीजा बोलता नपी, अट्ठे चूचन मागे छ घणा, कहे छे के
आज मुधी ऐम नहि मार्गु होय ? पश सारा माणसाने ल्या साराने आपेला
वचनो मागवानी तक ज मष्टरी नथी कारण के हैसु, दिशाल होय अट्ठे
कजीयाने स्थान ज न होय दशरथ राजानो जाहो घृहसंपार चाल्यो हस्तो के,
जेमा कोई दिवस राणीनु अपमान नहि के चीज मागवानी नहि, अने साथे
योगी जीमनमा फूल अद्वा करवानु चूकवानु नहि हवे अनासन्त अने
आसन्त योगीनी बात लहमे भोगाने भागवानु द्वाता भाग ग्रुमे, नहि ते
न न नुत य गी, अने भोग न मले अने न भोगडे इताय जेने भोग

गम्या करे ते आसक्त योगी आमा मूळ संस्कार हो अध्यात्मिक केळवणी पर अवलबे हे प्रथम माता, पठी शिष्यक अने पठी घमगुहओ मळे त्यारे साची अध्यात्मिक केळवणीनो प्रवाह चाले आ केळवणी जेवी नपी के जे गमे ते मळे केने आपे जही आत्मा केळवानु ईद्ध 'मा'नु उदर हे परु आवे तो मूळ वात त्याथी ज बगडी हे माताना उदरमां अध्यात्मिक असर समस आजनी केळवणी भुलडू हे जा वात तो आव देशना चीजमा पढी हे, परु जा घमोपदेश ए वा माताना उदरमा अध्यात्मिक असर न मेळवी शकाह होय खने शिक्षणयी पग न मेळवाह होय तो सुधरवानी अेक तक हे, अने बाजी बगडी नपी त्या मुधी मुधारी शकाय हे कैकेयीभे बचन तो मायु पग राजाभे जगाव्यु के, अेक बसुनी बादवाकी कहवी पढवो, मै जे बसते बचन आध्यु ते बसते हु बधु ऊढवाना तैयारीना स्थितिमा नहोतो, अटले ते माटे तु रोकी शकाय नहि आज तो सकारमा पर माडनारा मोहनी असरमा माडता हश, पग मोहमा रिचारेली चीज मोह शिवा यनी स्थितिमा बधनकर्ता न बनी शके अगाड तो बचन स्वाकर प्राण आपता, राजाजे पग आपेतु ते पाढवा तैयार हतो अने बचन तो पाढवा भाषु ज ह्यु

टिकीट पण मफत मेळवानी दानत—

कैकेयीनी मागणी समय राम, तेमनी माता, लश्मण बधा दता गादी आपवानी आडे आववानो कोईने एक नहोतो, पण कैकेयीनी माँगणीनी कोई उपर बसर यह नहि आम सधार कैवी रीते चाले ! शातिमा के अशारिमा ! अेक बाजू दशरथ योगनी पहेली भूमिकाभे जवानो निर्णय करी भरतने गादी सौपे ते, अने आपेतु बचन पाळे हे परु आ बधी चिता बचन पाढवु होय तो होयन ! राजाने आ स्थितिमा नपरत पाय, पग कर्द ज यनु नपी राजानो राम गयो हतो तेनाथी बधाने चिता यहै पण तेने नहि, राजा राजगादी छोडीने जाय ते तो परपरा हे तमे तमारा पुत्रने पेटा सौंपी जाओ हो !

ई आ रामायणना बधां पात्रोंनी चर्चा भेटला माटे कह छु के आर्थि
सहस्रितु दर्शन प्रतिविन याय अने वेनो, ख्याल आवे ता पर्य हे सहकार
ग्रमारामा रेढाय परदेशमा आजे छापा बजारमां खुला मूळाय अने, तो
पैसा नासी ऐक भेक लई जाय, तने कोई जोनारज, नदि केवी प्रामा-
णिकवा ? हिसामां नदि अटकनार जेवा अनार्थ देशेमा आ परिरियति छे,
यार सत्य अने अद्वितीये मार्ग चालता अर्थ प्रदेशमा ता रेलेनु भाह
आ तेमां स्वास्थ करीने तो युगानोज नथी आपता, टिकीट पण मफत
मेळवानी दानत मरता मुधा घर छाडु नहि ऐ आदर्श केवो ! कोइ
आय सहस्रितिमा क्याय ऐबो आदर्श हे के मरता मुधी घर न छोडु !

दशरथना वचनथी कैकेयी खुश थई, पण भरत राजगादी स्त्रीकारवा
तेयार नहोता ऐटले राज न लेवानी तकरार थई अहिं तो राज लेवानी
तकरार चाले हे आ दरम्यान राम आया तमने जोई उहु खुश या
रामराज्यनी वात—

हे रामराज्यनी वात अहीथी शब्द याय हे राम ता प्रजाप्रिय हवा,
ते गादी मेळवावा धारी सशक्त पिताना अचाय अने अपरमातानी
वैरकृतिनो विचार तेमणे कर्या हात तो आजे रामायण चुदु ज लपात आजे तो
तमाह आर्थिग रामराज्यनु हे रामनु नहि, परदु तम रामना आदर्शामां क्या
काम आयो छा ! जावे तो रामनु नाम लेनारा पण तेमना आदर्शों पालवा
नथी जो जामज चाले तो यहसुकार देवाकियो ज होय पछी
आई धासलेट छाटीनेय बढी मरे रामना ऐक ऐक जवाबमां आर्थि
एकूहति भेरली हे दशरथ ता त्यागनी प्रथम कक्षाबे हवा, ऐटले
तेमनामा आर्थ सहस्रि होय ज, ऐटले रामनी माता कौशल्या पाठ्यथी
आवेली कैकेयी सामे कह बोल्या नदि बाकी आज तो बातबातमाह
प्रभिप्रायो भाषी देगाय ह आ तो बने शोको छुता वेनोना जेतु देत दहु

— ज्ञे भेक बीजाने नाजामोदाने जालवता अमे त्यासी होगा छता तमे चाहं
 जियो छो ते बायवानी झूच्छा त्रे सुख तो चारा सस्कार दोय-पडी मधे
 सूको रोट्ठो मधे तेमा छे मालपुचा पकवानमा—असस्कारितामा मुख नयी,
 आजे वधा प्रश्नोमा कायदा ने तमारा सहारनु प्रतिविव छे, नहि तो कोइनी
 शु हिमत छ के, कोईनी मा-चेहन के दिकरी माटे बीजा बात करी शके
 के विचारा शके, तथा विधवाने बीजे परणाववानी बात करी शके ! अ
 ता देशना नाखायझीनी बात छे विधवानी यात करवानो बीजाने शु अधि
 कार छ ! कैकेयीने रामे के दशरथे वगोदा नयी, शोकामे वगोदी नयी,
 तो पारकी बातो करनारामोन तमने वगोववानो शु दफ छे !

—००—

-[व्याख्यान C]-

आजे भोगलालसा वधु जागी छे, अने
 भोगनु पुण्य परवारी गयु छे

—००⊕००—

(प्रेमाभाई द्वौल, अमदावाद रविवार ता ७।१०।५१)

उपकारी महा पुरुषोभे जे-जोने मानव जीवननी किमत समजाइ हये,
 अने जे जन-मद्दारा जेओ पोताना परम आदद्याने भेक्कवाना साध्यने सिद्ध
 करवा आत्तुर छे, जेवा जीवते जे रीते जीवतु जोईने भेगी सस्कृति
 मलो शक ऐ हेतुपी जे जे महापुरुषो यथा के जेमना जीवन सामे जोइ
 योग्य आत्मा पोताना जीवनने सुधारी शके, जेवा महापुरुषोना जीवन-
 कुशाव शाखोमा ढाई ढाईने मरेडा छ, अने जे प्रसगो आपगे बर्गची

‘ तु जा रामायणना वधों पाश्चोनी चर्चा ऐठला म्हटे कह छु के अर्थ
ससृतिनु दग्धन प्रतिविव थाय अने लेनो, ख्याल आवे तो पण ते सस्तार
यमाराना रेडाय परदेशमा आजे, हापां बजारमां उल्ला, भूकाय अने सो
पैडा नाली ऐक ऐक लई जाय, तने कोई जोनारज नहि केवी प्रामा-
णिकता । हिसामा नहि अटकनार जेचा अनार्य देशोमा आ परिस्थिति छे,
ध्यार सत्य अने अदिसाने भागें चालता आर्य प्रदेशमा तो रेस्तेनु भाङ्ग
अने तेमां खास करीने तो चुवानोज नथी आपता, टिकीट पण मफत
मेळवरानी दानत मरता सुधी घर छाड्यु नहि जे आदर्य केवो । कोह
आय ससृतिमा स्थाय ऐबो आदर्य छ के मरता सुधी घर न छोड्यु ।

दयरथना वचनथी कैकेयी खुश यद, पण भरत राजगादी स्वीकारवा
तैयार नदाता ऐट्ये गज न लेवानी तकरार यई अहिं तो राज लेवानी
तकरार चाले छे आ दरभ्यान राम आया तेमने जोई सहु खुश यगा-
रामराज्यनी वात—

हवे रामराज्यनी वात अहीर्यी शब थाय छे राम ता प्रबाप्रिय दता,
ते गादी मेळवग धारी सशस्त विताना अर्याय अने अपरमातानी
बैरूचिनो विचार तेमणे क्यों हात तो आजे रामायण चुदु ज लखात. आजे ता
उमाए आकथण रामराज्यनु छे, रामनु नहि, परतु तम रामना आदर्योमा क्या
काम जावो छा । आजे तो रामनु नाम लेनारा पण तेमना जादर्यों पाळता
नथी जो आमज चाले तो यहसुपार देवाळियो ज होय पठी
काई पासलेट आदीनेय बळो मेरे रामना ऐक ऐक जवानमा आर्य
ससृति भरेली छे दयरथ तो त्यागनी प्रथम कक्षाओ दता, ऐट्ये
तेमनामा आर्य ससृति होय ज, ऐट्ये रामनी मात्रा कौशल्या पाढळथी
आवेनी कैकेयी उमे कह वोल्या नहि वाकी आज तो वातवातमा
अभिप्रायो आपी देवाय छ वा तो बने शीको छता भेनोना जेबु देत द्या,

ज्ञाने भेक बीजाने नानामोदाने जाळवदा अमे त्यागी होवा छता कमे सर्व
 बिरो छो, ते बागधानी इच्छा ते मुख तो चारा सस्कार द्वाय-पड़ी मछे
 मूँहा रोट्यो मछे देमा छे भालपुवा पक्ष्यानमा—भस्सठारितामा मुस नयी
 आजे बधा प्रभोमां कायदा ने तमारा चणालु प्रतिबिंब छे, नहि तो कोइनी
 शु हिमव छ के, काईनी मा—चहन के दिक्की माटे बीजा बात करी शके
 के विचारी शके, तथा विधवाने धीजे परणाववानी बात करवानो बीजाने शु अधि
 क्षार छे ? कैकेवीने रामे के दशरथे बगोवा नयी, शोकाजे बगोवी नयी,
 तो पारकी बादो करनाराओन तमने बगोववानो तु इक छे ?

—००—

-[व्याख्यान ८]-

आजे भोगलालसा वधु जागी छे, अने
 भोगनु पुण्य परवारी गयु छे

—००⊕००—

(प्रेमामाई होँल, अमदावाद अनिवार दा ७।१०५१)

उपकारी महा उरुओने जे नाने मानव जीननी चिन्मत समजाइ दये,
 अने ऐ जन्मद्वाय जेआ पोताना परम बादशाहे भेलरगाना साध्यने चिद
 करवा आगुर छे, भेवा जीवाने जे रीते जाग्नु जोइदे भेगी सक्खिवि
 मठी रुक ऐ हेतुपी जे जे महापुरुषो यथा के जेमना जीवन सामे जोइ
 याथ्य आत्मा पोताना जीवनने मुखारी शके, भेवा महापुरुषोना जीवन
 द्वाव द्वाख्योसा ठारी ठारीने भोडा छ, अने ऐ प्रसगो जाप्ये ववरी

तु अहमायाना वधां पात्रोनी चर्चा ऐढ़ला म्हटे कर खुके आई
स्तुतिनु दग्धन प्रतिक्रिय थाय अने तनो, ख्याल आवे, तो पण ते सस्कार
माराना रेढाय परदेशमा आजे छापा बजारमा चुल्हा मूळाय अने छो
इचा नासी ऐक ऐक छई जाय, तने कोइ जोनारज नहि केवी प्रामा-
गिकता । हिसामा नहि अटकनार ऐचा अनाई देयोमा आ परिस्थिति छे,
यार सत्य अने अद्वितीये मार्गे चालता आई प्रदेशमा ता रेल्वेनु भाँड
अने तमां खास फरीने तो चुगानोज नपी आपता, टिक्कीट पण मफत
मेल्ववानी दानत मरता चुधा घर छाड़तु नहि ऐ आदर्श केवो ! कोइ
आय स्तुतिमा क्याय ऐवो आदर्श छे के मरता सुधी घर न छोड़तु !

दशरथना चन्दनधी कैकेयी खुश थई, पण भरत राजगादी स्त्रीकारवा
तेयार नहोता जेठने राज न लेवानी तकरार थई अहिं तो राज लेवानी
तकरार चाले छे आ दरम्यान राम आया तमने जोई सहु खुश या
रामराज्यनी बात—

ह्ये रामराज्यनी बात अहींधी शब्द थाय छे राम ता प्रजाप्रिय हवा,
ते गादी मेल्ववा धारी सशमत पिताना अन्याय अने अपरमावानी
वैरत्यसिनो विचार तेमणे क्यों हात तो आजे रामराज्य चुदु ज लस्तार आजे ता
दमाद नायषण रामराज्यनु छे रामनु नहि, परदु तमे रामना आदर्शोमा क्या
काम आवो छो ! आजे तो रामनु नाम लेनारा पण तेमना आदर्शी पालना
नपी जो आमज चाले तो घटस्थार देवालियो ज होय पछी
कोइ धास्तेठ छाटीनेय बछो मेरे रामना ऐक ऐक जगावमा आई
सुकृति भेरली उ दशरथ ता त्यागनी प्रथम कक्षाओ दहा, ऐठ्के
हेमनामां आय स्तुति होय ज, जेठ्के रामनी मात्रा कौशल्या पाछलभी
आवेली कैकेयी उमे कई घोल्या नहि बाकी जाज तो बातवातमां
जभिमायो भाषी देयाय छ आ तो धने शोको छुतो भेनोना जेतु देत शहू,

ज्ञते ज्ञेक बीबने नानामोदाने जालयदा अमे त्यागी होवा छता उमे शर्दि
दिवो ढो वे ब्राह्मवानी झुच्छा ते सुख सो चारा सस्कार श्रोय-पञ्जी भले
सूक्ष्म रोट्टो भले रेमा के मालपुका पक्कानमा—असस्कारितामा सुख नपी।
आजे बधा प्रभोमां कायदा ने तमारा सहारनु प्रतिविव छे, नहि सो कोइनी
शु हिंमत छ के, काईनी मा-बहन के दिक्की माटे बीजा बात करी शके ! अ
ता देशना नालायकीनी बात छे विघ्वानी बात करवानो बीजाने शु अधि-
कार छे ! कैफेयोने रामे के दहरये वगोवा नथी, शोझोअे वगोवी नथी,
तो पारकी बातो करनाराओन तमने वगोववानो गु दफ छे !

—००—

-[व्याख्यान C]-

आजे भोगलालसा वधु जागी छे, अने
भोगनु पुण्य परवारी गयु छे

—००⊕००—

(प्रेमाभाई हॉल, अमदाबाद रमिवार दा ७।१०।५१)

उपकारी महा पुण्योमे जेज्ञेने मानन जीवननी किमत समजाइ हये,
अने ऐ जन-मद्दारा जेखो पोवाना पाम आदशने भेड्ववाना साप्यने सिद्ध
करवा आतुर छे, जेवा जीवने जे रीते जीवनु जोइमे जेगी सस्कृति
मछो शक ऐ हेतुषी जे जे महापुण्यो यथा के जेमना जीवन सामे जोइ
योग्य आत्मा पोवाना जीवनने सुधारी शके, जेवा महापुण्योना जीवन
इद्धत द्याखोना ठासी ठासीने भोडा छ, अने जे प्रश्न्यो आप्ये वर्गवी

रहा छीबे योगनी त्रीजी भूमिका पर बेठेला दशरथ राजा साम्राज्यनी भालिक होवा उत्ता असर नाचे आव्या विनाना वीतराग एतमा त्माना भक्त हता माटे रामाञ्जने तरणात्मु लेखता हता तने तभी योगनी पहेली भूमिका पर आहूढ यई परमपदने नजीक पहोचवू तेना परथी आखा रामाञ्जनु सजेन थयु छे.

दशरथ राजाबे उहुने अेकप्र करी येते निवृति लवानो निणय जाहेर कर्या वीतराग शासने जे दृष्टिओ दशरथ राजा अन रामने जोया छे ते दृष्टिओ हु मुक्त थु आ अग अनेक दृष्टि चालु छे देसा आ दृष्टि का आवे छे दशरथ राजाबे जे वत मूर्ती, तेनी त्रीजा करता भरत उपर उच्च फोटीनी असर यह, अने दशरथ राजा जेवो ज भाद तेमनामा जाम्या हतो पहेली अन त्रीजी भूमिका उपर रहेला जीवो उपर मोह कइ राते स्वारी करे छेते जापणे केकेयीना पाच उपरथी जोयु ते भरते दशरथ जोडे जरानी विनति करी हती तेमने लाग्यु द्यु के सदारमा रहेता पितानो विरह बेठवो पढो अन सदारनु तर्फ यखु पढो तमे सदारनु तर्फ यु अे जाणो छो । तमे आसी जीदगी सदारना तर्फम्या दसार करी छे, तमे सदारनो भोग आपो छो के महापुण्योना चिदान्तोना बेटलाक चिदान्तोना भोग आपो छो । भरते पिता साथे जवानी माणणी करतो केकेयीने ययु के पति जेवे अने पुत्र पण जेवे, अेटल भरतेने राखणा माटे तेने दशरथ राजा पासे भरतेने राज आपवा वचन माग्यु दशरथ अने केकेयीअे वीतराग भगवान्तेवी जीव यक्षा नयी जेन परमपदनी इच्छा होय अेवा आत्मा भोद्धमा आवी न करवानु को, पण जेमने योग के परमपदनी किंमत नयी तेवाओ परलोक यिल्यां छे, अने आ लोकनी साधनामा सर्वस्व मान्यु छे, तेमना पर मोह जे रीते स्वारा करे छे, तेवी स्वारी आमना पर यही नपी सदाचारी याद छे के ।

केकेयीने वचन माग्यु त्यारे दशरथे कहु के वचन आपवी वसते जे

माई पासे न्होतु ते शिवाय बहु माग । पहेला तेमनी पासे पहेली भूमिका पर जवाना उत्साह नहोतो, ते हवे आव्यो हतो, जेटले ए छिवाय तेब्यो बहु आपवा तेयार हवा तमने आ जन्म शा माटे छे ए याद छे । सदाचारोना नाम बोली ज्याओ खरा । ए याद नथी, केम के तमार साधना विनानु ध्येय छे अनेक मरे तेमा अमरे तु ! बीजा गुहो करे, पकडाय, फजेती याय, पण आपगे पकडावाना नथी ऐबी चृचि छे जगतमा जे याय छे तेनी असर तमारा उपर याय छे खरी, पण “ करे ते भोगव ” ऐबी चृचि होय तो तमे करो अने भोगबो त्यारे जगतनी मान चता परवारी गई हे अम कहेशो नहि ।

दृष्टि बदलाय तो—

जो दृष्टि बदलाय तो जीवन बदलाय, शमितना प्रभाणमाँ जीवन बदलाय तोय बस मुख गुणित भोगर्णा शकाय ऐबो आजनो काढ नपी अने जे मुखे जीततो नथी, ते मुखे मरतो पण नथी अनेक दु खोमो मुखे जीवतु एज खरी मानवता छे ए ल्यारेज शाखाय ज्यारे दशरथ बेथा महा पुण्यनु चित्र ननर समक्ष होय महा साम्राज्य जेमगे चलानु अने मूक यानी बेळापे आट्ठु नोडु राय केम मूकाय ऐबो बिपार सरसो न आव्यो कैकेयीने बतानेय बिना तमने बचा मागवातु पहाडु कैकेयीने बिदास हतो के पति रोकाये नहि, तमारा पर तमारा घटनानो आबो बिदास खरो । तमारा बचन पर दुनियानो व्यवहार चाले । कैकेयीने बचन लेता दशरथ राना पासे सही नहोती कराची आजे ए चाले । अने न चाले तोये ऐम नपी लागतु के मानवता सही गई छे । व्यवहार बचने चाले के दस्तानेजे । पण आजे तो दस्तावेजेय व्यवहार नथी चालतो दस्तावेज लखती बेळा कायदानी बारीको जोवाय छे, अने ए कायदानी बारीकी ज होठी हे कैकेयीने भरत माटे राजगादी मागी हेतु ए के भरत रये राज धाम्य समने यशो के

अटले आप्यु पण न छोड़ा होत ने मागत तो ए न आपत है पोताने-
मळळी खीज बीजाने उपयोग होय, क्षेमार्थी बीजाने शांति थवा होय तो
ते कमे आपो खरा ?

रामनो हक्क हतो, छता—

राज उपर रामनो हक्क हतो, दशरथ ए समजता हता, छता तेमने
विशाप हतो के हु भेमे तेने राज आपी दउ अने राम हक्कनो दधो
करतो आवे ए असभवित हे दशरथे ससार चलावेलो हतो अने ए मुदर
जीवननी असर सहु पर हती दशरथे रामने बोलावी विगत कही अने
सास्पाज्य छोडा सद्यम देणानो पोतानो निणय जणाव्यो, कैकेयीअे मागेला
वचननी हकीकत पण कही भरतने राज आप्यानी वात सामव्या पठी
तमने लागे छ के शान्ति रहे ? अने आ जमानामा ? न रहे केम, आ
जमाना शिक्षित नथी ? वधु शिक्षित हे ने ! ए शान्ति आ जमानामा न
रहे, अनो जर्य ए के ते काढे जे भशतर हतु ते आज नथी ने ? रामे तो
पितानी वात सामव्यी आनंद अनुभव्यो, जन कैकेयी माताअे भरत भाटे
राज माग्यु ए माटे साड कर्यु भेम कह्यु, आवो प्रसंग बोजे बने तो धाघल
मच्या चिना रहे ! आजना समयमा कैकेयी हु बोले तेनी कल्पना आये छे ?
रामायणमा ससृतिनो हु आदर्श हतो ते अना पात्रे पाने लाव्यो हे राव-
जने पण लाव्यो हे ए रावण तमारा करता खराब हतो अम भान्हु भूल
भेरु ते रामायना पात्रो विषय के कषायना गुलाम नहोता राम
पात्री पुन हवा, रायना हवा विषे अमने कदि कल्पना आवी न हवी
केम के पितानी चरणसेवामा वैमव अने राज्य करता तेमने मन वधु मुख
हतु रामनु घ्येय हतु पोताना तरस्थी पिताने आनंद मव्या करे हु पूछु
के घर कोनु, तमार के तमारा मा बापनु ? आर्य ससृति हु छे ए समनो !
प्यारथी लेमागु अने छाडोअे आर्य ससृतिनी वातो करवा मादी छे
स्यारथी आय ससृति हीन बना गई आज तो पुत्र कहेदी मा-चापना दोप-
करेवामा वापो हु मात्र न कहेगाय दोप जेना अने अनी थायदीना !

परमा रामनी दखल शी ?

एननी इच्छा हती के पोताने काले मान्यापने दुख न पाय एवं
दग्धरथनु वचन आवकाये, अने कैकेयीने शेर लोही चढ़ा, ऐकेयी धार-
मान माता हती, परं रामने भन अेवो भेद नहोतो दग्धरथने अनेह जीधो
हती, परं तेमनो परस्परनो वर्णाव, तेमना बालकोनो एक भीजा दाखला
वर्णाव ए अेक जीवन जीवनानी कला हता, सख्ति हती यम इन्द्रिय
के आपे मने पूछु से महेत्वानी । परं मने दुख यमु के लालेह दु
अविनयी करेवाइश के दग्धरथने परं रामने पूछु पड़वु हु शिष्टक ब्रह्म
पूछु पढे ए पुत्रनो अविनय गणाय

परनी बधी चाज मान्यापनी हाजरीमा कोनी गमावै नहु नहु
क्यो कायदो ! राजनो कायदो हे ! तमारे परमा राज दु मेहु नहु हे
आजे तो कोई मान्यापने पूछीभे तो कहेये ' भाई ' व नहु अर्थ नहु
सारी रीते जीवन जीवे तो राज वचमा न आसी दह, दह दखला नहु
वचमा न आवी शके आ दशना सक्तार जीमण उद्धाक महा नुर्मल
दृष्टातो नजर सामे राखवा जोईने, पिता प्रभुर यहं नहु नहु, ए
पुत्रने मागवानो हक नभी पुत्र समने के मान्यापन नहु नहु
क्यों हे आ रीते घर चालु होय तो बराहर नहु नहु

आजे बड़ील जेतु काई यमु हे सह नहु नहु नहु नहु
माता पिताना चरणमा सबछा सभिमाला अह नहु नहु नहु
हे पुत्र व्यारे माता पिता दरपया बालक नहु नहु नहु नहु
वात यती तोज विरोध करता बालक नहु नहु नहु नहु
दीक्षा अने वहुनी आशामा खेतु नहु नहु नहु नहु
बापने आभारी हे तमे कोई दिव नहु नहु नहु नहु
आप्यु हे ! के ते ठगाय नहु नहु नहु नहु
पला भला माटे हे, अने मूर्त्ती च नहु नहु नहु
करनानी होय नहु नहु नहु नहु

रामायणनो शिक्षापाठ

रामे तो कहु के हु अने भरत ऐक छींगे, अने आपने मन पग अबने सरसा छींगे दशरथ राजानु मन जा जवाबधी प्रसुच थयु अरामायणनो शोटो शिक्षापाठ हे, शोटो आनद हे

इयोक ए शेक —

दशरथना परमा धणी राणीओ हती, ए शोक हती अने शोक ऐट्टे शेक हु तो लावी बात करनारने पूछु के पहुँची बीजी नथीने ! तो बधा ता भेड़वाळा ज छाने ? बगाऊ जनेक खीओ होया उता धर ससा आजना ऐकवाळा करता सारो चालतो

ऐकधीओ भरत माटे राज मायु, त्यारे लक्ष्मणनी माता काइ न बोली, जने रामनी माताने पग फेकेथी छामे दात न कच्चकचाल्या जामा त्याग कोनो बराणयो, रामनो के बधानो ! पट्टराणीपदे रामना माता हता, राजगादीना हक्कदार राम हता, छता कौशल्या काइ खाल्या नहि केम केहे रेमना ससारनो पायो मजबूत हतो तमारा ससारनो पायो आयो मजबूत करो ! केकेथीए भरत माटे राज मायु, तेथी अबोध्या ऊचीनीची पई गई दशरथना राज्यमा राज लेनानो नहि, प्रथ राज न लेवानो कजीयो ऊगो ययो हतो तेजो मानता क राज मानव माटे तरणा जेहु हजुरु, अने धन करता मानवनीवन किमती हजु तमे मानवता माटे बनेना भोग आपी शको सहा ! जाजे तमारा पासे मानवता हु मागे हे ! आजे आरो देव्य आपतिमा हे, माटे मानवता धन लोभनो त्याग मागे हे, आजे भोगलालसा वधी हे, पहेला मधा पुर्योनी भोगलालसा मरी हती, अने भोगपुण्य वधु दद जावे भोगतु पुण्य ओहु अने भोगनी भूख थपु हे

भरतनो त्याग —

दशरथ भरतनो राज्याभिवेक करवा मागता हता, पग भरतनो ते सामे

वाषो हता, ते तो दशरथ साथे ज जवा तैयार हता, केकेवी मोहरधर्म हती, परं पुष मोहरधर्म नहातो सामे भरतने कहतु रु के तने राजगांडीनो गव नपी, परं पिताना वचननी सफलता रातर ए लेवी जाईये, मिता-माता-न्यदीउमाइ बधानी समति होय तो वही भरतने राजगांडी छेवासा वाषो हतो । आवी उक तमने मछे तो । परं भरत तो रामना चण्डमा ढळी पछ्या हता, अने कहतु के हु गांडी लड ता आ बापनो रीझो अने तमाहे भारे न गणाड भरत राज छेवानी ना पाढता हता, तो शु राज शाह होतु । रामने लाग्यु के मारी हाजरी हये त्यां मुधी भरत गांडी नोइ ले, भेट्हे रामे जाँडमां जवानो निश्चय क्यों

अत्रै आचार्यार्थीजे जगाव्यु हतु के रामायगना पात्रोने अमे ऐ दृष्टिमे पानीबे छीभे ते रीते रनु करीबे छीने

आजे माननी जेटली नीतिनी वाठ बोले हे, जेटली तेने देये होय ऐ सही । रामने हैये अने हाठे नीतिनी यात हवी रामे छगलमा जवानो निश्चय क्यों, अने भरत मुस्तकडे रोयो दशरथने चक्र आव्या, केकेवीने आयानो सचार ययो, परं दशरथने लाग्यु के बनमा राम तु ख केम उही शक्ये । रामने लाग्यु के बचन पाक्यु होय तो स्नेहना मोहमा जेचावु न जाईबे ए चारी नीकब्या, रामे; कौशल्या पासे जह इकीकृत करा रामने बनगास, जहा सामढीने ते परं मूछा पाम्या, रामे माताने समजावी के तु मारा पिताना धर्मपत्नी हे तो कायर छीने उचित आ शु । दीर्घी पर्नी चीर जोईबे राम छिदणनो दीकरो हे भेन बननो भय थो । रहती मूजटी भातामे रामने रजा आवी आमा कोने महान् मानवा दशरथने, रामने, कौशल्याने । बधाज महान् दता

राम आ रीते बनबास जवा तैयार यथा तमण सीताने पूज्यु नहोतु मने लागे ते तमारो वा सामे बिराघ ऊडे परो । तमारे राम के दशरथ जेगा शु ते के । रामे सीताने पूज्यु न दतु तनो लीताने बाधात नहोता ।

(११२)

यह जो समाचारपी देखो 'आद' पाम्या, अने एम पाढ़द बसा
यथा वर्तमानमा 'जाहु दोय तो' श्य कने ! धेरधेर दशरथ जेगा बाप,
जेषा पुत्र अने कौशल्या जेगी याहु दोय तो उचार स्वर्ग बनी जाय'

[व्याख्यान '९]

पारंका मा-वाप पोताना करी शके ओहु शिक्ष
दिकरीओने कॉलेजमा मळे छे के ?

—○○○○○○○—

(प्रेसांगाई दृष्टि, अमदावाद रविवार ता १४/१०/५२) :
मनवजीवन किमती छे—

अनत उपकारी महापुरुषोना बचनने अनुष्ठरीने अने बचन सामिल्याना;
विचारवाना योगे जेमना हैयामा ए बात निष्ठित छ के आ सारमां मानव
जन्म ए किमतीमां किमती वस्तु छे, ए द्वारा आत्माभे। परमपदने सापुत्र
जोइधे अने अनी साधना माटे आत्मान परमपदनो राह योजी आपे अवाप
योगनु आधाधन करु ज जोइधे अने भेवी जेमनी स्वाधी छे, पण योगनी
पहेली-बीची भूमिका उपर। पहेलीचवानी शक्ति नभी भेवाओ बीजी के जीजी,
भूमिकामा रहेली योग नी भूमिकामा अगर तो पहेली-बीजी भूमिकामा
खी तेझोभे बीवन केम जीवु ते माटे आपै देयना पुरुषोधे पद्धति पूरी
पाई छे अने भेने आपणे सस्तविना स्वस्त्रे जोइधे छीधे

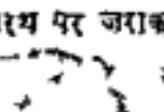
रामायणना पाधोमां दगाई, राम अने राणीओ बोरेने 'बीतगुग' भगड
चाने कई रीते जेया छ अनुं वर्षन चाले छे भेटले जे चिडीओमां प्रभो'

‘जावे छे, देना जवाबो पठीयी आपीनु. रामायण अगे बीतरागे जे दृष्टि
करी छे ते जही कहेवाय हो

जीवन,जीवनानी कला—

आथ तरीके जीवनानी मुद्रर कला रामायणना पाथो पूरी पाढे ते
दशरथ यहा साम्राज्यना मालिङ्क इता उता राम्यनी वकङ्ग तेथना पर न हती
राम्य जेना पर पळङ्ग करे तेवा राजाओने नर्कना अधिकारी कळा हो अहिं
बेठेला जेओ यद्यनीचन जावे हो देवो आयोने उद्दीप्तीने कहेली उस्तुतीने
ओब्ले नहि तो आवता उम्मे बधु नुकसान पास, भेट्हे अे जीको बधु
नुकसान न पासे ए माटे घरवासर्हा बेठेला लोकोने आ जीवनानी कला
जार्य उस्तुतिभे अनेक कथाओमा आलेली हो, तेमा जार्य उस्तुतिनु दर्शन
कराव्यु हो

राम त्यागी इता—

‘वैकेयीने जो वचन मांगवानो विचार न सूख्यो होत तो रामायण रचात
खद! दशरथ यचन आपी शक्या अने पाठी शक्या ए रामना चोप
हता, तभारा जेवा नाप होत तो ते न आपी शक्त रामे दशरथने जे
चचनी रहेला त न कळा होत तो गमने आजे याद कोण करत? रामनी
माझक ग्रन्थ वाच्ये त्यागना’ वैयापी करवाना तपे विचार कयो हो!
साम्राज्यना मालिङ्क होवा उता राम त्यागी इता दशरथे अने रामे भरतने
साझ्य ‘आलु आलु ते उदारता’, पण न लऱ्यु ए भीसाधीवेदा नपी! भरते
कह्यु, “राज आपो एमी अपनी मोटाइ पण हु लड जेना मारी
लघुताहे” विदाने अ रीते वचन जापवानो अधिकार ए, अवो विचार
रामने आवी जाय तो? पण ए विचार आव्या ज नहि, अने ए वनमा जवा
हैवाया यया, दशरथ पर जराक मोहनी चसर यह, पण बोल्डु न पूर अवेक्षे,
अपनो मफ्फम  राम जाय हो, भरत रुने हो,

लेवानी आवा तमे यनो तो घरछार येवो चाले ! सहु आपवा त्रैयार ना होय, आ आर्य उस्तुति हे तमारा इफनी भीतिक चीजानु भक्त यतु होय तो जापना माटे तमे त्रैयार खरा ! अने कोइ ऐ रीते आपवा त्रैयार थाय तो ते लेवानी आतुरता पण खरी के १ धधने दिक्षा राम जेवा जोईये छे, पण स्वार्म वरते बधु भूली जाय छे आयों घरमां ऐठा पण केम जीरे तेनी कळा आ सखृतिमे बतावी हे

ए रीते जीवो—

सीता दद्यरप्ने नमन करी कौशल्या पासे आवी सामु तो बहुनी मा ने १ सामुने भन दीकरी फिसती के बहु ! तमारा घरमा पण कोकनी सागु तो छे ने १ आजे केम चाले हे ते तो जाणो छो ने १ तमे सहारमा ए रीते जीरो के तमारा सपर्वभा जावनारनी दुर्गति न थाय सीता कौशल्याने “ तमने शु इक ” ऐम कहेवा न्होती आवी, आजे इफनी वात तो धरी चाले हे, पण आय देशमा सहु सहुना इफ हता, पण कोइना पर इफ डोकी देसाढवानी बेरकूशी न्होती आपगे त्या खीजोनु जे गौरव यतु ते हवे भरी गयु छे तमारा सहारमा काई यज्यु नथी अटले पण त्यागनी जहर हे अने सहारमा छे तु, भोग तमने पूछता नथी छता तेनी केडे पड्या छो आजे ता खावाय नथी, झरणा ऊभा छ पति आये त्यार पत्नी चारण आगळ ऊभी रहेती, अने पोते जमाढती आजे तो सामञ्जु छे के पणा शेठीआभोने रसोया जमाडे हे आ इसवा जेवी वात नथी पति-पलि एक चीजना साथी भेमनी ऐक चीन्ह प्रत्ये काई परज पण खरी रामनो, सीतापर अपार स्नह दहो पण ए परज तुमाये जेवो न्होती

अशुभ उने तो दहु कमधागी !

सीताऐ कौशल्या पासे वनमा जवा रजा मामी कौशल्यामे राम वनमा गया ऐनो भारोप चीता पर न मूकयो तमारे त्या काई लराव यने तो

बहु कम्मागी ज कोहवाय ने ! चाही बधा घोलापगा सङ ने ! तने दीक्ष-
 रानी बहु रावो छो, तेना उपर तमारा घरतार जना ते जेवी छार पडे
 भ्रेम बद्दो छो ! तमाह घर तमारा दीकरानी बहु माटे पारकु के बाबीकु हैं
 बाबा तो स्तु बगडावो छो पग एनो कह अय आओ छा ! आमने
 त्या छोकरो मर्या पही बहुना सच्चा बाप्पाना बनाउ बनेजा हे
 बहुन ब्राह्मर चाचरी होय दो ते उद्दराना बरले पोतानु माने, बानु
 सहराने साचा मा-बाप माने, घरनी मालिकी पोतानी उमब, आ
 यादो समज्जवा जेवी हे सहार समजे नहीं तेम्ये माहबो नहीं, अने
 अशस्मये माडेलो उणार छोडवामा बाथो नहि रीतराय पर्न, यद्यप्यो
 अने गुद्दे मान्नार भेरी रिते सहारमा रहे ते के बीबाने बदन फरानु
 मन यार कौशल्याभे धीराने दीक्षी करी हरी, ऐम के दीक्षी ता पारके
 देर बवानी होय हे त्यारे बहु कायम पोतानी पाए रद्दानी होय हे छैले-
 जमा भगवा मोकलो छो ते भेदु शिद्धग हे हे के पारकाना मा-बार
 पोताना करी शके ! पारी खीओने तो रसोइ करता पग आपहती नयी
 कौलेजमां भणी भेट्ठे रसाई न आरहे, बालग माजता पग न जारहे कोहु
 छोकराने बरार क नोकरी करता न आवडे तो ! बा हु अटला माट कहु
 छु के धर्म तमारा मुधी पहोचतो नयी राजीओ राजाने पीरखती, दीक्ष-
 राने मा पीरखती अने सुके रोट्टे देर लाहि चढायती मोदीमा पतिनु
 मायु पलनीना खोलामा रहेतु आ आपति बेढा बननु, बाकी बेदबीजानी
 आहे न ऊरे भेदी आम या रहेती आजे तो बा न चाले ने ! हो पही
 होटेलमाझी भाणा मगापजो ! पभिममां भ्रेम लाले ते, बाबे तो चामान्य
 माणसने पग नोकर जाईने न चातवातमा डॉस्टर जाइन भोड पर होय
 तो केमीली डॉस्टर जोईत्रे, पग काईभै केमीली पर्म्मुऱ याभ्या हे ! गुदु
 भले बहु भगेली न होय पग सहार जोईने बधा ! कह नोकर गाफ-
 बाढा घर माडवाना नयी दीक्षीने कन्यापगु, यपवारानु अने तिप्पार्नी
 - जविता आवडे भेदु यीलगानु ते कोहनी खोदी गुणवीमा प धुंडे नाही

‘**खी-पुरुषनो शरीर अने लागणीमा पेर हे ए समजवु जोइंगे खी रक्षित हे वाकी समेज्या विना शाखे खीने अधम कही हे ऐवी वातो नकार हे शाखोबे खीने जडी बुद्धिथी जोई हे अने ऊचा मानथी नीरसी हे ऐवी सासु छे खरी ? —**

कौशल्यामे सीताने कछु राम पुरुषसिंह हे, ऐने बनवाइनु दुःख नयी, पण तु देवा हे, मुक्तोमंळ हे, जन्मथी मुरमा उठरी हे बनमा पगे चाल-वानी पीढा बेठाये । कहुनी चिंता करनारी सासु तमे भाली हे । अने न होय तो घर छोड्यु ए तमारो निर्णय ल्यरो । सीताजी तो पति पाछ्य जवा रजा लेवा आवी हती, पण कौशल्या जागलना कष्टना विचारे रजा भापती न्होती पल्ली मुखी पिताने स्यायी आवी होय ते ऐज रीते पतिना घरे जीवना मागे तो ते खी कदेवाय के ढाकण । सीताने पिताना घरनो मुखनो विचार आव्यो होत तो सीता माटे शु लखात ? सीतामे तो कौशल्याने कछु के आपना तरफनी भवित बनना सकटोमा पण कल्याण करये सीता बनमा जवा नीरुक्ष्या पण कोइनेय केकेयी माटे दुर्विचार आव्यो न हतो सीताने नीरसी रहेली अयोध्यानी नारीओने लाग्यु के सीतामे पतिभवितनु अनोयु उदाहरण आप्यु हे सीतामे पोताना उचम आचार बने शीलधी उचम कुळने उदयो हे

आजे तो भाई ऐटले भागीदार —

राम-सीता बनमा जवाना समाचार लग्यने मक्क्या अने तेमगे काभ अनुभवो ए मारा-पिता बधु अने बधुपल्लीना भरत हता समारा उत्तरभा जामज हे ने । पण जागे तो भाई ऐटले भागीदार, ऐमज लाग्ने । लग्यने कोध आव्यो, अने लाग्यु पुरुष स्वभावे यारो होय हे, खी स्वभावे वाकी होय हे, केम के केकेयीने साचरी राखेउ बनन जावे वस्ते माप्य शु भरते राज लीपु के नहि भेरी तेमगे उचर होती ऐमगे भरत

अथम द्यावो ऐमने कहु के हु रामनो अभियेक कहे, पण आपरे तो ए दशरथो पुत्र हतो विचारो शमावी दई राम जोडे जया निर्णय क्षें लक्षण दशरथनी अनुमति लहु मुमित्रा पाए आध्या, ऐमने कहु, “ राम मध्याद पुस्तोचम हे, ऐमने छोटी हु रही नहि शकु ” लक्ष्मगना बचनधी मुमित्राने आधात छाप्यो पण अवरमां आनद थयो ऐवे हैमु मजबूत बनावी कहु खोखर, हु मारो दिक्षरो हे, जा स्त्रीमे स्वार्य दान्यो नेवो स्वार्य पुरुले दावता आवद्ये लरो ! आवद्ये तो जगदने मोठो आदर्श पूरो पही जाय, मुमित्राजे कहु राम दृष्टणा आवीने गया, स्तट तेयार या, क्याक अतर न पडे ।

एवी मा मळवी मुश्केल छे ---

बीबा रामावणोमां पण कहु हे के मुमित्रामे लक्ष्मणने कहु हतु के रामने दशरथ मानजे, सीताने मारा जेवी मा मानजे अने बनने अयोध्या नानजे ! हु खमा मुख मानवानी स्थिति त्यारे आये ज्यार आवी या होय आवी मा मळवी मुश्केल छे

स्त्री पीर रने छे त्यारे —

लक्ष्मण कौशल्या पाए गया कौशल्याने दायु के लामण छे अटले जाए मारो राम अही छे, पण लक्ष्मणे कहु ‘ हु रामनी पाउळ जाउ पु ’ पण कौशल्याजे कहु “ रामनी गोरहाजरीमा तने जोइ रामना विरहनु हु ल मूर्छीय अटले तु अहीं रही जा ” लक्ष्मणे कहु, हु रामनी मा’ छे, वाराधी आवी अपीराई न लवाय आपने त्या छीने कुद्र बप्पवी छे, पण ज्यारे ए धीर बने छे त्यारे ए मानवीने बढावी जाय छे

आ पही राम, सीता, लामण बनमा चाल्या पाउळ आखी अयोध्या उछाली हती बचाने रागद्व हतु, अयोध्यातु सर्वस्व चाल्यु, कैफेयीना दिलमा तुकान मच्छ अने हैयामा परिरुतन थरा माइदुँ अयोध्या निर्बन्ध बनी

हती रामे समजावी सहुने पाजा आव्या, भरतनो निश्चय अचल होय,
अटले मत्रीओ रामने लेवा गया, पण रामे कहु वचन अकड दोय,
मत्रीओ पाढा आव्या आ पछी भरत अने कैकेयी रामने लेवा गया राम,
सीता, लक्ष्मण नदी वटावी झाड नीचे बेठा हवा भरत अने कैकेयी त्वा
आव्या, राम, सीता, लक्ष्मण सर्वे कैकेयीना पगमा पड्या आपणे आवा
राम, आवी सीता, आवा लक्ष्मण पेदा करवा छे ने ।

-[व्याख्यान १०]-

अध्यात्मवादमा तमास वादोनु पृथक्करण समाप्तेलु छे

साम्यवाद आवे त्यारे रहजो !

उत्तम जीवन अे आर्य देशनो शणगार छे

—०००३०००—

(प्रेमाभाई हॉल, अमदापाद वा २१-१०-५१)

आ आर्यदेशना मानवो के जे आयसकृति थी सस्कारिक धयेला होय
हे तेओने मन मनुष्य जन्म ए ऐबो ऐकड जन्म छे के जे द्वारा के
आत्मानी सपूर्ण उन्नति साधी शके छे, ते जामद्वारा ए उन्नति साधी
शकाय ते जाममा जेओ योगना पहेली भूमिका उपर आरोहण नप्ही
यद्द शक्वा, तेमने कह भूमिका उपर रहीने जीवतु जाईभे तेना बोधपाठ
मठे ते हेतुथी आर्यदेशना यद्द गयेला योगी नहिं पण अनापास योगने
पानी जनी दशामा उन्नतिभर्तु जीवन जीवी बतावनारात्रोना प्रसुगमाप्ती

आ प्रधान सर्वांदो छ मौतिक वस्तुओ भाटेनी मारामारी अने तेनो उपयोग करानु प्लेय ए आर्द्देशने माटे अङ भोटामा भोटू कलक छे जे कह आ इनिगमा छाईनै ज्वानु छे तेनी पाठ्ड निंदगी पूरी करवी ए आ देशने कर्णित करनाहु छे

शारो साथे जीवनने सरखावो—

आ बची बातो हैयामा न देसे तो नकासु छे रामायणना पात्रोनी बातो एमाटे कहेली त्रै के जेना दृष्टतोमाथी कहेली बातो हैया मुझी पहोंचे, अने दूजे सुखारमा ए पात्रो साथे आपणा जीवनने सरखावता चाली उन्नत जीवन जावी शकाय, नहि तो सुखारमा भौतिक वस्तुओ तरफ लड्चाव गए अनेक साधनो छे तेमा पसावानु अज्ञानी भाटे तो बने कारण के महान माटे आर्य देश दाल अने घट नभी परलु केवळ परमपदनी साधना हे जेनो इच्छे छे के मरी जता पहेला केम जीवतु जोहइअे तेओ राबी भौतिक वस्तुओमा फकाय ए शोचनीय छे जाँज मरी जता पहेला हु मोगवतु अने मेलवतु लेवा विचार होय छे अने ते ऐट्डी इद जीनी भावना होय छे के बारसामा पण ऐट्डु मूकता जगानी इच्छा होय बारसदार पण तेमाथी चूटो थाय नहि, अने तेमा ज मरे जावी भौतिक लुओ पाठ्ड दोडनाराआने मृत्युनी लो याद ज होती नभी नभी श्री ता कलकित बने छे ऐट्कुज नहि पण जाखो देश बानाही कल-
ब्द थाय छे अने स्वाथ माटे जे काई चेर त्रै तेनाथी तो शुगा माग्नोने गरी जावे

यानधी थवण करतां तन्मयता आवे छ

रामायणना पात्रो विषे जे बहेवाय छे मनु शुगु शु लहियी तन्मय
अर मुझी छई जाओ छो ! अने ए पात्रोनी शम्भामही रमारा पात्रो
करी लुओ छो ! कारण के जे अगम रुग्न लेनु चिन कछ

चिंतनमायी मनन अने पछी तामयता आवबो जोहबे आ देहना मनवोअे प्रथम तो भार्मिक भागसोना थरण गुमाया हे आजे त्यागीओने प्रवचनो सभडारवानो शास्त्र थाय छे, अने अनत शानीओनी आशा प्रमाणे अने योग्य भावा होय तो थरण करावीबे छीजे, परद्द धोताने थरण करउ ऐबो धर्म लागे तो नहीं छान शिवाय सामळे अने चिंतन न पाय हो तम्यता न आरे, ते थरण जिवनमा न उतारे तो कथाना गुणो शु तेनु 'मान न थाय, अने जीवन सुधारवानो उत्साह न जागे

त्यागनी वृत्तिधी सर्जन

वनमा जठा राम, लक्षण अने सीताने वढावी सी पाढा करे हे, कारण के तेमने पिता पुत्र जेबो सचप हतो राजदु से प्रजा दुखी हती, तेओ वनमा जाय हे प्रजा तेमनो सत्कार करे हे तमारे तो हेतु साकह अन पुष्टी पण साकडी शाखोमा भूरधी लखाई गयु हयो के " चमुधेव कुदृवकम् " हैयु विशाळ थतु नयी दिव्य शाननी वातो जीवनमा उतारनारा योडा होय हे आ बधी वातो हैयामा वधे तेवा प्रयत्नो करजो तो हृषि विशाळ वनदो पिताना वननने खातर राम वनमा गया, गादीनो हस्क न भाग्यो आवा हस्क माग्यो होत तो आ फाळनो इतिहास लखात, जेमा चो हस्कनो धाखल चलाडी रङ्गा हे सूपडीमो बेठेला पण जाग्या हे, अने सी हस्कनी वाता करे हे पण कोण कोना हस्क चूकवे ! आमा तो चळ, त्रुदि अने लागवगनु नाठक चाल्यु हे, अने ते परदेशमा चूट्याजोनी वातो यती हती ते तमारे अही आदी हे जेक त्यागनी वृत्ति भाटे सजायेलो देह आ प्रहृति आदरे हे जायी जो के तमने तो जानद ज यतो हयो जमारी वातो तो तमने नहि गमती होय, कारण के अम तो एकारजदार गयेडा बेटले चदाव्या न चर्कु अम तमे मानी बेठेला छा आ मोटी दिगाल तुडे जने अमने बेम लागे के आ अमारे मार्ग ते, तो मार्ग निकळे

जीवता तो शु मरता पण—

आजे तो जे भौतिक वस्तुओं पाछळ जगत् दोढ़ी रहु हे तेने पण
जीवता ता नयी छोडता पण मरता पण तेमने छोडवानुं नयी गमतु अे
तो मरता भरीने छोडे हे जे भ्रो भौतिक वस्तुओं छोडवारा हे तेभ्रो जान-
दयी मरे हे, अने कुट्टने हिंमत आपवा साये वारसोने चेतवणी पण
आपता जाय हे के, तेओ तेमा न पशाय

राम तो भरतने गाडी सौंपी चाली नीकल्या दृता, तेमने तो उतोप हवो,
सारी वस्तु खारा माणसने सौंपाय बेटले सारी चालये आपणे अही तो
खारा माणस ज मळता नयी सारो मानीने राज्य चलाये ते सारो के खार
मानीने राज्य पचासी पाढे ते सारो ?

विवेकीओ जोत्खमदारी न छोडे

रामने पाडा लेवा जाय हे त्या बनमा थण जगा आनंद भारे पक शाह
नीचे बेडेला दखाय हे तेओ अयोध्याने याद करी गाडा नहुता दैता के
खेद नहोता अनुभवता कैफेयी यत्स, यत्य ! कही शम । अंव इह
हे राम तेमने पगे पढे हे आ केसो भाय ! तमा ये इह
तो शु पण मरता पण कहेता जावो के राज्या करु इह
अणवनाव हे तो तने घेर न जावा ! या यहानुभावाय इहाँ इह
हे अने भरत भूर्जित याय हे त्या धरन के मुद्रा नहाय उपर्युक्त
यीक्षणाथी राम मूर्छा वाढे ते, भगव भगव अर्पण कर्तु उपर्युक्त
मारी शु अमस्ति यह के शशवार्मा वसति इहाँ इह मूर्जित याय
आव्या आ साभदीने प्रण तम इह इह इह - इह के इह के
कित करो भेम लागे हे

मरते गादीनी लाल्हान्हु गोङ्ग इह अप्प तम के अप्प तम के
बात राम पाये मूर्छी कर्म इह इह के

स्थिति जागतु नथी भेटले रामने विनती करी के तमे गादी ल्यो । जग निष्ठ्र लभण महा अमात्य बने, हु प्रतिहारी बनीश अने शत्रुघ्न छन दाढ़ये, आम चारे भाईआ शोभीशु अमने कलकित न करो—

लभणने जगनिष्ठ्र बद्धा, काण के अमने जगत् पासेथी कह लेशनु न हतु ब्रह्मचारी दता तेमने तो जगत्ने सेवा आपवानी हती कैकेया रामने भरतनी मागणी स्वीकारवा विनवे छे, अने बधो दोषनो दोपलो पोते माथे ले छे, केटलाक दोषो पुरुषो अने खीओना जातिस्वभावथी होय छ ते परे तेम नथी आ दोषो साथे अमुक उच्चमता पण हाय छे कैकेयी कहे छे के खी जातिमा दुटिलता शिवायना बधा दोषो मार मा आवेला ते आ अनर्थ माराथी थयो छ

खीबे पुरुष पर साम्राज्य जमाव्यु छे ।

खी ज्यारे निर्दय नने छे त्यारे तेनी सामे पुरुष भेटलो निर्दय नहि बनी घके, भेटनुज नहि पण खी-पुरुषने निर्दयतामा आटी जाय कैकेयीथी आटले जनर्थ ययो त्या सुधी स्वार्थना मोहमा निर्दय रही, आम छता यातरातमा रही जई ओंतु लावनार खी छे जा भेनामा कछा छे ए कछाथी पुरुष उपर ऐणे साम्राज्य जमाव्यु छे, तेनी वधु सेवा फरवी भेवी पुरुष उरर छाप पाडेली छे भेटले ते बधाने अवगणी चकश, पण खीने नहि खीने मर्यादा जेवी मर्यादा नहि जडे जने खी मर्यादा ऊडे तो ते जोइ पुरुषने शरमातु पहे

सीता भेवी सतिअधी सारी कहेवाई —

कैकेयी जने भरतनी यातो रामने गमती नथी राम कहे आज सुपी गो पिताथे नमने बचन आपेह भेटहे ते बचन पितानु ह्य, ह्ये मारा नवाइनु बचन के रामनु बचन बने छे, अने ते माराथी ज केम उत्थापाय

बचन भासनार बेनेय जीवता होय ता बचननो भान थाय, आ यम्बेहे चीता
भरजे अभियेक करामवानो हठो बेटहे पाणी लेवा मया हता तेमने तो
रामना बचन्दा माटे भद्रा हती, जेटखुज नहि पा गौरव हठु ते आमता
हता त, जे पिता नथी करी शस्तो त भरतना मोटा भाई राम भरतने
रामाभियेक करामदे ठमारी मापक चीता राजगांदीना स्वर्णी नदोता
चाढ़ी जीओना समवाष्यायी पुष्पयोगे जगतमा शुशु उल्कापात यचाव्या छे
उत्तार्या हतिहास अनित नथी चीओ सारी कहेवाइ ते आवी सीता जी
सत्तामोयी, बने पुष्पा राजा कहेगाया होय तो ते आवा राम जेवा महा
पुष्पाने ढीपे, ठमारी जातने लड्ने नहि

आगा फल्दी पण भारे जुलमथी—

केवेयीने प्रतीति हती के राम जे राम यसु पाहे ठिल्ल
बचन मारे थलध्य तेम भरत मारा उचन माट अ०प्य हे नया ते हठ
मारा बचनोने उत्तार्या शुक्ते नहि आम भरत रामन आया आना हठ, त
तेमने तो राज गृहने पाठा जवानु खु भरत ऊनु नथी हैंग, तज
बोढती न री भरतना रायाभियेक करामता केवेयीने पोदानु यानु हठ
लागु पण साथे साथे अम पण खु क भारे अनर्यं ययो भरतन गृह गृह
वानु हठु डवा तने आनद नहातो राजा दशरथने अनिरेक्षी हठ हैंग
तेमने तो कहज हपशोह न ययो, कारण तेनो तो दाँड़ी खु हृष्ट हैंग
भरते सारी रीते लावा वस्तव राज्य चलायु के जे विहि हृष्ट हृष्ट हैंग
दहो दशरथना ल्या। समयनो उत्तर ऊत्रव्यो या ल्या हृष्ट हृष्ट हैंग
पानो हठा घर न रौटे सोय घर न अदे, बेट्ह के हृष्ट हृष्ट हृष्ट हैंग
अलिप्त रेखानी सखति रामायथमा ठाली टालने हृष्ट हृष्ट हृष्ट

ऊचनीचना मतभेद अगे आचायथीके हृष्ट हृष्ट हृष्ट हृष्ट
जगानु हठु के थेगिक राजा पाए नेपाली अग्निहोत्र अग्निहोत्र अग्निहोत्र
राजाने सरीदवानु कहेता देनी किमव गृहीत हृष्ट हृष्ट हृष्ट हृष्ट

राजा करकसरीओ हता प्रजानी पीड़ा हैये हती तेणे कहु स्त्रा लाल
पाठ्य लचुं तो तेनु मछु करी शकाय वेपारीओ निराश थया के जे
आ न खरीदी शके तेनी प्रबा शु खरीदे । उदास यवेला वेपारी
दया ते बखतना धनपति शालिभद्रनी 'मा' ने जावी बने तने वेपारी
बोलावी किमद पूछी, तो १६ रत्नकब्जना २० लास रुपिया कद्दा
मोभानी दृष्टिभे आपी बब्ल खरीदी रत्नकब्ज सोळ हती शालिम
सनाश राणीजा हती, अने तेने पाढी बने इकड़ा करी वहेची अ
बगायु के आ दुरड़ा शरीर लड्याना काममा लई पेंका देजो वेपारी
आधर्य पाम्या, के रतो वट राख्या

राजाने मोभानी खातर खरीदवा वात ररी शालिभद्रनी माने खरीदा
ज चिना बनी ते जणावता सवा लाल रुपिया लई आवेलो कासद पाछो गव
अने वात कहा तो राजाने आधर्य थयु हु तो तमारी पासे प्रतिशा ले
दावया मागु छु, के आजथी नमारी पासे अध्यात्मवाद शिवाय कोई चीज
वादनी वात करे ता सामळशो नहि राम्यगादमा तुदि प्रमाणे स्थान अं
बधाने रोटीनो आदर्य छे अम ध्यारया कदगाय, पण हु कहु छु के अध्या
त्मगादमा शु नपी ! महा पुरुषो तेमा धगु कहु छ जेने नेटु पचे तेटु
खाय तेमा चीजाने नु वाधो ! कोईने वधु मछे-मेलवे ते सामे आपणने
वाधो तेम होई शके !

आपात्मगादमा वधा वादानु पृथकरण छे—

अगाउना उमयमा राजा-प्रजानी रिति हती ते भाववी होय तो
आपणे उमजी लीधा शिवाय शूटको नपी आध्यात्मवादमा नु नपी !
उपछा वादोनु शा आपी, पृथकरण करी रिति प्रमाणे वधु ओपु
मेलवी जीवन बगडे नहि अने ज्येष्ठ डपर पहोचनानी रिति पेदा करवाना
ध्येयनो तेमा निर्देश करेलो छे द्ये राजाने बदले युद्धनो प्रसन कैंची रीते
पाय छे अने रावणनु पात्र कहु छे अे हवे पछी कदेवानु जगावी
प्रवचन पूरु कहु हु

[व्याख्यान ११]

मानवी ससारमा उच्च जीवन जीवे तो आ
मानवलोक देवलोकनी इच्छा न रहे अेवो दने-
वाणीओ वात वातमा चण्पा उदाने ए रुपनगर्वनी वात छ-

—००॥५॥००—

(प्रेमाभाई हॉल, भमदाराद दा. २५।१०।११)

जन्मनी सार्थकया—

अनत उपकारी महापुरुषोंने मानव कन्द क्षेत्रे ए नहामापदारी
खेल्या छे अने ए महाभाष्यनी सफळता, जा धन्मां को परमपद किना
बीतु कोइ साध्य नपी, जेतु जेना बतरमा बत्र त्योउ याए, “परे वा ना
आर्य देशमा पण अनेक साध्यविद्योगा अनेह बानाओ अनउ वार अन्या
अने भटक्या जा आर्य देशमा कमतु याएक ग्री बसइ औ साधना निघय
कराय, अने मात्र साध्यनो ज विचार थे नहै चाहे, एत परमपदने
योजी आये अेवा योग्ये साध तो ज परमपदनी नहीक यह पश्य, आर्यी ज
अने विरेकनी प्राप्ति वगैरे मेवक्यानु छु छे वारी भूमिकानी लायक त
पामवा माटेवी चोथी भूमिका कही छे जा भूमिकाने पामेला भो ता
अद्वयी बने अने विवेक पडी त्याग, ए ग्यो हर्त्याग, अने ते वार
मानवी परमपदनी नजीक पहोची थाई

आ बी नी त्रीजी भूमिकावाला सुगाला रेवाना अेमना जीवन
रना अनेक प्रसुग जाववाना अने हर्षभी रही योगती *

पहेली भूमिकाने नजर समझ रासी सावधानतापूर्वक जीवे तेज परमपदनी नजीक पहोची थके जा सायचेती केवी होय तनी जा रामायगना पात्रो द्वारा चाँकी करी छे हवे आपणे रायगने जोधानो छे वीकराग शाहने रायगने कह रीते ओटखाव्यो छे त वात करीते दशरथ राजा अने तेमनु कुद्दम घटस्थी हतु तंजो बधा त्यागी नहोता, मोगी हता छता बधा योगनी भूमिका पर जीवनारा हता पहेली भूमिका जेमनो आदर्श छे तेओ कदाच मोहना ज्ञान आपे पण तेमना अतरनो दीवो तो सळगतो ज होय ते ते अवसरे प्रकाश आपे ते रामायगना पात्रोमा पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माई-भाई, शोक विमेरेनु जीवन जोयु जा जो याद रासीते तो आ सार जे समाप्त छे तेमा जराय नीचा पछ्या विना उच्चु जीवन जीवनु ओ सहेडु नभी भूल्वनारो मोह नानोसूनो नथी योगनी भूमिका पर बेठेलाने पण जा मोह भूल्वे तो योगनु स्वप्नु पण अने न जाव्यु होय तेनी शी हालत याय, ए समजी शकाय अेनु छ आ बधा पात्रोनो सार आपणे सामल्योने ? अपसर आवे तो तमारो सार पण आमज चाले ने ? कैकेयी मापक कोई खी विल्व ऊमो करे तो, 'उ याय ? आ तो दशरथनु कुद्दम हतु अटले खुनामरकी न थई, पण ए बधा मादने आधीन होत तो ? भरत गादी-पनि यात ? अने दशरथ चचन पालन करी दाकत ? ए बधा भोगमा खरा, अदिविदिमा सरा, पण ए अदि-चिदि के भोग तेमने खाइ न जाय त्यारे आ जगतनी चीजो तमे खाजो छो के ते तमने खाई जाय छे ? भोग तमने भोगने छे के तमे भोगने भोगबो छो ? शाखे तेने भोगपुरुष कस्यो ते ते विवेकी पुण्यनु जीवन भोग छता मजानु होय के जने जेमनु अतिम जीवन पण सुदर हाय छे

एवा प्रसगे धीरज राखवी घटे—

आपणे कैकेयीने सुधरेली जोई भेना जेतो पल्टो कोइ खीमा भाग्ये ज जेता मळे भरतने जेतो राज लेना कस्तु ए हरी मोहनी वाणी, पण

अतरनी शार तो चीजी हती भरत राजगादी लेगानु स्वीकारतो नहोतो, ए शार व्याबधी ते एम ए अतररथी मानती हती, तमारा जीवनमा आबो कोई प्रस्तु जावे अने कोइ तमारी आशा न माने तो धीरज राखो खारा के ?

महापुरुषो जगलमा भंगल करे छे—

राम अगलमा गयो महापुरुषो जगलमा जाय तोय मगल होय छे—
अने कहेवत पण छे के, राम त्या अयोध्या राम अेवा पुरुष हता के जेमनी
देवा करवानु देवोनेय मन याय राम-लक्ष्मण पासे अतुल शरीरशक्ति
पण हती आ शरीरखड्हनो ख्याल जाजना विशानना जमानामा तमारा
भगजमा शुद्धाद्वो मुरुक्केल छे आर्य देवोमा जे महापुरुषो थ्या तेमगे जे
वस्तुरिति हती ते जगत् समाज मूक्खा प्रयास कर्यो छे पण खोटा मोहमा
के भ्राति जगावदानो प्रयास कर्यो नथी राम, लक्ष्मण, सीता विगेरे पात्रोनु
वर्णन सचारमा बेटेला जीवोनु वर्णन छे मरवानु ख्यारे ते ए जागता नथी,
बेटेले आबा पात्रोनी जीवन सामर्थ्याने ए मुजब नीववानु शब कर्यु छे ?
हमे तो जेट्टु छे जेट्टु मोगङ्घा विना मराय नहिं जेम चिंतामा जीवो
छो ने ? आ पात्रोनी हकीकत सामर्थ्यानो देतु ए के तेओ पहेली भूमिका
पर जह शक्या नथी तेओ सचारमा रहीने पण मुदर जीवन जीवे तो
आ मानपलोक देवलोकनी इच्छा न रहे जेवो बनी जाय

शब्देश्वर न उत्तराय—

जाचायनीपे अत्रे जगाव्यु हतु के बा तो कछिकाळ छे लोरो सारा
न बनी जाय अनी धगाने चिंता रहेवानी छ आपणे जे रीते चालता
होइभ बे रीते चालिभे बा तो महापुरुषानी बात छ सभव छ के
—मनी बातो जमलमा न पण मूका शर्झभे, पण तेथा कह महापुरुषोना
। सामर्थ्या अने न विचारया अम कहेतु ठाक नथी अमाद व कला-

कनु प्रवचन छापामा शब्देशब्द नज आवे अधुरम रहे, पण अमे ही निषय कयों छे के आपणे तो आगळ वघु ज गालो सारी अने आगळ वघु शब्देमा आधाराद्यी यता कोई अनर्थनो सभव याय, पण वाचनारे तेनी उाक्तेली रासी ऐवी घटे.

तो ससार केवो चाले ?

मरत राज्य चलावता हता, राम बनमो हता, मरत मानवा के राम जेवा भाइनो हु भाई हु, अपर माताभो पण अद्भूत हती पोताना दीक रानो इक गया हता जेनी तेसने असर नहोती, आवी असरवाळा बधा बन तो ससार केवो चाले ? वेपार केवो चाले ? वेपार के घराक ठगाय नहि ओरमान मानी आखे ओरमान छोकराना गुण चढे खरा ? पण आ भरतनी ओरमान माताने भरत रामयीय सदायो हतो

रावण क्या हतो ?

राम-लक्ष्मण जने सीता दडकारण्यमा आव्या हवे आवे छे रावण रावण भेट्हे सारी स्त्री जुझे अठ्ठे हाय मारवो पण सताव माणउ नहोतो रावण राक्षस नहि, पण राक्षसद्वीपमा ज मेलो भेट्हे राक्षस कहेवातो हनुमान् आदि वानरद्वीपमा ज भला वानर कहेवाता तेम

शख्तोना प्रतिकारनी शक्ति हती—

अगाऊ जे शख्तो हता तेना प्रतिकारना अने ते शख्तो पाऊ वाळवाना उपायो पण हता आजना शख्तोमा प्रासादानी के पाऊ वाळवानी शार्कि नथी आजना शख्तो मारकणा छे अने वाइनोय मारन्या छे रावण नण रहनो आलिक हतो बधा पर जेनी आण वर्तीती, अने पोतानु मोत यमना हाये अशे ऐवी खबर हती जनह राजा जने दशारण राजाना नाय माडे ऐण प्रयत्नो पण करेता, पण ते निष्ठ नीमइला रामनी प्रतिश इती ने परद्वी जे

रेने हँचे नहि, रेनु प्राणाते ऐवन न करु, राज सामान्य माषप नहोतो
ए पण धीरागनो उपासक दतो जने सदगुस्तो सेवक दतो

दडकारण्यमा रावणनी भेननो पुत्र सर्वदास खडगनी साधना करतो
दतो आ साधना धार वर्ष मुधी करवानी कठण दती आ उिदिने आडे
घण दिवस बाकी दतो, त्या राम, सीता, लक्ष्मण दडकारण्यमा पहोच्या
खदमणनी पेली उपासकनी गुफामा गया, सदग उत्यु जने लक्ष्मणे ते
शापमा लीधु ए बाधनी जाळ उपर पेरवता पेला साधकनु शोकु कपाई गयु
लक्ष्मणे ए माटे आधात यथो राम पासे जई खडग बतावी विगत कही रामे
कहु आ सर्वदास खडग छे, जने कोई साधकनो बध यथो छे लक्ष्मणे अपराध
कबूल कयो हदो, अटले रामने गुस्तो न आव्यो कोइ नानो मागरु अप
राष करे-भूल करे तो तमने कोध आवे खरो ! अने भूल करनारा भेनो
जेकरार पथ करे खरो के ? आजे तो नाना बालक पासे नूल कबूल
करावी मुरक्के पदे छे आज सुसारमाना अमारी पासे आवे छे,
अने आवो झुटेवाळा पण अमारी पासे आवे, अमारे तेमने समाळ्या
पदे अने कोइ सारी वात नालायक जात्माने जने पण नहि हवे पेला
साधकनु मायु कपायेतु जेनी माताने जायु, भेने शोक यथो पडेला
पगलेवगले जे राम बेठा हता त्या जावी ए शोक भूला गइ जने
भेने राम जायो कन्यानु स्म रहै ए राम पासे जावी, बनावटी वात
करी पोते राजपुत्री छे अन जगावी पोकाने पली तरीके स्वीकारवा
रामने कहु राम आ बनावट समनी गया जेमन कहु क मारे तो छी
साथे छे, लक्ष्मणे नयी, ता त्या जाव ! लक्ष्मणे कहु के, तैं एक्कार
रामने चिंत्या अटल हु का खरो सेपक छु, भोजाइ साथे माराधी एम केम
कराय ? आम एनु जपमान थता ए गई पोताना पति पासे पुनरा
मृत्युनी वात करी जेवी भेनो पति मोडु लक्ष्कर लई राम सामे लडारा
गया लक्ष्मण अेकला आ उक्कर साथे लडवा गया रामने लक्ष्मणनी

यकिमा विद्याय हतो लक्ष्मणमा अजेय बद्ध हनु तमारी पासे बाट्ठु
बद्ध होय तो ? ऐ नपी छवाय आजे बाणिआ बातचातमां चप्पा उद्देश्य
हे ए केरी बमनसीबी हे ? आजे मानरी बनस्पती करता बधु कमाय हे,
द्याँ आतरढी करुळती नपी बाणिओ बाणिआनु दून करे, बातचातमां
गुस्तो करे ए निर्बद्धतानी निशानी नहि तो बीजु द्यु ?

सीताहरण—

पेडी खी पडी तो रावण पासे गई अने रावण आगळ सीताना रूपनु बर्गनक
करी रेन लावण उर्फेयों रावण सीता हरण माटे आयो, पण रामन जोई
हर लायो, रामने सीता पासेथी दूर करवा युक्ति करी लक्ष्मणना अवाज
भेदो चिंहनाद क्यों लक्ष्मण विपतिमा ते मानी, राम लक्ष्मणनी द्वारे गया
अने रारणे सीतानु हरण कर्दु

लक्ष्मणे रामने जोता न आयाने अफली मूळा केम जाया ? जेम पूछता
रामे उनो चिंहनाद साभज्यानु जगा पु, पण लक्ष्मणे चिंहनाद क्यों नपी
जेम जापता ना कपट पयु ऊ भेन लाम्यु राम पाढा आव्या तो सीता
न हता राम मूर्छित यई गया, मूळामाथी जागता जोयु तो भेक पक्षी पाल
कपायेनु पट्टु हनु तेजे सीताहरण येछा रावण पर हुमलो क्यों हतो,
अने रारणे तेनी पारो कापी नाखी हता पशुपथीने ताळीम मळे तो ते
मानरी कगता बधु परादार रहे हे, पण आपगे तो माणस माणस मटी
जई पशुओने पण स्तराव करी नाख्या हे भा पडी राम-लक्ष्मण, सीतानी
घोषमा नीक्ष्या राश्म धीताने लई जहो द्वो त्यारे रामने सीताने पूछतु
के हरने रपाने विषाद केम ! पन सीताने हाय न लगडाय एवा तेनो
गिरप हवो, ए प्रतिशब्द हतो, जेंगे सोवाने भूमि पर रसइता मानवीनी
पल्ली मटी पण रहना रावणीनी पठरागी बनगा कधु पण सीता तो
ऊची भाँच नहोता करता, ते तो पर पुर्यने ऊची आखे जोवासा पाप
मानता, पण भा बधी भायै उस्तुतीनी बातो रमने गाही लाग ने ! रावण

(१३९)

माहन वाधीन हतो, पण नियमभग करतो नहोतो सीताने उद्यानमां मूळी
रावण गयो पण र्या राम-लक्ष्मणना समाचार न मळे त्या सुधी अब-पाणी
न लेवानी सीतानी प्रतिशा हती रावणनी नगरीमा अनेक भोग
शामनी छता सीता तो निर्भय रद्दा हवा राम-लक्ष्मणने पाताळलङ्घना
मानरीना देमज दीजा बानरोनो साप मळ्यो हतो, रामे तेओने पाताळ-
लङ्घनु राम्य आन्यु महा पुर्योनां हापमा श्रग लोकनु राज्य होय छे
अगाड राजाओनी सेना शोमा माटे हेती अने सुबद्ध भेज राज्यबळ
गगानु जावे दैत्यबळ ए राज्यबळ गगाय छे
बानरोनी पदद—

बनेक बानरे रामनी मदते आन्या सीता शोधी काढवानु सुझीव थगे
एक नाये लीयु, अने हनुमानने आ शोधनु काम सौंप्यु हनुमान् अपार
बद्धिया हता जन्म्या के तरत गिमाननी शुष्ठरी लेवा आकाशमा ऊऱ्या
इवा, अने त्यापी एक शिला पर पढतां शिलाना टुकडा यथा हठा, पा
हनुमानजीने काई असर यह नहोती रामे पोतानी मुद्रिका हनुमानने जारी
अने सीताजी पारेथी मुगट लानवा पण कहु हनुमानजी ऊऱ्या सीता शोध
माटे रस्तामा पोतानी मालानु गाम आन्यु पोतानु पराक्रम मोशाळ-
पभने पण बताव्यु, अने पोतानी जोळख आपी ते सीने रामनी मदते
जवा चमाव्यु





